गाछपर सँ खसला

गाछपर सँ खसला

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

GACHHPAR SAN KHASLA

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-01-8
दाम: 251/- (भा.रु.)
सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल)
चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2016)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

कथा-सत्तैर

हाथक जिनगी

सोहनपुर एकटा गाम अछि। आने गाम जकाँ रंग-रंगक जातिक वस्ती छी। ओना गामे आकि पंचाइतेक ई नाप नहियेँ अछि जे केते जातिक बास भेने गामे आकि पंचाइते हएत। एको जातिक बास भेने गामो बनैए आ पंचाइतो तँ बनिते अछि, एकर माने ईहो नइ भेल जे एके जातिक वस्ती भेने गामे आकि पंचाइते हएत, एकसँ बेसियो आ बहुत बेसियो जातिक वस्ती गामो आ पंचाइतो बनिते अछि। खाएर जे बनैए..; मुदा जहिना पोखैरक पानिसँ लऽ कऽ महार तक सीढ़ीनुमा घाट रहैए तहिना जातिक सेहो सीढ़ीनुमा गाम बनले अछि। ओना एक घाट एक बाट रहितो एते तँ अन्तर बनले अछि जे ऊपरसँ निच्चाँ हेट होइमे जे सुगमता अछि ओ निच्चासँ ऊपर होइमे नहियेँ अछि। बीचक परिस्थितियो तँ एहेन ऐछे जइमे निच्चाँक पानिकेँ ऊपर अबैमे जेते शक्तिक खपान अछि तेते ऊपरका पानिकेँ निच्चाँ उतारैमे नहियेँ पड़ैए। तेकर कारणो अछि जे ऊपरका माटिकेँ गेन जकाँ गोला बना गुड़केनौं पानिमे चलि जाइए आ हाथसँ उठा फेकनौं चलि जाइए मुदा से निच्चाँक पानि तँ नहियेँ भऽ सकैए। ओकरा-ले दढ़ बरतनक संग बरतन उठौनिहारोक जरूरत पड़िते अछि।

अनेको जातिक गामक बीच आने गाम जकाँ जातिक पानि चलैक रस्ता सेहो बनले अछि। ओना पानि असगरो चलैए आ अन्नक संग सेहो चलैए। ऐ हिसाबे सोहनपुरमे तीनटा मोटगर बान्हनुमा चौड़गर रस्ता ऐछे जइमे आने गाम जकाँ केतेको एकपेरिया केतेको खुरपेरिया सेहो बनले

अछि।

महार परक पानि जहिना अपने झहैर-झहैर निच्चाँ मुहेँ तेजो गतिये आ मधिमो गतिये चलिये जाइए मुदा पोखैरक पानि महारपर केना औत? तहिना किछु जातिक अन्नो आ पानियोँ सौंसे गाम टहलान मारैत मुदा जेना-जेना घरक सीढ़ी निच्चाँ मुहेँ जाइत तेना-तेना रस्तामे रोक-राक सेहो गाड़ल अछिए। अही रोक लागल जातिक बीच शुभक दास नामक बेकती आइसँ बीस बर्ख पूर्ब छला जिनकर बेटा अशर्फी दास आइ सोहनपुर गाममे नीक किसान बनि अपन परिवारक भरण-पोषण कऽ रहला अछि।

शुभक दास अपन बाप-दादाक घराड़ी नइ रहने सासुरे माने सोहनपुरेमे घर जमाए बनि रहि गेला। समाजक एक परिवारक जमाए भेने समाजे जमाए जकाँ मानए लगलैन।

ओना बेवहारिक जिनगीक तँ नहि मुदा वैचारिक सम्बन्ध स्थापित शुभक दासक भइये गेलैन। एहेन शुभके दासटा सोहनपुरमे छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सभ जातिक बीच अछि। तेकर अनेको कारण अछि जे जरूरतसँ लऽ कऽ गामक मुहोँ-कान अछि। गामक मुँह-कानक माने भेल समाजक चालि-ढालि। से तँ सोहनेपुरक लोकटा नइ बुझै छैथ दस-कोसीक चौबगली गामक लोक बुझबो करै छैथ, आ मानबो करिते छैथ। एक गामसँ दोसर गाम जा बसब कोनो आइये नइ सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। एकर माने ईहो नहि जे सोहनपुरक लोक आन गाम जा नइ बसल छैथ। कियो नाना-नानीक दोखतरीपर, दोखतरीक माने भेल पुत्र विहीन माता-पिताक सम्पैतपर पुत्री-भात्रीक बसब। मुदा तेतबे नइ अछि, केतौ वैधव्य रूपमे, तँ केतौ समाजक कुबेवहार भेने, तँ केतौ किछु केतौ किछु, अनेको कारण अछि।

शुभक दास अपन पैत्रिक गाम छोड़ि जखन सोहनपुर आबि बसला तखन बहुतो बेवहार छुटबो केलैन आ बहुतो लगबो केलैन। जैठाम

अपना गाममे 'तू-ता' बेसी बजै छला से बदैल 'हौ-यौ'पर आबि गेलैन। ओना शुभक दासक सासुर एके दियादीक परिवार तँए पाँचे घर गाममे जइसँ अल्प-संख्यक जातिक कोटिमे छेलैन्हे। तैसंग अन-पानिक बान्ह तेना बन्हने जे सकपंच भेल परिवार रहैन।

ओना गाम-गामक अपन-अपन मुँह-कान आ नाँगैर होइ छै तँए ने कोनो गामकेँ नीक कहल जाइत आ ने अधला, नीको सभ अछि आ अधलो सभ अछि। गामेक बात छी, जहिना पोखैर आकि समुद्रमे इचना-सँ-रोहु आ डोका-सँ-काँकौर धरिक बास अछि तहिना ने गामो-समाज छी। सभ गाममे अपन-अपन पंचैतियाह तँ छैथे जे अपन-अपन पनचैती करै छैथ। मुदा गामक बिच्चेमे जातिक जे बान्ह अछि ओइसँ गामो नीक-अधला बनि गेल अछि। एक जातिक नीक गाम, दोसर जातिक अधला गाम भऽ जाइए। नैहर बसि शुभक दासक पत्नी- रीतिया, अपन पिताकेँ कहली»

"बाबू, जहिना सभकेँ अपन बाप-दादाक पगड़ी सम्हारि कऽ राखए पड़ै छै तहिना ने हमरो सासुरक परिवार अछि। भलेँ गरीब अछि, अपन घरो-घराड़ी नइ छै, ओ तँ सम्पैत भेल, मुदा कुल-खनदानक तँ अपन-अपन मान-मरजादा होइ छै किने।"

बेटीक बात सुनि पिता बजला»

"बेटी, दुनियाँमे सबकेँ अपन इज्जत-आवरू आ अपन जिनगी अपने हाथमे रहै छै, तँए बीचमे कियो किए केकरो बाधा बनत।"

ओना शुभक दासक मन अखनो तक झुझुआइते छेलैन जे दुनियाँमे केतौ कमा कऽ खाइ आकि भीख मांगि, मुदा सासुर छोड़ि कऽ। मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी, केकरा नइ प्रिय अछि, मुदा ओ प्रिय बनि चलत केना, यएह तँ ई दुनियाँक रंगमंच छी...। सासुरेक जिनगीक संग सुभक दासक जिनगी चलए लगलैन। जन्म–जात वैष्णव परिवार तँए

अपने हाथे अपनो बेटा-बेटीकेँ तुलसी-माला पहिरा वैष्णव परिवारक गढ़ैनसँ परिवार गढ़लैन। जेठ बेटा दसरथ दास, जखन बारह बर्खक भेल तखन गौंआँ सभ संगे पंजाब गेल। पंजाबमे जइ किसानक धन-कटिया सभ करैत ओही किसान लग दसरथोकेँ लऽ गेलखिन। सत्तैर-बहत्तैर बर्खक ओ किसान। दसरथ दासकेँ देखिते पुछलखिन»

"बौआ, सब-दिना काज करबह?"

ई बात दसरथ दासकेँ बुझले जे तीन मासक पछाइत सभ गाम चलि जेता, मुदा जखन पंजाब आबि गेलौं आ काज भेट गेल तखन काजक लूरिये किए ने लऽ कऽ आपस होइ...।

दसरथ दास बाजल»

"हँ रहब।"

किसान»

"दरमाहा केते लेबहक?"

दसरथ दास»

"अपना मने एको पाइ ने, अहाँ जे जानब से देब।"

जिनगीक अनुभवी किसान, सात-दशकक धाँगल जिनगी। मनुक्खक कसौटीपर कसल मनुक्ख दसरथ दास बुझि पड़लैन। एका-एक जेना ओइ किसानकेँ अपन जिनगीक लम्बाइ-चौड़ाइ आँखिक सोझमे झलकलैन। झलैकते पुछलखिन»

"बेटा, केते दिन रहबह?"

किसानक चेहरा देखि बाल-बोध दसरथ दासक मनमे भेल- दू-चारि बरख जीबैबला बुढ़ छैथे तँए किए ने तेहेन बात कहि दिऐन जे मन खुशीसँ हल्लुक भऽ जेतैन...।

बाजल»

"जिनगी निमाहि देब।"

एक तँ चारिम अवस्थाक बहैत जिनगीक धार, तइमे दसरथ दासक बात सुनि, ओ किसान बीच धारमे भँसिया गेला। भँसियाइत दसरथ दासकेँ कहलखिन»

"जहिना बेटाक काज बापकेँ निमाहब छी तहिना ने बापोक काज बेटाकेँ निमाहब छी।"

जइ ढंगसँ बुड़हा किसान बजला ओ दसरथ दास नीक जकाँ नइ बुझि पएल। बाजल»

"दादा, नइ बुझि पेलौं।"

जहिना छोट बच्चाकेँ कोनो बोल सीखबैमे परिवार-जनकेँ आनन्द उठैत तहिना ओइ किसानक मनमे उठलैन। बजला»

"अखने कहि दइ छिअ। मरै बेरक भरोस नइ, जहिना तूँ जिनगी निमाहैले तैयार छह तहिना तोरो जिनगी निमाहि देबह।"

आठ बर्खक नोकरीक जिनगीमे ओ किसान दसरथ दासकेँ अपने सन किसान गढ़ि लेलैन। अपना जीबते सोहनपुर आबि, पाँच बीघाबला किसान परिवार दसरथ दासकेँ बना, गाम पहुँचबो ने केलाह, रस्तेमे गाड़ीएमे मृत्यु भऽ गेलैन।



शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016

गाछपर सँ खसला

ओछाइनेपर रही, माने नीनसँ सुतल रही। ओना किरिण नइ फुटल रहै मुदा गामक लोक जगि गेल रहै, पोसर चरौनिहार महींसवार बाधसँ घुमि गेल रहए, गाछीक अखड़ाहापर कुश्ती समाप्त भऽ गेल रहै, मुदा चलती बेरक सवारी कसा-कसी होइते रहइ। पत्नियोँ ऑगन-घर बहारि चुल्हि नीपैक सुर-सार करिते रहैथ कि पड़ोसिनी आबि कहलकैन»

"मनोज बाबा गाछपर सँ खैस पड़ला!"

कहि पुछाड़ि-भाड़क बेन जकाँ आगू बिल्हए बढ़ि गेली।

'गाछपर सँ खसब' सुनि जे पत्नी अवाक भेली से पड़ोसिनी परोछ भऽ गेलैन मुदा बकार नइ फुटलैन जे कनी आरो सेरिया कऽ बुझितैथ। घर-निप्पा चुल्हि लग रखि पत्नी सोझे लगमे आबि बजली»

"मनोज बाबा गाछपर सँ खैस पड़ला!"

ओना पहिनहि जगा देने छेली। जगला पछाइत कहलैन। मनोज बाबाकेँ गाछपर सँ खसब सुनि मनमे उड़ी-बीड़ी उठि गेल। मुदा तखन तँ पत्नियेँ सोझमे रहैथ, आन रहितैथ तँ आनो मने बाजल जा सकैए मुदा पत्नी लग से केना हएत। पति जकाँ ने बाजए पड़त। की करितौं सहए केलौं। तमसा कऽ तँ नइ मुदा गरमा कऽ बजलौं»

"कुकुर कटने छेलैन जे भोरे-भोर गाछपर चढ़ि गेला।"

ओना कहब जे अठबजिया ओछाइन छोड़निहारकेँ अहिना

भकइजोते होइत रहै छै से बात नइ, छअ बजेसँ पहिनेक बात छी। उठै बेर हमरो भऽ गेल रहए मुदा उठल नइ रही। मनक खौंझक कारक दोसरो भेल। दोसर भेल जे जखन गाछेपर सँ खसला तखन केते जखम भेल हेतैन तेकर कोन ठेकान। तइमे तेलेक मालिशसँ नीक भऽ जेता आकि डॉक्टर ऐठाम जए पड़तैन आकि अक्सीजन-घर पहुँचबए पड़तैन, तेकर कोन ठीक अछि। तइले तँ तैयार भऽ कऽ ने निकलए पड़त, से तँ अखन ओछाइने छोड़लौं अछि। अखन नित्य-कर्मक संग पाइयो-कौड़ीक बेंत-बाँत ने करए पड़त। तहूमे जखन डॉक्टरे-इलाजक भाँजमे पड़ब तखन केते दिन लागत आ की सभ करए पड़त तेकरो की थाह अछि। अथाहक भरोसे केते...।

मुदा फेर भेल जे सोझे मने-मन नक्शे-खतियान बनबैत रहब तहूसँ तँ नहियेँ हएत। कोसी-नहैर जकाँ मने-मन नक्शा बना लेब आ खुनैकाल ई ठेकाने ने रहत जे पानिक बहान ऊपर-सँ-निच्चाँ दिस दौड़ैए, तैठाम जँ मुहेँपर निच्चाँ उतारि देबै आ आगूमे ऊँचका खेत रहतै तखन ओइ खेतकेँ पटैक केते आशा कएल जाएत, ई तँ इंजीनियरक काज भेल, सबहक तँ छी नहि। तहूमे अपन नक्शा-खतियान तँ अखन यहए ने हएत जे मुहसँ पत्नीकेँ घरक भार सुमझबैत, अपने मुँह-कानमे पानि लऽ ली आ जेते जल्दी बाबा लग पहुँच सकब ओते मुस्तैदी करी। जानक कोनो ठेकान अछि जे परान छुटि जाएत आकि...।

चाह पीब विदा भेलौं। थोड़बे हटि कऽ टोलेमे दछिनवारी कात घर छैन। मनोज बाबा दरबज्जेपर भेटला। ओना गामक लोकक देखब पतरा गेल रहै मुदा गोटि-पँगरा आबा-जाही रहबे करइ।

गामक बातावरणमे पसैर गेल रहै जे फुलेक गाछपर सँ खसला, फुलडाली नेनहि ठाढ़े खसला।

पुछलयैन» “बाबा, किछु विशेष समाचार?”

अपने तँ लाभर-जीभर बजलौं मुदा सियारवी बाबा नीक जकाँ बुझि गेला। जएह बात गामक वातावरणमे पसरल तही टोनमे मनोज बाबा बजला» "आने दिन जकाँ अपन नियमसँ फूलक बेर फूल तोड़ए गेलौं। कनैल फुलक फड़ी क मास छीहे सएह ठिकिया कऽ चढ़लौं, थोड़बे ऊपर गेलौं कि पएर पीछैड़ गेल, हाथमे फुलडाली लटकौनहि निच्चाँ-मुहेँ ससरैत ठाढ़े खसलौं।"

गपक आभाससँ बुझि पड़ल जे बाबा अपन बेथाकेँ छिपा कऽ बाजि रहला अछि जँ से नइ अछि तँ बोलीमे किए अवरोध भऽ रहल छैन।

मुदा अपनो तँ हुनके बेथा मेटबैले ने जिज्ञासा करए आएल छी, तखन जँ जोतले-चौकियाएल खेत भेट गेल तँ बीये छिटैमे किए देरी करब।

कहलयैन» "फुलडाली मजगूत छल किने?"

ओना बाबा बोली परेख लेलैन, मुदा बाउक भाउ जेना दुनू अछि-पितोकेँ आ पुत्रकेँ सेहो 'बाउ' कहल जाइ छै, तहिना मुस्की दैत बजला»

"एह! फुलडाली तँ फुलडालीए अछि, ओना छी पितरिया मुदा रंग-रूपसँ सोने जकाँ झलकैए।"

घन्टा भरि पहिलुका चोटपर मनोज बाबा केतबो झाँपन दैथ तैयो ओछ धोती-साड़ी जकाँ एक-भाग उघारे भऽ जाइन। अपनो मन गवाही दिअए- भाय! कियो कनबैत-कनबैत हँसबैए, कियो हँसबैत-हँसबैत कनबैए, मुदा जीवन-धार तँ से नइ छी, ई तँ हँसैत-खेलैत बहैत धारा छी। तैठाम मनोज बाबा अपने जे नुका रहला अछि तखन कनी किए ने एकटा ओढ़ना आरो ओढ़ा दिऐन। सहए करैत पुछलयैन»

"बाबा, साँप जकाँ जे गाछपर सँ ससैर कऽ निच्चाँमे उतैर ठाढ़े

रहलिऐ, एकर तँ कोनो मानैयेँ ने भेल?”

पारखी मनोज बाबा धाँइ-दे बात परेख लेलैन। बजला»

“बेसी-सँ-बेसी तूँ यएह ने कहबह जे गाछपर सँ साँपे ससैर कऽ निच्चाँ अबैए आकि गनगुआरिये?”

बिच्चेमे बजा गेल»

“हँ, एकटा टाँगक झोंझबला आ दोसर बिनु टाँगबला।”

बातकेँ सम्हारि बाबा बजला»

“थोड़बे ऊपर चढ़ल रही, जेते ऊपरसँ धिया-पुतामे कुदनाइ सीखने रही तँए ससरलौं नइ पीछड़ए लगलौं आकि कुदि गेलौं।”

‘कुदब’ सुनि चपाड़ा भरैत कहलयैन»

“अपने कहुना भेलिऐ ते पुरान हाड़-काठक ने भेलिऐ, मुदा हड्डीक जोड़क जे पएरमे छिटकिल्ली अछि ओ ने ते ससरल।”

एकेबेर नीपैत-पोतैत बाबा बजला»

“यएह बुझह जे जहिना पहिने फ्रेश रही तहिना अखनो छी।”

कहलयैन»

“बाबा, जखन पूजा करै छी, फूलक जरूरत होइए तखन एहेन-एहेन जे बड़का फूलक गाछ लगौने छी, जैपर चढ़ि कऽ तोड़ए पड़ैए तइसँ नीक ने जे फुलवाड़ी लगा छोट-छोट गाछक फूलसँ बेगरता सम्हारि लेब।”

ई बात जेना मनोज बाबाकेँ मनमे गड़ि गेलैन तहिना तिलमिलाइत बजला»

“बौआ, तोरासँ लाथ की करब। साठि बर्खक उमेर भऽ गेल, चालीस बरख सँ पूजा करै छी, जखन जुआनी छल आ घरसँ खेत धरि कर्मभूमि बनौने छेलौं, सभ किछु सोझेमे नचै छल, आब ओ हूबा अछि

जे ओते मनसूबा करब, मुदा... ।”

हरमुनियाँक अन्तिम पटरी जकाँ आवाज बदलैत रहैन मुदा केकरा कहथीन आ कहने हेतैन की तँए ऐठाम आबि बाबाक बोली पलटैत रहैन।

मनमे भेल जे ई तँ केकर दिनक परि भऽ गेल, जे गेलौं करहर उखाड़ए आ आगूमे चलि आएल केशोर! माने भेल जे करहरो आ केशौरो पनिगर माटिमे होइए, मुदा होइए दुनू दू परिस्थितिमे। जखन पानि रहै छै तखन करहर होइए आ जखन पानि सुखि माटि सकताइए तखन केशौर होइए जे हाथसँ नइ खुरपीसँ उखाड़ल जाइए, तइले खुरपीक प्रयोजन पड़ै छइ। ऐठाम सएह भऽ गेल, मनसूबा बना आएल छेलौं जे बाबाक कुशल-छेमक पछाइत, चाहे साइकिलेसँ आकि टेम्पूएसँ डॉक्टर ऐठाम जाएब, दादीकेँ सेहो संग कऽ लेब, बर-बेमारीमे पत्नियेँ ने अर्द्धांगिनी बनि आधा दुख बँटतैन। मुदा से तँ बाबा गाछ परहक खसब बिसैर अपन जिनगीक खसब दिस बढ़ि रहला अछि..!

पुछलयैन» “की कर्मभूमि कहलिऐ बाबा?”

एक तँ ओहिना बैसारी मनोज बाबा, भरि दिन विचारेक परसादी बँटिते रहै छैथ, तैपर कर्मभूमि सन शब्द भेट गेलैन, भेटते जेना मनसूबा जगलैन। बजला»

“बौआ, यएह देह छी जे हट्ठामे बैशाख-जेठ मास सन दिनमे हर-बरदक संग बारह बजे तक कोदरबाहि करै छेलौं मुदा थाकैनसँ मिसियो भरि मुँहो मलिन नइ होइ छल, जइक चलैत घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेतो-पथार धरि हँसैत रहै छल मुदा आइ..!”

‘आइ’क पछाइत सभ कानि रहल छी, से मुहेँमे रहि गेलैन।

बाबाक बन्न होइत बकार देखि अपनो बकार बन्न हुअ लगल। मुदा संजोग नीक रहल। दादी सेहो लगमे आबि गेली। जहिना बाल-बोधकेँ

अगुआ पुतोहु वा परपुतोहु अपन जेठजन कैँ अपन समाद पठबै छैथ तहिना समदिया भेट गेल। मुदा दादी-आगू बाबाकैँ अपन बेथा व्यक्त कराएब मन नइ मानलक। ओना लग्गासँ मरखाहो मालकैँ घास खुऔल जाइए से तँ मनमे रहबे करए। बजलौं»

“बाबा, अखनो अहाँक जे हड़गर-कठगर देह अछि ओ जुआनी-जवानीमे केहेन रहल हएत।”

पत्नीकैँ आगूमे देखि आकि की से तँ बाबा जानैथ मुदा बुझि पड़ल जे बाँहिक कुरता समेट-समेट गट्टासँ बाँहि दिस लऽ जा रहला अछि। ओना नजैर पत्नीपर नइ हमरेपर रहैन, बजला»

“बौआ, कर्मभूमियेँ धर्मभूमियोँ छी जे सातो दुनियाँमे अछि। चाहे ओ भावभूमिक कर्मभूमि हुअए आकि जन्म भेल जगहकैँ जन्मभूमि-मातृभमि कहि कर्मभूमि बुझियौ.., अहिना सभ, माने सातो दुनियाँमे अछि, आ सभ दुनियाँक अपन कर्मभूमियोँ छै आ मर्मभूमियोँ छइ।”

अपना झोंकमे बाबा बजैत रहला, बजैत रहला जे सून-अनसून दुनू हुअ लगल। तँए नीक जकाँ बाबाक बात नइ बुझि पाबी। मुदा गुरु ने एक भेला, चेलाक कोन ठेकान अछि। एको भऽ सकैए, एकसँ बेसी दोसरो-तेसरो भऽ सकैए आ एकोमे उत्थरसँ गहींरगर भऽ सकैए। बजलौं»

“बाबा, एक दिनक बेरा पार करैमे जे एना लाख कोसक रस्ता देखए लगबै तहूसँ तँ काज नहियेँ चलत। जरूरत तँ एतबे ने अछि जे काल्हि जे कौल्हुका सूर्जक उदए हएत ओ सीमा भेल आ अस्त धरिक कर्म आ कर्मक सीमा- जिनगी भेल। तेतबे जँ ठेकानसँ ठेकाइन ठेकनबैत चली सएह ने?”

ओना दादी अखैन तक ठाढ़े छेली, मुदा कड़चीक साँगह परक लत्ती जहिना हवामे डोलैत रहैए तहिना दादीक देह अखनो तक डोलिये रहल छेलैन। डोलबो केना ने करितैन, बेटा-पुतोहुक कोनो अशे ने छैन,

लऽ दऽ कऽ साठि बर्खक खाली पतिक छैन, सेहो भोरे-भोर तेहेन अन्हरगरेमे गाछपर सँ खसला जे अन्हरगरे केना चलि जइतैथ, तेकर कोनो ठीक छेलैन। जँ बाबाक पेटे-पाँजर टुटि गेल रहितैन तँ दादीक गति की होइतैन...। मनमे भेल जे अछैते बेटा-पुतोहु कष्टमे किए छैथ? दादीकेँ पुछलयैन»

"दादी, अछैते बेटा-पुतोहु जे एना कष्टमे छी से नीक लगैए?"

हमर बात सुनिते दादी तँ सहैम गेली मुदा मनोज बाबाक मनक फुनफुनी ओहिना जगलैन जहिना रणभूमिमे रणाकेँ जगैए। बजला»

"बौआ, जइ पुरुखकेँ आइन-अपगराइन नइ अछि, ओहो कोनो पुरुखे भेल।"

बाबाक मजगूत विचार सुनि मनमे भेल जे भरिसक मनमे कोनो दमगर व्रत छैन, जे पुरबै पाछू अपन सभ किछु बलिदान करैले तैयार छैथ। मुदा से तँ सुनला पछाइते ने बुझब। ओना मनोज बाबाक परिवारक सभ भाँजो तँ नइ भाँजल अछि मुदा दुनू बापूतक बीचक बात नइ बुझल अछि सेहो तँ नहियेँ अछि। कहब जे जखन बुझले अछि तखन सएह ने किए कहलयैन। समाजक बीचमे ने बसल छी, समाजक बीच बहुत एहेन बातो आ काजो अछि जे सीमाबद्ध अछि। जे सीमाबद्ध अछि ओकर अतिक्रमणो तँ अतक्रमणे भेल, तँए। बजलौं»

"बाबा, अहाँ ते तेहेन उमकीमे उमैक कऽ बाजि देलिऐ जे बुझबे ने केलौं?"

बाबाकेँ जेना सह भेटलैन, मुदा दादीकेँ कठाइन लगलैन से ठोरक बिजकीसँ बुझि पड़ल, मुदा बातो-विचारक तँ अपन क्रम होइ छै, ई तँ नहि जे आमक गाछे रोपैकाल चूड़ा कीन कऽ लऽ आनी जे आम सेने खाएब। एक तँ परिवारक विवाद छी तहूमे बाप-बेटाक बीचक जे करवनो नाहपर गाड़ी जकाँ आ करवनो गाड़ीपर नाह जकाँ चलि अपन जिनगीक

बाट-घाट पार होइए। तेहेन विवादकेँ तँ, जहिना गोहि अपन मुँह खोलैत-खोलैत शिकार लग पहुँच पकड़ैए, तहिना करब ने जरूरी अछि।

मनोज बाबा बजला»

“तोहीं कहह जे बेटाक ई उचित भेल जे कोन-कहाँ देशमे जा कऽ बिआह कऽ लेलक।”

ओना किछु लोकमे एहेन बजैक आदत होइए जे अपन विचारक बातकेँ टुकड़ी-पुरजी बना, एक-एकटा कहैत बीचमे पुछैत रहत जे की हेबा चाही। मुदा नीक अधला दुनू पक्ष अछि, से सभ बात बुझला पछाइते ने कियो उचित निर्णायक मोड़पर आबि सकैए। तैबीच जे टुकड़ी-टुकड़ीक निर्णय कऽ नेने रहब तखन तँ अपने निर्णये ओझरा जाएत तँए बजलौं»

“बाबा, अपने कनीकाल मुँह बन्न रखियौ, दादियो कोनो ऐसँ फराक नहियेँ छैथ तँए हिनको बाजए दियौन।”

जेना हमर बात बाबाकेँ काँट जकाँ मनमे गड़लैन तहिना बिसबिसाइत दुनू ठोर बिदकलैन। ओना मुँह बन्न केने रहैथ। भऽ सकैए जे मनमे ईहो आबि गेल होइन जे तीन गोरेमे एक बजनिहार दू सुननिहार ने होइए, तैठाम बिनु सुननिहारक बाजबे की हएत। ओना, दादीक मनमे अपन बेटा-पुतोहुक सिनेह अखनो मनक धारे-धार चलिये आबि रहल छेलैन, तैठाम समाजक रूपमे हमरा देखि आरो गतिमान भऽ गेलैन जे आक्रोशित होइत बजली»

“सोल्हैनी दोख हिनके छैन!”

दादीक बात सुनिते बाबाक नरसिंह तेज भेलैन, जे मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल। मनमे भेल जे कहीं दादीपर हाथ ने उठि जाइन। मुदा तइसँ पहिने बीचक जे समय अछि जँ ओकरा अनुकूल बना लेब, तखन रूप

बदैल सकैए।

दादीपर सँ नजैर हटा बाबाक आँखिपर गाड़लौं। जहिना गहुमन साँप आकि बाध-सिंह आँखि-पर-आँखि पड़िते ठकुआ जाइए तहिना भेल। मनोज बाबा ठकुएला। बजलौं»

“दादी, जड़िसँ कहियौ।”

‘जड़ि’ सुनिते मनोज बाबाक मन पिनपिनेलैन। मुदा तैपर दादी मिसियो भरि धियान नइ दऽ बाजए लगली»

“बौआ, तोरो बुझल हेतह आ गामोक लोककेँ बुझल छैन जे एकटा बेटा अछि। कौलेजसँ पढ़ि नोकरी करए कलकत्ता गेल। ओइठाम बिआह कऽ लेलक।”

बिच्चेमे टोनि देलिऐन»

“हँ, ओ तँ अहाँ दुनू बेकतीक बड़का भार उतारि देलक किने।”

बजैले दादी लुसफुसाइते रहैथ कि बीचेमे मनोज बाबा बजला»

“गामसँ जाइकाल बेटाकेँ एना बुझा कऽ कहलिऐ जे बौआ, कामरूप कहाँ-दन ओम्हरे छै, जैठाम पुरुखकेँ जहुरी मौगी सभ गदहा-घोड़ा बना बाधमे चरैले ठोकि दइ छै, तइ सभपर नजैर रखिहह।”

बाबा तेना टोनमे बजला जे हँसी लगि गेल, हँसए लगलौं जइमे बाबाक बातो उधिया गेलैन। बिच्चेमे दादी फेर बाजए लगली»

“बौआ, जहिना अपना सबहक गाम-घरक लोक अछि तहिना कनियाँक छीछा-बीछा सेहो छैन, तखन बीचमे कोन काँट अछि जे बुड़हाक आँखिमे गड़ि गेलैन जे कहलखिन- जाबे जीब ताबे तोहर ने कमाइ खेबौ आ ने मुँह देखबौ।”

एकाएक मनक विचारमे उलट-फेर हुअ लगल मुदा जइ परिवारक समस्या छी ओ परिवार केना समस्याकेँ बुझि रहला अछि ओ ने...।

बजलौं»

“बेटा की उत्तर देलकैन?”

बेटाक पक्षमे दादी उत्तेजित होइत बजली»

“बेटो ते कहिये कऽ गेल छैन जे- भेले जाइ छी।”



शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016

केतौ ने रहलौं

काल्हि देवसुनर कक्काक तिरसैठम साल गिरह छिऐन, भोज-भात हएत, नाच-तमाशा हएत, दीर्घायुक असिरवाद समाज सेहो देबे करतैन। ओना देवसुनर कक्काक ऊपरका हरियरी लहलहाइते रहैन मुदा मन तरे-तर पानि-पानि होइत रहैन। मन एतबे घुमि-फिर कहैन»

“केतौ ने रहलौं।”

मुदा एहेन उत्सवी माहौलमे एहेन विचार बजबो केतए करता! भादवक आठ अन्हार जकाँ अट्ठा-बज्जर एके बेर हरहरा कऽ अपना संग परिवारो आ समाजोमे खसबे करत। तँए मुँह बन्न राखबे नीक बुझि रखने रहला। एक तँ सघन गाम तइमे देवसुनर कक्काक दियादी परिवार, गामक आन दियाद-वादसँ झमटगर छैन्हे। तहूमे देवसुनर काका अपने ओहन आँड़िपर ठाढ़ छैथ जइसँ ऊपरक जे छथिन ओ एते नमहर डिग्रीधारी कियो नइ, आ जे छैथ ओ उमेरक निच्चाँ छैथ, जइसँ सर्वोपरि हेबाक सौभाग्य तँ देवसुनर काकाकेँ छैन्हे। दियाद-वाद ऐ खुशीमे छैथ जे दियादी-परिवारमे पहिल पुरुख प्रोफेसर देवसुनर काका छैथ। तँए नवतुरिया सभ साल गिरह धुमधामसँ मनेबाक विचार कैये नेने छथिन।

समाजोमे चपचपी छैन्हे जे भरि दिन चाह-पान आ जलखै-भोजनक संग रंग-रंगक वादनक संग रंग-रंगक कलाकार सबहक कार्यक्रम देखबो करता आ सुनबो करता।

समाजो तँ समाज छी, एकठाम रहितो सबहक अपन-अपन

दिनचर्यो आ विचारो सबहक अपन-अपन। समाजक वृद्धजन जे उम्रसँ तँ साठि बर्ख पार नइ केने छला मुदा चेहराक सुरखी अस्सी बर्खक परिचए दइए रहल छैन। हुनका सबहक मुहसँ यएह असीरवाद निकलैन»

"भाग्यशाली देवसुनर बाबू छैथ जे साठिसँ तीन साल ऊपर तकक जिनगी हँसैत-खेलैत बितौलैन।"

दोसर दिन भोरेसँ जुड़शीतल पाबैन जकाँ 'जय शिव', 'जय शिव', देवसुनर कक्काक घर-अँगनामे पसरए लगलैन। सात दिनक तैयारीक पछाइत समियाना सजल।

समाजमे अखनो देवसुनर कक्काक परिवार सम्पन्न मानल जाइ छैन। ओना बाप-दादाक देल तेतेक सम्पैत छैन जे बेचियो-बेचियो खेता तैयो केतेको पुश्त चलतैन। ओना अपन कमाइ नइ भेने परिवारक स्थिति निच्चे उतरलैन, मुदा टुटलो हथिसार तैयो नअ घर साँगह। पहिने जे सम्पन्न परिवार बुझल जाइत रहलैन ओ भूमिक सम्पदा रूपमे, जे आइक समयमे तँ बहुत बेसी मूल्यवान भऽ गेल अछि।

तीन भाँइक भैयारीमे देवसुनर काका सभसँ जेठो छैथे। तहूमे पिताकेँ मुइला पछाइत छोट दुनू भाँइ, जे सरकारी नोकरीमे बाहर रहै छैथ, ओ दुनू अपन-अपन बाल-बच्चाक संग बाहरे रहै छैथ, सेहो सभ परिवार आएल छैन। देवसुनर काकाकेँ पिते जकाँ अखनो मानै छैन। अखुनका नवतुरिया जकाँ नहि जे नीक-अधलाक विचारे ने करब आ अपनाकेँ, भलेँ केतबो अधला आवरणसँ किए ने सजल होइ, तेकरा नीक आ दोसरकेँ अधला मानि बेवहार करब। से दुनू भाँइमे मिसियो भरि विचार मनमे नइ समाएल छैन। तेकर कारण अछि जे बन्हौटा माल-जालकेँ जहिना समैपर खुआ-पीआ, समयानुकूल बेवहार कएल जाइए तहिना दुनू भाँइकेँ सेहो भेलैन। भेलैन ई जे कौलेज तक माने एम.ए. धरि परिवारक विद्यार्थी जकाँ पढ़ब काज छेलैन। आ ओइ अनुकूल बना कऽ

राखब परिवारक जिम्मा छेलैन, जइमे कहियो कोनो कोताही नइ भेलैन। कौलेज छोड़ला पछाइत नोकरीमे गेला, जे बान्हल दरमाहापर जिनगी ठाढ़ कऽ लेलैन। तैबीच मातो-पिता जीबते रहैन जे स्वेच्छासँ दुनू भाँइकेँ कहि देने रहथिन»

"बौआ! अपन कमाइ जखन करए लगलह तखन अपना कमाइपर अपन पारिवारिक जिनगी ठाढ़ कऽ लैह, जइसँ सभ दिन फुलाइत-फड़ैत रहबह। हमरा खगते की अछि। जेठ बेटा-पुतोहुक संग पोता-पोती रहबे करत तँए तूँ दुनू भाँइ देह झाड़ि कऽ जीबह।"

तहियेसँ माने जहियेसँ नोकरीक जिनगी शुरू केलैन, अपना-अपना भरे दुनू भाँइ चलैत आबि रहल अछि।

भैयारीक जेठ भाइक तिरसैठम साल-गिरह छिऐन, तँए दुनू भाँइ मने-मन खुशी छैथ जे भैयारीमे कियो दादा होथि। दुनू भाँइक पत्नियोँ आ बालो-बच्चा सभ खुशीसँ मगन। बिऔहुआ बर-कनियाँ जकाँ जे सभ विध-बेवहार तँ ओकरे हेतै मुदा भार कोनो ने ऊपरमे रहै छै, तहिना देवसुनर काकाकेँ सेहो छैन्हे। विध-बेवहारक समैपर विधकरी अगुआ कऽ विध करबै छइ। जेना-जेना विधक समय अबै छै तेना-तेना विधकरी विध-विधान करबै छइ। समियानासँ दरबज्जा आ दरबज्जासँ आँगन देवसुनर काका टहैल-टहैल देखैत रहैथ जे केतए कोन जोगारसँ काज चैल रहल अछि। आँगन पहुँचते पत्नीपर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते पत्नीक खिलल चेहरा देखि मन लटि कऽ लटुअए लगलैन। लटुआइक कारण भेलैन जे अपन मन मने-मन अपन बेथा देखि औंढ़ मारए लगलैन। मुदा बजबो केतए करता आ कहबो केकरा करथिन। डर दुनू दिस रहैन। डर ई रहैन जे जँ सत् बात सोझहामे ठाढ़ हएत तँ अनेरे टहटहौआ सूर्यक रौद एकाएक छोट-छीन मेघक (माने वादलक) टुकड़ीसँ विशाल धरतियोसँ विशाल सुर्ज झँपा छाँहसँ छहरा जाइए तहिना हएत। एक दिस घोड़सँ घोराएल मन घोड़छान तोड़ऽ बमैछ रहल छैन तँ दोसर दिस विचार-पर-

विचार माने सही विचारपर छाँहदार विचार, घटिया विचार, घबाह विचार, नव-नव रूपमे ठाढ़ भऽ भऽ मनकेँ दबैत रहैन। देवस्थानमे यात्री जहिना देव दर्शन-ले उताहुल होइत रहैए जे कखन दर्शन हएत तहिना देवसुनर काकाकेँ देखबो-ले आ बजबो-ले अपन पत्नीक संग परिवारो-जन आ समाजो-जन अपन-अपन विचारे उताहुल रहबे करए। मुदा देवसुनर काका अपन तिरसैठम साल गिरहक उत्सव देखि पहाड़ आ पहाड़-कातक गहींर समुद्रक बीच कण्ठ लग अँटकल रहैन जे झाँपल-तोपल मरल जिनगी देखि कुहैर-कुहैर कानि रहल छैन, तँ दोसर ओही झाँपल-तोपल लहासक मधुर फलक गाछ बुझि कियो पूजैले उताहुल तँ कियो कर-कमठौन करै-ले...।

प्रोफेसर देवसुनर काका दर्शन शास्त्रक प्रोफेसरक जिनगी गुदस करैत तिरसैठम बर्खक अन्तिम दिनक उत्सवक बीच अपनाकेँ देखि तँ रहला अछि मुदा लगक पत्नी, माने अर्द्धांगिनियोँ ऐ बातकेँ नइ बुझै छेली। तेकर कारण छल जे देवसुनर काका एको दिन ई चरचा पत्नियोँ लग नइ केने छला। ओना ओइ बातकेँ बुझै जोकर जँ पत्नियोँ रहितथिन तँ अपनो बुधि-विचारे बुझि-विचारि सकै छेली, मुदा तइसँ निम्न रहने नइ बुझि पेब रहल छैथ। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे दुनू परानीक बीच जे रंगीन दुनियाँक रंगीन रूप मनमे बनि गेल छैन ओ अधिक बेसी लहैठ गेल अछि। लहठैक माने भेल- लहठगर, एक दिस समाजक बीच पहिल पुरुख महाविद्यालयक शिक्षक भेला, भलेँ आन शिक्षक महाविद्यालयकेँ घन्टा किए ने बेकतीगत बुझैत, जे निमूधन समाज थोड़े बुझत? ओ थोड़े बुझत जे फल्लाँ फल्लाँ जातिक आ फल्लाँ दियादीक छैथ। ओ तँ मुनल आँखि खुजिते देखबे करत किने जे फल्लाँ महाविद्यालयक शिक्षक छैथ। जिनकर आँखिमे समाजक बास अछि। परिवारक बास भूमि घर-अँगनाक भूमि भेल मुदा समाजक बास तँ समाजेक नजैरिक दिशामे बास करैए। जेहेन समाजक नजैर तेहेन बास, चाहे ओ अवध, जनकपुर मिथिलो भऽ सकैए

आ रावणक लंका आ कबीरक मग्गह सेहो तँ भइये सकैए।

मचकीक आसमे जहिना एक डारिक संग गाछक आनो डारि झुलए-झुमए लगैए तहिना परिवारसँ समाज-जन धरि झुमितए। तइमे पत्नी तँ सभसँ लगक भेली, जिनका सभसँ बेसी आस सोभाविके अछि। जहिना अपन जिनगीक आस भरल नोकरीक अन्तिम दिन ओ रूपमे देवसुनर काका की देखि रहला अछि जे समाजमे सभसँ अगुआ कऽ एम.ए. तक पढ़लौं। अही आशा-ले ने जे समाज देखो-देखी चलैए आ ओकरा कखनो आगूक जुआमे गरदैन लगा घीचलो जाइए आ कखनो पाछूसँ धक्का दैत ठेललो जाइए। से की भेल? आइ हम ओइ सीमापर ठाढ़ छी, जेतए 'प्रोफेसर'क रूपमे विद्यार्थी पढ़बैक नसीब कम भेल!

मुदा लगले मनमे तरैप एलैन- दरमहो तँ जिनगीमे नहियेँ पेलौं, बिनु बोइनिक काजे केहेन होइ छै, तइमे कमी केते अछि, सेहो तँ नहियेँ अछि।

हँ-निहँसमे देवसुनर कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते पत्नी दिस झुकलैन। झुकिते हूबा जगलैन। हूबा जगिते मनमे विचार उठलैन- अपन जिनगीक आजुक दिन की अछि से पत्नीकेँ कहि दिऐन। उठैत जिनगी हुअए आकि ठमकल, आकि खसैत हुअए, अर्द्धांगिनी तँ वएह भेली। ई चूक तँ जरूर भेल अछि जे हुनकोसँ बहुत बात छिपौने छी। आइ जँ हुनका बुझल रहितैन तखन केहेन रूप होइतैन?

..'रूप' मनमे अबिते अपन विद्रूप होइत चेहरा नेने देवसुनर काका पत्नीक समीप पहुँचला। ओना, अँगना-घर लोकक महमहीसँ भरल। तैबीच तिरसैठ बर्खक देवसुनर काका पत्नीसँ किछु कहता आ पत्नीक बात सुनता, ईहो तँ समाजक बीच लोक-लाज अछिए। जहिना बाल-बोध वृद्ध माता-पितासँ धरवाइए तहिना ने बाल-बोधक बीच मातो-पिता अपन सीमावद्ध रूप बिगाड़ैसँ धरवाइ छैथ। मुदा से काकी थोड़े बुझली। पतिकेँ

सोझमे अबिते बजली» “एना रूप लटुआएल किए अछि?”

पत्नीक प्रश्नपर बिनु किछु विचार केने प्रतिवाद करैत देवसुनर काका बजला» “अहाँ लहटगर छी किने?”

‘लहटगर’ सुनि बुधनी काकी आरो लहैठ गेली, जइसँ औरो गप-सप्प करैक मन फुरफुरेलैन।

पत्नीक बेथाएल बात सुनि देवसुनर कक्काक साहस टुटए लगलैन जइसँ आगूमे ठाढ़ होइक शक्तिये क्षीण हुअ लगलैन! मन तिलमिलए लगलैन! तिलमिलाइत नजैर पत्नीक रूपपर सँ निच्चाँ धरतीपर खसलैन। जहिना शिकारीक वाणसँ बेधित पक्षी धरतीपर खसैए तहिना देवसुनर काकाकेँ बुझि पड़लैन। मनमे उपकलैन जे पत्नी मनक बात ने तँ बुझि गेली! जँ से नइ बुझली तँ एहेन वाण किए फेकलैन?

जेना-जेना मन मथन करैन तेना-तेना मनमे अपनाकेँ अपराधी जकाँ बुझि पड़ए लगलैन। मुदा उत्सवी माहौल तेहेन अछि जे पत्नीक मनक विचार मनमे गुम्हैर कऽ रहि जेतैन, धरतीपर ओ केना आबि पौत। किएक तँ तेहेन अवरोधी टाट आगूमे ठाढ़ अछि जे मोरध्वजक पहरासँ कम नइ अछि। लगक हनुमाने किए ने होथि मुदा दरबज्जासँ भीतर प्रवेश करब तँ कठिन अछिए। मुदा ई विचार देवसुनर काकाकेँ अपन दर्शनक उठल विचार छेलैन, नइ कि पत्नीक बाजबसँ।

पत्नीक मनमे एहेन मिसियो भरि विचार किए जगितैन। जे अर्द्धांगिनी बनि बगुर-बोनीसँ लऽ कऽ चनन-बोनी तक संग-संग बाम रूपमे चलैले अपन जिनगी पतिक हाथमे थमा देने छैथ तिनका मनमे एहेन विचार केना उठतैन? विचारोक तँ अपन दुनियाँ छै, बेविचार जँ अपना वाणे ओइ दुनियाँ केँ बेधए चाहत तँ की बेधा सकैए, मुदा बाम-दहीनक बीचक जे सीमा अछि, ओइ सीमापर तँ ठेला-ठेली भइये सकैए।

दर्शन शास्त्रक दिशा देखनिहार प्रोफेसर देवसुनर कक्काक मन मानि

गेलैन, तँए अपन मन पत्नीक संग बँटैत बजला» "आश भरल जिनगी..?"

कहि आगू विचारैत-विचारैत मन एते मलिन भऽ लटुआ गेलैन जे जीवित आन पातसँ अपनाकेँ रूप-विहीन रूप देखए लगला। आगूमे जीवित आ लटुआएलक बीचक दूरी- अन्हार पसैर गेलैन।

मध्यम श्रेष्ठ किसान परिवारक देवसुनर काका आइसँ उनचालीस बर्ख पूर्ब माने जहिया अठारह बर्खक अवस्थामे रहैथ तहिये दर्शन शास्त्रसँ एम.ए. केलैन। गामक पहिल स्नात्तकोत्तर-डिग्री अर्जन केनिहार। जहिना निड़ाएल चैतक बेली फूल जेना-जेना साँझ ढलैए तेना-तेना अपन सुगन्ध पसारैए तहिना देवसुनर कक्काक सुगन्ध सेहो समाजमे पसरलैन। ओना पढ़ल-लिखल लोककेँ नोकरी चाही नइ तँ गामक लोक खिल्ली उड़ेबे करता,

जे फल्लाँ ओहन बौक सुग्गा भऽ गेल जेकरा रामो-राम ने कहल होइ छै! आ जखन रामो-राम ने कहल हेतै तखन आत्माराम केना कहत! नोकरीक कटमटी जहिना आइ अछि तहिना तहियो छल। तँए बेरोजगारी रहबे करइ। रहबो केना ने करैत...। ओना पेट-जरूआ बेरोजगार जकाँ देवसुनर काका नइ छला मुदा नहियोँ छला सेहो केना कहल जाएत। पेट-जरूआ पढ़ल-लिखल तँ नहियेँ छला जे नइ प्रोफेसर तँ हाइये स्कूलक शिक्षक, नइ हाइ स्कूल तँ मिडिले स्कूलक शिक्षक, जँ सेहो नइ तँ ऑफिसक किरानीए, आ जँ सेहो नइ तँ चपरासियो बनैले तँ तैयार होइते अछि, मुदा से देवसुनर काकाकेँ नइ छेलैन। हुनका ऑफिसक किरानी आकि स्कूलक शिक्षक बनब पसिन नइ छेलैन। तँए पाँच बर्ख बिना काम-धामक बैसले रहि गेला।

समय आगू ससरल नव रूपमे किछु कौलेजक जन्म भेल। गामक बगलेक गाममे कौलेज खुजल, देवसुनर काका ओही कौलेजमे प्रोफेसर बनला। कौलेजक मकान बनल, पास-पड़ोसक शिक्षक सभ बहाली भेला। विधिवत कौलेज शुरू भेल, मुदा विद्यार्थीक उपस्थिति भेबे ने

कएल। कागजेक बीच शिक्षको सभ रहि गेला आ कौलेजो रहि गेल। ओना ओ शिक्षक सभ ऐ आशमे अखनो छैथे जे देवसुनर काकासँ उमेरमे कम छैथ।

ओना देवसुनर कक्काक मनमे आशक घटबी चारि बर्ख पहिनहि उपकलैन, मुदा सरकार जे प्रोफेसरक कार्यकालमे तीन बर्ख बढ़ोत्तरी केलक माने साठिसँ तिरसैठ केलक ओ देवसुनर कक्काक मनक आशक घटबीकेँ थामि देलकैन। थमैक कारण भेलैन जे जँ सेवो निवृत्तिक बीच सरकारक हाथ चलि जाएब तैयो तँ खुशहाली जिनगीमे आबिये जाएब। अही आशमे तीन बर्ख आरो देवसुनर कक्काक समय गुजैर गेलैन। हँ, हैया, आब भेल, तब भेल...। अही हो-हामे तीन बरख बीचक समय ससैर गेलैन। मुदा साल भरि पहिनहि, जहिया बासैठम साल समाप्त भेलैन आ तिरसैठम साल शुरू भेलैन।

ओना अखनो जे कानमे ध्वनि अबै छैन ओ आश पुरणे छैन, मुदा मन तँ तिलमिलाइत रहबे कएल छैन। सालक साल बीत गेल। आशक भगन नइ भेल! मुदा आब तँ सहजे साल कटि कऽ मासमे चलि आएल आ मास कटि दिनमे पहुँच जाएत, एक दिन सेवा निवृत्तिक अवस्थामे पहुँच जाएत, हाथक काजक जे आशा छल ओ छीना जाएत, लुल्हा हाथसँ जिनगी चलत? जे काज करैक लूरि अछि, ओ छीना जाए आ जे काज अछि ओकरा करैक लूरिये ने रहए तखन ओहन हाथकेँ की कहल जाए?

अपना परिवारपर सँ माने बाल-बच्चा सहित पत्नीपर सँ नजैर उठि अपन भैयारी-परिवारपर गेलैन। भैयारी-परिवारमे पहुँचते देवसुनर काका देखलैन जे पैतृक सम्पैत तँ सबहक छी, जरूरत भेलापर बेचबो केना करब? आ जँ बेचौ चाहब तँ समाजक लोक सम्मिलात कीनत किए। तखन तँ बँटैक स्थिति बनत!

बँटैक स्थिति मनमे अबिते देवसुनर कक्काक मन चिहैक गेलैन। चिहैक ई गेलैन जे तीन भाँइक भैयारीमे हमहींटा ने एहेन छी जे अपना कमाइक भरे ठाढ़ नइ छी। छोट दुनू भाँइ आइ तक पितातुल्य बुझि रहल अछि, तैठाम जँ बटीदार बनि फटीदार बनि जाइ, तखन हम दर्शन की पढ़लौं आ दर्शन की कऽ रहल छी.!

अनायास देवसुनर कक्काक मनमे वेचैनी आबए लगलैन। जे गीत कर्णप्रिय छेलैन, माने उत्सवी माहौलक वातावरणमे, से जेना कानकेँ काटए लगलैन। मन बेकाबू हुअ लगलैन। बेकाबू भेल पत्नी लग पहुँच बजला» "केतौ ने रहलौं!"

पतिक बात सुनि बुधनी काकी मने-मन विचारए लगली जे पति एना किए बजला?

मुदा जइ समुद्रक घाटपर बैस देवसुनर काका समुद्री-झिलहोरि देखि रहला अछि, ओ थोड़े पत्नी बुझली। ओ तँ उत्सवी माहौलमे बौराइत पतियोक विचारकेँ बौराएबे बुझलैन जे खुशीसँ बड़-बड़ा रहल छैथ। प्रेम बेसी उमैड़ गेल छैन। पतिकेँ अनुकूल बना राखब जहिना पत्नीक पहिल कर्तव्य छी तहिना तँ पतियोक छीहे। तइमे बुधनी तँ बुधनीए थिकीह...।

बजली» "दुनियाँमे केकर ठेकान छै जे ठेकानसँ रहब।"

पत्नीक साधल वाण जेना दार्शनिक देवसुनर कक्काक मनकेँ बेध देलकैन। बजला किछु ने मुदा पत्नीक ओ रूप टटोलए लगला जे जीवन संगिनीक होइ छइ।



शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016

अपने केलहा

साइठ सालक जियालाल बाबाकेँ ओछाइनपर पड़ल अपन सिकुड़ैत जिनगीक देहक-गाछ देखि मनमे विचार जगलैन। तीन बट्टीपर पड़ल जिनगीकेँ देखि ने अक् चलैन आ ने बक्। केकरा कहबै, सभ तँ अपने पाछू बेहाल अछि, केकरो नीक हाल देखिऐ तखन ने ओकरे हाले अपनो हाल सिरैज लेब। जूरशीतल सन पाबैनक दिन छी, जखन जुआनी-जवानी छल तखन चारि बजे भोरेसँ गाछ-बिरीछक जड़िकेँ नीरसँ नीड़बै-जुड़बै आ सितबै छेलौं, जइसँ बागे-बगिया आकि चासे-बास सिरजै छल। सबहक पाबैनक पाबन चुकबै छेलौं आ आइ अपने भोरूए पहरसँ मेघमे तरेगन गनै छी। जिनगियोक तँ तीन अवस्था होइते अछि, एक- चढ़ैत-मढ़ैत, दोसर- ठहरल-ठमकल आ तेसर- टुटैत-झड़ैत-खसैत...।

जहिना अमीन जमीनक नाप-जोख गुनियाँ-परकालसँ करै छैथ तहिना जियालाल बाबा अपन जिनगीक नाप-जोख करए लगला। जहिना अमीन पहिने नाप-जोख करैबला खेतकेँ ठेकनबैए तहिना ठेकनबए लगला। जखन मरद साठेपर पाठे बनैए तखन हम किए चालीसेपर घपचालीस भऽ रहल छी..! जड़ियाएल जिनगीक जड़ि हहरने मुसराक कोनो भाँजे ने लगैन जे कहिया मुसरा सिर बनि जिनगीक गाछकेँ लहलहबै-लहकबै छल आ आइ अपने किए लहैक लटलटाइए..! लाख कोशिश जियालाल बाबा मने-मन करैथ मुदा जड़िक बात मनमे घोंसिएबे

ने करैन। अन्तो-अन्त नहियेँ घोंसिएलैन। मुदा मनमे जखन जार लगै छै तखन ओ अपन देखौआ रूप जँ नहियोँ बना पबैए, तैयो गुड़क पस जहिना ऊपर निकलैक मुँह बनबए लगैए तहिना ने जरपाद बनि निकलतै अछि। मन कखनो अपनापर तँ लगले कखनो गाम समाज दिस ससैर जाइन। कहू जे एतेटा गाममे छी, एते लोकक बीच गप-सप्प करैत रहबो केलौं आ करितो छी, मुदा कियो किए ने बेथाएल मनकेँ कथियबैए..?

फेर मन अपना दिस ससरलैन। ससैरते बुदबुदेला»

“गाममे रही आकि समाजमे, ने कियो केकरो देहक दुख बाँटि लइ छै आ ने कियो केकरो संगे मरैकाल जाइ छै, से तँ अपने ने अपन बुझब। सुपक-गोपी फल जकाँ तँ नहि मुदा जहिना फलो आ फड़ो गोटे-गोटे एक-कोशिया भऽ कनहा-कोतरा बनि एक भाग सुभर फल जकाँ आ दोसर भाग सुखैत-टटाइत-जरैत-मरैत रूपमे रहैत। मुदा जे होश सम्हारि होशगर छैथ वएह ने जेते सुपक-गोपी जकाँ रहल ओकरा ओरिया कऽ निकालि-निकालि फलभोग तँ करिते छैथ।”

मनसँ निकलल विचारकेँ जियालाल बाबा फलभोग बुझि नीक जकाँ नइ पकैड़ सकला। मुदा जहिना कोनो धड़फड़ाएल बटोही खुजैत नाहपर कुदि ऐगला माँगि पकैड़ निधंग ठाढ़ भऽ जाइए, तहिना जीयालाल बाबाक धड़फड़ाइत विचार मनक नाहपर कुदलैन»

“अपने केलहा छी!”

पड़ले-पड़ल ओछाइनपर जियालाल बाबाक बुधिकेँ विवेक धकियौलकैन। धकियौलकैन ई जे जखन अपने केलहाक भोग भोगै छी, तखन अनेरे जे दुनियाँमे वौआइले जाएब, से कथीले। अनेरे कोन जरूरत अछि जे मोटका-मोटका किताब पढ़ि अपन मन मोटा लेब। कोन जरूरी अछि जे बेकतीक कोला-कोली खेत नपैले आन गामक चौहद्दी लगक सीमापर सँ नापि खेतक आड़ि कायम करैक फेरमे पड़ब, जखन अपने

केलहा छी तखन जिनगीक डायरीक पन्नामे तँ हेबे करत। मिडिले स्कूलसँ सुति उठला लगसँ सुतै बेर तकक सभ किछु लिखिते आबि रहल छी, तखन किए ने अपने दिलक, अपने हृदयक डायरी खोलि हीरकेँ देखी। हीर अन्नक ओ अंश छी जैठाम ओकर जीवनी-शक्ति बसै छै, माने जीवन-दाता कहियौ आकि जीवन-दानी, बनैए। ओहिना मनुक्खोक हृदयक हीरसँ ज्ञान-कर्म-जीवनक विचार जगने, ज्ञानी-कर्मी-जीवनीक जन्म होइ छइ। जइसँ काजोक जीवनदाता आ ज्ञानोक जीवनदानी बनैए। अपन जिनगीक हृदयक डायरी खोलि देखैले जियालाल बाबा उठि कऽ बैसला। अलमारीपर नजैर देलैन तँ मोन पड़लैन, डायरीबला अलमारी। घरमे अलमारीक कमी नहियेँ छैन, पतिआनी लगल अनेको छैन्हे। रहबो केना ने करितैन, चालीस बर्ख पहिने एम.ए. केने छला।

जियालाल बाबा गाममे पहिल-पहिल एम.ए. छैथ। जखन एम.ए. तकक शिक्षा ग्रहण केलैन, आ मन ब्रह्मचारी जकाँ निश्चल-निर्मल छेलैन तहिये अपन सेवा वृत्तिकेँ समाजक अंग बना बेकतीगत जिनगीकेँ ओइ साँचामे ढालैक उदेस बना लेलैन जइ साँचाक सच्च छी जे मातृभमि हौउ आकि पितृभूमि जाबे धरतीपर पएर रोपि सेवा नइ करब ताबे बीचमे केतबो मधुर स्वरमे गुन-गुनाइत रहब, ओकर कोनो महत नइ रहि जाइ छै..। एहने विचार जियालाल बाबाकेँ ओही अवस्थामे उग्र भऽ गेलैन जहिया कौलेज छोड़नहि रहैथ। गामेमे जीवन-यापनक संकल्पक संग रहि गेला।

ओना जखन जियालाल बाबा मिडिल स्कूलसँ हाइ स्कूलमे नाओं लिखौलैन आ अठमा वर्गक समाज अध्ययनमे पढ़लैन जे मनुक्ख सामाजिक प्राणी छी, तँए समाजक संग समाजपर जीवन-मरण निर्भर करै छै..। समाज भेल मेह आ लोक भेल कराममे बान्हल बरद..। मेहक धूरीमे करामक संग लोक चक्कर लगबै छैथ..।

ओना जियालाल बाबाक मन जहिया अठमेमे पढ़ैत रहैथ तहियेसँ

समाज आ मनुक्खक बीचक सम्बन्ध मनमे चक्कर कटैत रहैन, मुदा पढ़ाइयोक तँ अपन क्रम छइ। क्रम छै प्राथमिक विद्यालयक पछाइत मध्य विद्यालय आ मध्य विद्यालयमे मिडिल स्कूलक संग हाइ स्कूल सेहो अछि, तेकर पछाइत ने कौलेज अछि। विद्या आ विद्यार्थीक बाढ़ि तँ अही क्रममे ने चलैए। जे जिनगीक विकास-यात्राक कड़ी छी। तँए बाल मनमे गड़ल जियालाल बाबाक विचार अनउत्तरित प्रश्न जकाँ गड़ले रहलैन, तेकर कारणो भेलैन जे साले-सालक नव विषयक संग परीक्षा सेहो जुड़ल रहलैन।

कौलेज जिनगीक पछाइत अपन परिवार सिरजैक मोड़पर अबिते जियालाल बाबाक मनमे उठलैन»

“अखन धरिक जे अपन पारिवारिक जिनगी अछि, ओ गामक उच्च कोटिक मध्यम परिवारक रहल अछि। जेकर करता-धरता अपने छी।”

जिनगीक प्रति मनमे आशाक किरण जगलैन। जइ गाममे ओहनो लोकक आकि परिवारक कमी नइ अछि, जेकरा ने खाइ-पीबैक ठेकान अछि, आ ने पढ़ै-लिखै आकि रहैक ठेकान अछि। तैपर जाति-जातिक बीच, पंथ-पंथक बीच, टोल-टोलक बीच आ गाम-गामक बीच जे एते आपसी कलह अछि! एहेन समाजमे जीब लेब बाल-बोधक खेल नइ छी।

..अखन धरिक छात्र-समुदायक बीच जे जिनगी जियालाल बाबाक बीतल छेलैन आ समाजक बीच जे आगूक जीवन चलतैन, तइमे सेहो बहुत दूरी बुझि पड़लैन। जैठाम सभ जातिक आ सभ धरमक संगी मिलि संगे खाइत-पीबैत आबि रहल छी, ओ सामाजिक निअमसँ विपरीत अछि! छुआ-छुत अखनो लोकक मनमे कूटि-कूटि कऽ भरल छै! एक-दोसराक बीच खाइ-पीबैक कोन बात जे एकठाम बैसबोक बेवहार नै अछि!

तरे-तर जियालाल बाबाक मन गहरए लगलैन। जेते गहराइमे डुबि कऽ डुबकुनिया काटैथ तेते रंग-रंगक जीव-जन्तुसँ भेँट-मुलाकात सेहो होइत रहैन। चारू दिस जहिना जीव-जन्तुक बोन तहिना एक-दोसर एकठाम बैस बात-विचार नइ कऽ सकैए, खा-पीब नइ सकैए, पूजा-पाठ नइ कऽ सकैए, एते तक कि सरस्वती भवन हौउ आकि लछमीक महल, ओहो तेना घेराएल अछि जे दर्शनक कोन बात जे पहुँचियो ने सकै छी! पहुँचबो तँ असान नहियेँ अछि जे महादेव बाबाक नाँगैर पकैड़ पार उतरए चाहब ओ अपने बोकियाइत-बोकियाइत अछूत भेल छैथ! तखन हमरा-अहाँकेँ जे मनमे गड़ल अछि से तँ कनी विचारए पड़त किने?

जियालाल बाबाक मन ठमकलैन। ने आगू दिस देखि पबैथ आ ने पाछू दिस ढुलकए चाहैथ। अनेको रंगक संकल्प मनमे उठैन तँ मुदा विकल्प भेटबे ने करैन। गाम दिस तकैथ तँ देखैथ जे जैठाम पोखैरक घाट चाहे तँ बँटाएल अछि आ नइ तँ लोहाक मोटका सिकड़ी-कड़ीसँ घेराएल अछि, तेतबे नइ जैठाम पीबैक इनारक पानि घेराएल अछि, देवता बँटाएल छैथ, देवालय बँटाएल अछि, तैठाम बास करब असान अछि?

'असान' लग अबिते जीयालाल बाबाकेँ एक-बट्टीसँ दू-बट्टी मोड़ भेटलैन। ओना दू-बट्टीक माने ईहो होइए जे एके बाटसँ डारि फुटि निकलैए। तँए कि ई नइ होइए जे एकटा उत्तरसँ दच्छिन आ दोसर पूबसँ पच्छिम जाइक जे मिलान अछि, की ओ दू-बट्टी नइ भेल? हँ, ओकरा चौबट्टी सेहो कहि सकै छिऐ मुदा यात्राक जे यात्री एक बाटसँ अबैत रहत आ दोसर बाट पकैड़ आगू बढ़ि नइ जाएत, ओकरा-ले तँ दू-बट्टीए भेल किने...।

मुदा चौबट्टीपर अबिते जियालाल बाबाक मनक भक्क जेना खुजलैन। खुजिते भकमोड़ सभपर नजैर गेलैन। चौबगली भकमोड़े-भकमोड़ अछि! केना जिनगीक गाड़ीकेँ आगू-मुहेँ बढ़ाएब? जैठाम आगूमे

बेठेकान भविस अछि तेम्हरे जेबाको अछि। जइमे खाधिये-खाधि सौंसे बनल अछि। एक दिस धन-धानक तँ दोसर दिस धने-धानक धैन, धने किए, जनो-मन तँ अछिए।

कजराएल-करियाएल अन्हरिया-राति जकाँ अन्हारे-अन्हारमे जिया-लाल बाबा अपनाकेँ देखए लगला। की एहेन अन्हारमे अन्हरा कऽ आन्हर बनि अन्हराएल रहब, ई केते उचित? जखन जीवन भेटल, तखन ओकरा जीव बनि जीब अछि।

अनायास जीयालाल बाबाक मनमे उठलैन। बेकतीक संग परिवारो आ समाजो रोगसँ रोगग्रस्त भऽ रोगाएल ऐछे, मुदा मरि गेल अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। किछु भेल अछि तैयो तँ एते लोकक मनमे सामाजिकता ऐछे जे केतौ आगि लगै छै तँ मिझबऽ जाइते छइ। अनका घरमे लगतै तँ हमहूँ मिझबऽ जेबै आ हमरोमे लागत तँ समाजक लोक मिझबए औत, ई बिसवास तँ मनमे छैन्हे। एतबे किए मुर्दाक बरियाती हौउ कि बिआहक, समाजक लोक समाजक संग जाइते छइ। एकर माने ईहो नहि जे छल-प्रपंच आकि चोरी-छिनरपन-बेइमानी-शैतानी नइ अछि। चाहे ओ बात-विचारक हुअए आकि धन-सम्पैतक, दुनूमे तँ अछिए। मुदा किछु अछि तैयो तँ शान्त गाम अपन अछिए। आइ धरि ने एकोटा केस-फौदारी भेल अछि, आ ने कोनो झंझटक निपटान नइ भेल हौउ, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। भलेँ नीक भेल हौउ कि अधला, सभ दिनसँ होइत आबिये रहल अछि आ शान्त भेल समाजो तँ चलैत आबिये रहल छैथ। समाजसँ उतैर जीयालाल बाबाक मन अपन परिवारपर पड़लैन। समाजक बीच तँ छीहे, सभसँ सम्बन्ध ऐछे, चाहे ओ खण्डित हुअए वा नगण्य हुअए मुदा से तँ सभसँ अछिए। समाजक जे जातिक सीढ़ी बनल अछि तइमे बीचमे छी। दुनू दिस दुनू घाट अछि। माने निच्चाँ मुहेँ पानि तक आ ऊपर मुहेँ अकास तक। विद्यालय हौउ कि देवालय सभठाम निच्चाँमे बैस जेबाक अधिकार अछिए। भलेँ ऊपरका

जोकर नइ हुअए...।

मनमे उठिते जीयालाल बाबाक मन जीबैक आशा देखि सवुरा लगलैन। सवुराइते मुहसँ निकललैन»

“जाबे लोकक मनमे लोकक प्रति नीक धारणा नइ बनत ताबे नीक समाजे कि परिवारे आकि लोके नीक केना बनत? अही संग आगू चलब सएह ने हएत, मुदा तइमे अपन सेवाक की हक-हिस्सा अछि?”

मुहसँ निकैलते जीयालाल बाबा अपन सेवाक विचार करए लगला। अपन सेवा अपना-ले केहेन हेबा चाही?

विचार तँ मनमे उठि गेलैन मुदा केतएसँ सेवाक आरम्भ हुअए, ई सोझरेबे-सुढ़िएबे ने करैन। अन्हार घर साँपे-साँप। आगू गहुमन अछि आ पाछू नाग!

फेर मनमे जगलैन- एते तँ ऐछे किने जे विषधर होइ कि नाग, सपहरिया ओकरा दूध-लाबा खुआ बीखे हरि लइ छै जइसँ ओ हर-हरा जकाँ विषहारा बनि पूज्य भऽ जाइते अछि। समुद्रमे स्नान करए गेलौं आ समुद्रक कोन बात जे ऊपरके लहैरिक डरसँ ओइमे पैसबे ने करब तखन, नहाएब केना? बिनु नहेने मनमे अर्पण-पर्पण केना हएत? हमरो देहे छी किने! ओना नहेला पछाइत, चाहे जेहेन नहान हुअए, सभ हनुमान चलीसा पढ़िते छैथ, मुदा जीयालाल बाबा बिनु नहेनहि विचार मंत्र पढ़ए लगला। ठमकल समाज आकि परिवार आगूओ सँ खिंचल जा सकैए आ पाछुओसँ धक्का मारि आगू ठेलल जा सकैए, माने आगूक विचारक बीचमे समाज भेला आ पाछू भेल सेवा।

..जीयालाल बाबा कौलेज-जिनगीक पछाइत समाजमे यएह, माने पाछूसँ धक्का दऽ ठेलबकैं, हथियार बना समाज रूपी समुद्रमे कुदि गेला।

चालीस बर्खक अवस्थामे अपना संग परिवारो आ समाजोक बाग-

बगिया फुलवाड़ी जकाँ केना फुलाएल? मुदा फुलेबो केना ने करत, जखने समाजक अंग बुझि अपन सामाजिक अंगकेँ अंगीकार करब तखने ने विकास-प्रक्रिया संचालित हएत, से भेल। जैठाम खेतक आशा पानि जगबैए तैठाम पानियोँक महत तँ खेते जकाँ अछि। जे सोलहन्नी अन्ना-गाहिंस अछि। एकोटा कृत्रिम साधन नइ छल, पोखैर-इनार चैतक पछाइत सुखए लगै छल, तैठाम खेतक अनुपातमे कृत्रिम बेवस्था बोरिंगक भेल। मुदा समुचित ढंगसँ नइ भेल। तेकर कारण भेल- केतौ दियादी डाह तँ केतौ जतियारे डाह बाधा भेल। जइसँ केतौ बेसी पानिक सुविधा रहने बोरिंग चलब कमल, तँ दोसर दिस बाधक आन भागमे पानिक पहुँचे ने भेल। मुदा किछु भेल एते तँ भेबे कएल जे चारू दिशामे समाज बढ़ला।

हगनार जमीनमे घर बनल, भाँग-धुथुर बाड़ी-चौमास बनल, पौआही गाए दूध दइवाली तीन-मसिया गाइक जगहपर बरहमसिया पसेरियाही दूध दइवाली गाए मलकारक खुट्टापर फुलेलैन। आन-आन गामक छोट-छोट तीमन-तरकारी बेचैवालीक बजार गाम बनल। पढ़ै-लिखै दिस झूकान भेने साहित्यिक-सांस्कृतिक काज दिस समाज बढ़ला।

बीस बर्खक सामाजिक जिनगीक पछाइत जीयालाल बाबाक जिनगीमे मोड़ एलैन। जइ नजरिये उत्थानक दिशा देखै छैथ तइमे धक्का लगलैन। गामोक रूखि मोड़ाएल। जातीय-पंथीय उन्माद बढ़ल। सामाजिक सम्बन्धमे विघटन भेल। जइसँ मतभेद बढ़ल। मतभेद भेने लाभक जगह हानिक सम्भावना होइते छइ। ओना, मतभेदो केतेको रंगक होइए जे नीको अछि, अधलो अछि।

प्रश्न उठैत जे नीक केकरा कहबै आ अधला केकरा कहबै। एकर तँ एकेटा ने उपाय अछि जे ओ बरहीन अछि कि घटहीन तेकरा जानब। मुदा जे कोनो गाम अछि ओ आन-आन गामक बीच अछि। जेना-जेना

ओ आगू ससरैत जाएत तेना-तेना बढ़ैत जाएत। आइ तँ सहजे दुनियाँ समटाएल जा रहल अछि, जइमे वैचारिक विघटन सेहो सिरैज रहल अछि। जइसँ भविस दिशाहीन भेल जा रहल अछि। एहेन स्थितिकेँ तँ आँकए पड़त...।

बीस बर्खक पछाइत माने चालीससँ बीस बर्ख आगू, माने साठि बर्खक जीयालाल बाबा अपन जिनगीक सर्वेक्षण कऽ रहला अछि। करैत-करैत फेर ओहीठाम पहुँच गेला जेतए अपने केलहाक फल ने कियो पबैए, से भेटै छइ। मुदा लगले मन आगू कुदलैन। कुदिते मुहसँ फुटलैन»

"की समाजमे कियो आँगुर बता कहि सकै छैथ जे जीयालालक किरतबे..?"

मुदा लगले मन पाछू दिस मुड़ि गेलैन। मुड़िते उठलैन, तखन फेर एना भेल किए जे आँखि उठा तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे उन्नति संगठित समाजक रूपमे सम्भव अछि ओ छिड़िया-बीतिया गेने केना हएत? मुदा लगले फेर भेलैन जे जखने पशुसँ आगू बढ़ि विवेकी मनुक्ख छैथ, तखन हुनका डोरी-पगहा आकि करामोमे तँ बान्हि कऽ नहियेँ राखल-जोतल जा सकैए। हँ, से तँ नहियेँ कएल जा सकैए। मुदा जखन सरयू नदीमे कियो नहा अवधिया बनि रामक संग जनकपुर पहुँच स्वयंवर रचता तखने ने मिथिलाक मिथि-मालिनि जनकपुरक जानकीक जीवन-गाथा गढ़ती..!

जेते जीयालाल बाबाक मनमे अपन जिनगी नचैत जाइन तेते मन करवनो घोर-घोर तँ करवनो मट्ठा-मट्ठा होइत रहैन। तैसंग दुनू मिलि घोर-मट्ठा सेहो बनि जाइन। चापाकलक पानि हौउ आकि इनारक, जाबे ओ घोर-मट्ठासँ फरिछ नइ होइए ताबे पीबाक परपन नइ होइ छै, तेहने सन जीयालाल बाबाक मनमे होइत रहैन।

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल जहिना जीयालाल बाबाक मन खुरछाँही कटैत रहैन तहिना करवनो-करवनो देहो डोलैत कटए लगलैन। तही बीच

सवरी दादी पहुँचली। खुरछाइत पतिकेँ देखि बजली»

"एना किए मन बिरहाइ-बौआइए?"

दादीक मुहसँ खसिते जीयालाल बाबा अपन जवाबदेही निमाहैत बजला»

"अपने केलहा मोन पड़ैए!"

तैपर दादी टोनली»

"आगूक कि पाछूक?"

पत्नीक विचार सुनि जीयालाल बाबा ठमकला, मुदा तैयो जवाबदेही निमाहैत बजला»

"पाछूक।"

मुस्की दैत दादी बजली»

"बुढ़ भऽ गेलौं आ अखनो तक नइ बुझलिऐ जे लाखो-करोड़ो बरख पाछूक हुअए आकि आगूक, मुदा हमर अहाँक ओतबे भेल जेते..?"

सवरी दादीक विचारक वाण जीयालाल बाबाकेँ जेना छातीमे लगलैन तहिना तिलमिलाइत बजला»

"से की?"

पतिक तिलमिली देखि सवरी दादीक मन तुललैन। तुलिते बजली»

"पहिने उठि कऽ बैसू। चाह बनौने अबै छी, दुनू गोरे पीबो करब आ गपो-सप्प करब।"

सवरी दादीक मीठौंसो बात जीयालाल बाबाकेँ मीठ-कठाइन लगलैन। जइसँ तेतैरक खट-मधुर पानि तँ जीहमे नइ टपकलैन, मुदा मीठ-कठ जरूर खसलैन।

दादी बुझि गेली जे अखन हिनका पेटक भूखसँ मनक भूख बेसी

लगल छैन। तँए दुखाइत मनकेँ आरो दुखाएब नीक नइ बुझि, बजली»

“अपन मन की कहैए?”

दादीक बात सुनि जीयालाल बाबा सकदम भऽ गेला। पतिकेँ सकदम देखि सवरी दादी बजली»

“जहिया आँखि तकलौं आ जहिया मुनब सएह भेलौं हम-अहाँ, तँए अपने करनीसँ कियो धरणी बनैए आ कियो मरणी बनैए।”

जीयालाल बाबाक आँखिमे तुष्टिसँ संतुष्टि भरए लगलैन। दादी मुस्की दैत पतिक नयन-ज्योति देखए लगली।



शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016

बत्तु

तिला-सकराँति, छुट्टीक दिन। दुनू साढ़ू माने रामोचन्द्र आ गौरियोकान्त रेडियो स्टेशनमे काज करै छैथ। ओना दुनूक पत्नी सहोदर बहिन छथिन मुदा अपने दुनू साढ़ूमे रामचन्द्र मिथिलाक छैथ आ गौरीकान्त झारखण्डक। कहब जे तिला-सकराँति-पाबैन तँ सभठाम होइए, तखन? होइ तँ ऐछे मुदा से सभ रंगक। जैठाम मिथिलामे खिच्चैर-घी-पापड़-अँचारक भोज होइए तैठाम झारखण्डमे चूड़ा-दही-चीनी-अँचारक। मुदा अँचारकेँ सझिया रहितो मोजर केना हएत? अँचारकेँ कोनो विचार छै, जेकरा विचारे ने छै, ओकर मद्दीए केतेक। तँए खिच्चैर, घी, पापड़ भेल आ चूड़ा-दही चीनी भेल...।

रामचन्द्रकेँ रेडियो स्टेशनमे सभ खोंटकर्मा बुझै छैन तँए हिनकर बेसी विचारकेँ संगी सभ खोंटि-खाँटि कऽ फेक दइ छैन आ गोटे-गोटेकेँ मानि कऽ सीखबो करै छैथ मुदा ऐठाम माने तिला-सकराँतिक पाबैनमे स्पष्टवादी छैथ जे सत्-नारायण भगवानक परसाद भेल चूड़ा-दही-चीनी, मुदा तिला-सकराँति तँ से नइ छी, सबहक छी, तँए खिच्चैर नीक भेल। ओना, कबीर-पंथी भाते-दालि-सागे-तरकारीकेँ परसाद मानै छैथ, मुदा ओ हुनकर विचार भेल।

ओना, तिला-सकराँति-पाबैनक जे फलक अछि, ओइ हिसाबे दिन-महीना गड़बड़ अछि। कहब की गड़बड़ अछि, जे पाबैनमे खिच्चैरसँ लऽ कऽ तरूआ-भुजुआ, पापड़-अँचार भेल, तैसंग चूड़ा-मुरहीसँ लऽ कऽ लाइ-चूड़लाइ, तीललाइ भेल आ ततबे किए, दूध-दहीक संग घीओ

भेल..! आब कहू जे एते वृहत् पाबैन-ले जे पूस मास चुनि माने पूसक दिन फुइस, आ तहूमे सकराँतिक दिन तँ आरो सीमा परहक भेल, जे दू देशक सीमाक बीच जे 'दस गज्जा' होइ छै तहीमे दस गज चलि जाएत, तखन तँ आरो छोट भेल। तेहेन दिन-ले अंग-छिपू पाबैन केना नीक हएत, तैठाम तँ अंग-भंग ने नीक भेल माने उचित भेल। उचित तँ ई ने हएत जे जेठ मासक पाबैन होएत, जेकर दिन दू-तीन घन्टा नमहर होइ छै, जइमे लोक ऐल-फैलसँ पाबैन मनबैत।

काल्हि भोरे गौरीकान्तकेँ राधाक संग माने दुनू परानीक बीच पाबैनमे खाइये-पीबैले झगड़ा भऽ गेलैन। झगड़ाक कारण रहैन राधाक विचार, जे मिथिला भूमिमे छी, मिथिलानी सेहो छी, तखन मैथिल-विचारसँ ने पाबैन करब। माने, खिच्चैर, घी, पापड़, अँचारक संग आरो विहीत करब। जखन कि झारखण्डी- पति-गौरीकान्तक विचार रहैन जे पैछला पुरखा जेना पाबैन मनबैत एला तेना मनाएब तखन भेल संस्कृतिक रकछा। तँए चूड़ा-दही-चीनीक पाबैन करब...।

..अन्तो-अन्त ने दुनू परानीक बीच कोनो सहमत भेलैन आ ने तेरवा-तेरवीक झगड़ा। दुनू गुमे-गुम, सुमे-सुम रहि गेल छला। मनमे कनी-मनी दुनूकेँ तामस बिनबिनाइते रहैन, गौरीकान्त ड्यूटीसँ दू घन्टा पहिनहि डेरा छोड़ि निकैल गेला। छोटकी बहिन माने गौरीकान्तक पत्नी- राधा, अपन जेठकी बहिनकेँ माने रामचन्द्रक पत्नी-मीराकेँ फोनसँ कहि देलखिन»

"सभ दिन खैहिहह पबनी ललैहिह।"

राधाक बात सुनि मीरा मने-मन गुम्हरए-गम्हरए लगली जे जँ पाबैन दिन दुनू परानीक बीच आ बेटीक बिआह दिन फटेदारक बीच जँ झगड़ा भेल तखन जेहने गति पाबैनक हेतै, तेहने ने बिआहोक हेतइ।

सोचैत-विचारैत मीरा पतिकेँ कहली» "पाबैन छी, साढ़ूओ दुनू

गोरेकेँ बजा लिऔन। जेते परिवार मीलि एकठाम पाबैन मनाएब तेते ने पाबन भेल।”

पत्नीक पेंच तँ रामचन्द्र नइ बुझि पेला, मुदा ‘सभ परिवार मीलि एकठाम बैस खाएब-पीब’ मनमे जँचि गेलैन। बजला»

“आइये साढ़ूकेँ कहि देबैन जे तिला-सँकरातिक ब्रह्म-मुहूर्तक स्नान तीन बजे भोरे होइ छै, से भेला पछाइत दुनू बेकती अपने ओतऽ आबि जाइ, तेकर नौत-हकार अखने सुनि लिअ।”

घरक अकछाएल मन गौरीकान्तकेँ रहबे करैन, तैसंग साढ़ूक संगे रसगर सम्बन्धक गप-सप्प होइते छैन। बिनु आगू-पाछू देखने स्वीकारैत बजला» “ऐ परिवार ओइ परिवारमे भेदे कथी अछि, जेहने ऐठाम तेहने ओइठाम।”

ओना पारखी रामचन्द्र, तँए ऐठाम-ओइठाम मनमे खटकलैन। मुदा गणेशजी जकाँ ढुलमुलिया बिसवासू तँ छैथे, तँए जे कानसँ सुनता आ मनमे जँचतैन तेकरे सत् मानैक आदत छैन्ह, जे पत्नीसँ लऽ कऽ साढ़ू-सढ़ुआनि-सारि होइत रेड़ियो स्टेशनक संगियोँ-साथी बुझै छैन, तँए मुँहक चुह-चुही देखि ओहने बत-बत्तु विचार बना अपन काज सम्हारि-ससारि लइ छैथ।

ओना, रामचन्द्र अपन मनक राजासँ परजा धरि अपने छैथ, तँए दोसर-तेसर रजो आ परजोकेँ परदेशियेक परमात्मा बुझै छैथ मुदा दुनियाँक लम्बाइयो-चौड़ाइ देखैत अपन दुनियाँमे बास करबे छैन किने, तँए जेकर अन-पानि खाइ छैथ तेकर तिला-सकराँतिक तीलो बहैले तैयारे रहै छैथ...।

ऐठाम-ओइठामक बीच जे रामचन्द्र मने-मन विचारए लगला से मुँहक रूखिसँ, गौरीकान्त बुझि गेलखिन। अपन विचारकेँ बतियबैत बजला» “साढ़ू, जहिना दुनू गोरे साढ़ू छी तहिना ने दुनू भाँइयोँ भेलौं,

भैयारीमे जँ लोक एते सोच-विचार करत तखन भैयारी चलतै। भैयारी तँ भेल भयक आड़ी।"

ओना गौरीकान्तक विचारमे रामचन्द्रकेँ फेर भकमोड़ भेलैन, भकमोड़ ई जे साढ़ूआरए केना भैयारी हएत? दुनू दू वंश-वृक्षक ने भेलौं? मुदा लगले मनकेँ गौरीकान्तक भैयारी-बात उठि तोपि देलकैन। बजला»

"भिनसुरका चाह दुनू गोरे संगे पीब।"

रामचन्द्रक अग्रहित बात सुनि गौरीकान्त धकमकए लगला। धकमकाइक कारण भेलैन- टटके दुनू परानीक झागड़ा। अनका काजे अपन मान-मरजादा गमाएब बेकूफी भेल। ओना बेकूफ तँ छीहे, मुदा एते बेकूफो तँ नहियेँ ने छी जे भिनसुरका झगड़ा दुपहरियेमे बिसैर जाएब। कमसँ-कम भरियो दिन निमाहब तखन ने पाबैनक फालतू खरचो बँचा पएब...।

गौरीकान्तक ततमताइत मनकेँ रामचन्द्र बुझि गेला। ओना अखन तक सारि-साढ़ूक झगड़ाक प्रति रामचन्द्र झलअन्हारेमे छला मुदा नौत-पिहानमे ततमताएबो तँ किछु विचार रखिते अछि। तँए जखन विचार अँकुरैक अवस्था अबै छै तखन जँ ओइमे नीक बीज अँकुराएल जाए तँ नीक फलो आ फूलो हेबे करतै...। मुदा तैयो गौरीकान्त कनी पाछू हटि भरपाइक टोनमे बजला»

"सारि गप-सप्प करैले फोन केने छेली, से गप भेबो कएल।"

ओना रामचन्द्रक मनमे खटकलैन जे सभ दिन एकेठाम काजो करै छी आ रहबो करै छी तखन एहेन कोन धड़फड़ी फुटा कऽ भेलैन?

तैबीच गौरीकान्त हाँइ-हाँइ कऽ पत्नीक मोबालिक नम्बर मिला 'हेलौ-हेलौ' करैत पत्नीसँ बजबा लेलैन। सभ बातकेँ झँपैत-तोपैत रामचन्द्र बजला»

"साढ़ूओकेँ कहि देलिऐन अछि आ अहूँकेँ कहि दइ छी कौल्हुका

ब्रह्ममुहूर्तक चाह अहींक बनाएल पीब।"

ओना राधा जवाब दइमे वौआए लगली। वौआए ई लगली जे ऐठाम कि ओइठाम। अपने उपकैर कऽ बजै छैथ, एक-सूराह छैथ जँ कहीं ओछाइनेपर पड़ल रही आ साँढ़-बत्तु जकाँ ढेकरैत जँ अन्हरगरे पहुँच गेला, तखन तँ भारी पहपैटमे पड़ि जाएब। एक तँ पाबैनक दिन रहत तइमे दुनू परानी बीचक वैचारिक झगड़ा अछि।

ओना राधा सेहो रामचन्द्रकेँ अँकनहि छैन, तँए धोख-निधोखक कोनो विचारे ने रहैन।

राधा बजली»

"भोरका चाह ओहिना होइ छै, आकि चाहो-चीनी-दूधक ओरियान करए पड़ै छै!"

विचारवान रामचन्द्रक मन सुकुमारि सारिक बात सुनि चिहैक गेलैन। मुदा अपना बातकेँ फरिछबैत बजला»

"साढ़ूओकेँ कहि देलिऐन अछि आ अहूँकेँ कहि दइ छी जे दुनू गोरे सबेर-सकाल आबि जाएब।"

दुलरैत-मलरैत राधा बजली»

"हम अहीं संगे जाएब।"

"तइले मनाही करै छी। तँए ने कहने छेलौं जे अहीं हाथक चाह पीब।" -पोचारा दैत रामचन्द्र उत्तर देलखिन।

मोबाइल बन्न करैत रामचन्द्र गौरीकान्तकेँ कहलखिन»

"साढ़ू, अखनेसँ लागब तखन ने पाबैन सम्हारमे औत। झोरा-झपटा सभ संगे अनने छी, तँए कनी पहिने चलि जाएब।"

रामचन्द्रक भार गौरीकान्तकेँ मिसियो भरि भारी नहियेँ लगलैन। अहिना होइते छै, एक-दोसराक सहयोगेसँ सभ किछु चलैए।

साढ़ूकेँ आश्वस्त करैत गौरीकान्त बजला»

“हाजरी बना लिअ आ चलि जाउ। हम छीहे।”

रेडियो स्टेशनक गेट तक गौरीकान्त रामचन्द्रकेँ अरिआतैत पछुएने एला। गेटसँ निकलैत रामचन्द्र पाछू उनैट दोहरबैत बजला»

“समैयेपर दुनू गोरे पहुँच जाएब।”

तरे-तर गौरीकान्तक मन हल्लुक भेलैन। भने तिला-सकराँति सन पाबैनक माथक भार उतरल। अनकर केलहा-धेलहा खाइमे लगबे की करत।

ओना गौरीकान्त साँझ दवा कऽ बजारेमे खेनाइ-खा डेरा पहुँचला। तैबीच राधा किए अनशन करितैथ। अपने हाथमे भण्डार घर छैन तखन अन-पानिसँ झगड़े किए करितैथ। तँए अपने निचेनीक अवस्थामे अपन पलंग पकैड़ पड़ल छेली।

..डेरा पहुँचते गौरीकान्त एकबेर घरवालीक खिड़की लग जा जरूर हुलकी मारलैन, मुदा कोनो चहल-पहल नइ देखि अपनो सबेर-सकाल पलंग पकैड़ पड़ि रहला। मुदा दुनूक आँखिक नीन निपत्ता। ने गौरीकान्तक आँखिमे नीन आ ने राधाक आँखिमे नीन! मुदा मन तँ दुनूक कछमछाइते...। एक तँ जाड़-मासक राति जे दिनकेँ धकिया छोट बनौने अछि तैपर आँखिक नीन निपत्ता! दुनूक मन अपना-अपना मने वौआएल..!

मुदा मात्र एक दिनक बात अछि, तहूमे रातिये भरिक, दिनमे ने लोक भरि दिन खाइते रहैए, रातिकेँ तँ एकबेर सबेर-सकाल खा कऽ नीनसँ सुतैए। उपासे की? ऐठाम आबि दुनूक मन असथिर भऽ जाइन। ओना रौतुका भोजनक गर दुनू अपन-अपन लगा नेने, किएक तँ अरारियो तँ अरारिये छी। तहूमे दुनू परानीक दू बेवहारक बीच। लगले सोझराएबो-सुढ़ियाएब तँ असान नहियेँ अछि। अपन समैपर दुनू गोरे माने

गौरियोकान्त आ रधो पहुँचैक विचार केलैन। कोनो बेसी हटल डेरो नहियेँ छैन। पएरेक रस्ता अछि। समयसँ पहिने उठि गौरीकान्त पर-पैखानासँ निवृत भऽ कलपर नहेला। ऐठाम कि कोनो सगर-घाट आकि धर-घट्टा छी आकि पोखैरक घाट छी जे एकोबेर मे अनेको गोरे नहा सकैए। ऐठाम तँ कलक घाट छी, बेरा-बेरी नहाइये पड़त। तँए दुनू गोरेक बीच नहेबाकाल रगड़ो-रगड़ी किए होएत।

राधा पहुँचते बहिनकेँ गोड़ लगि, उन्टे पएरे बहिनोइक कोठरीक खिड़की लग जा देखली जे दुनू साढ़ू की कऽ रहला अछि। पाहुन कहने छला जे भोरका चाह अहीं हाथक पीब, से तँ आबिये गेल छी, मुदा ई तँ देखि लेब जरूरी ने अछि जे जे अपन मेहमान भेला, हुनकर रूखि केहेन छैन। तैसंग ईहो ने देखए पड़त जे एक तँ पाबैनक दिन, तैपर पाहुनकेँ परिवारसँ लऽ कऽ संगी-साथी धरि खोंटकर्मा बुझिते छैन। तेहने गुणो छैन्हे, तेना कोनो गपकेँ पकैड़ खोंट-खाँट करै छैथ जे झूठकेँ राड़ी-फूल जकाँ अकासमे उड़िया दइ छथिन, आ दूभिक पातो आ फूलोकेँ देव-सिर चढ़ा दइ छथिन।

रामचन्द्र पानोक सिनेही छैथे। से बत्तु कहए डरसँ आकि पानक मान-समान देखि कऽ से तँ ओ जानैथ, मुदा पानक जड़िसँ छीप धरिक हिसाब गुनि गनि ठोरेपर रखने छैथ। जे पाते फूलो भेल आ फलो भेल। माने पानक पातेकेँ पान-फूल सेहो कहल जाइ छै आ पातेकेँ पानक फड़ी सेहो कहल जाइ छइ। तेकर जिनगियो ने तेहने घरमे बीतै छइ। माने बरैबमे...।

..एक ताले रामचन्द्र गौरीकान्तकेँ झाड़ैत»

“पान मिथिलाक धरोहर छी मुदा ओकर उपयोगे ने करबै, माने दाँत टुटैक डरसँ आकि कारी होइक डरसँ खेबे ने करबै तखन ओ धरोहरे की भेल। ओहन मालाकेँ जपैसँ की भेटत?”

ओना गौरीकान्त तिलकोरे जकाँ बजैमे फड़कोर छैथ, मुदा पत्नीक झगड़ा माथक बोझ बनल रहने चुपे रहब नीक बुझलैन। मनमे शंका रहबे करैन जे जहिना कोटक चपरासी हाकिमकेँ हाथमे चाह दैत अपन बात कहैक साहस करैए तहिना जँ कहीं राधा साढ़ूक हाथमे चाहक कप पकड़बैत कौल्हुका झगड़ाक बात चालि दैथ, आ ओइपर साढ़ूक नजैर चलि जाइन तखन माथमे एकोटा टीक थोड़े रहए देता। एक तँ ओहिना टीककेँ केश बुझि बाबरी बनौने छी, तैपर जँ पाबैनक झगड़ा सन मुद्दा सारिक मुहेँ सुनता, तखन कोनो दुरगैत बाँकी थोड़े रहए देता। तँए सुक-पाक मने रामचन्द्रक विचारकेँ हँ-मे-हँ मिलबैत गौरीकान्त बजला»

"हँ से तँ ठीके।"

खिड़की लगसँ राधा बहनोइक विचारकेँ सुनि मने-मन विचारली। चाहक ओहन तबधल मन रामचन्द्रकेँ अखन नइ छैन, भऽ सकैए ओ मने-मन ईहो बुझैत होथि जे भरिसक अखन तक राधा नइ पहुँचल हुअए। अपन काजक प्रति राधाक मनमे संतोष भेलैन। माने मनमे तुष्टि एलैन। तैसंग मनमे ईहो भेलैन जे अखन पानेक चर्चमे लगल छैथ, केते-काले ओरेतैन तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। चाहक पछाइत ने पान होइए, मुदा विचारक क्रममे तँ दुनू होइए। नख-शिखक वर्णन सेहो होइए शिख-नखक वर्णन सेहो होइते अछि...। राधाक मनमे तुष्टि अबैक कारण ईहो रहबे करैन जे चाह-ले जखन मन तबधल रहत तखन छुछे इनहोरो पानि चाहसँ नीक लगै छै आ जखन भरल रहल तखन चाहो पत्तीक गुण-अवगुण बुझि आ दूधोक गुण-अवगुण बुझि नीको चाहकेँ अधले लोक बुझैए। मुदा से नइ, पूस मासक सकराँतिक भोर छी, तँए केहेन चाह हेबा चाही, से राधा मने-मन विचार केली।

चाह चलल। पहिने मीरा गौरीकान्तक आगू नइ आबए चाहैथ, मुदा ई तँ भेल गाम-घरक चलैन, जे चलियो सकैए आ चलितो अछि, मुदा गामसँ बाहरमे- माने प्रदेशमे तँ थोड़े बाधक ऐछे, जैठाम ने समाजक

सधनता अछि आ ने परिवारक। ओना जहिना एक दिस रामचन्द्र अपन परिवारक अभिभावक भेला, तहिना राधा करबारी। तीनू गोरे–मीरा, राधा आ गौरीकान्त–रामचन्द्रकेँ भीतरसँ जनिते छैथ जे कखन कोन बातक विचार करैमे उनैट जेता आ कखन सुनैट जेता तेकरो कोनो ठीक नहियेँ अछि...। मुदा ई तँ अनका मने रामचन्द्र छला, अपना मने तँ एक-डरिया मानि एक-चलिया छैथे तँए बाघ-बकरीमे कोनो अन्तर मानबे ने करै छैथ। दुनूकेँ जीब बुझि दुनूक जीवनक ताकमे लागल रहै छैथ। चाह पीला पछाइत पानक खिल्ली मोड़ैत राधा रामचन्द्रकेँ कहली»

"ई कोन पाबैन भेल, जे चारि गोरेमे दू गोरे ओरियान करू आ दू गोरे सुआदि-सुआदि खाउ! ई उचित भेल?"

ओना राधाक बातोसँ आ परिवारमे वर्चस्वो देखि गौरीकान्त मने-मन विचारैथ जे साढ़ू तेहेन अभिभावक छैथ जे जेना-जेना साइर नचौतैन, तेना-तेना नचता। ऐठाम अपन मोजरे केते हएत, तँए अनेरे मुहथोथैर करब नीक नहि, चुपे रहब भलमनसाहत हएत। तैबीचेमे रामचन्द्र राधाकेँ कहलखिन»

"हमर कोन बात जे आनो कियो एकरा उचित नहि कहत।"

अपना दिस सोझराइत-सूढ़ियाइत पाहुन-रामचन्द्रकेँ देखि राधा बजली»

"जखन पाबैन छी, तखन किए ने सभ भनसे-घर चली आ ओतै बैस सभ-कियो मीलि बनेबो-सोनेबो करब खेबो करब आ गपो-सप्प करब।"

राधाक बात मानि रामचन्द्र गौरीकान्तकेँ कहलखिन»

"साढ़ू, आइ पाबैन दिन छी, सभ मीलि ओरियेबो करब आ खेबो करब। यएह ने भेल पाबैनक पाबन पौना।"

एक तँ जेठ-सासु आ जेठ-साढ़ूक बीच गौरीकान्त अपनाकेँ देखैथ,

पत्नीकेँ मुद्दै बुझि कौल्हुका झगड़ा देखैथ, तँए अपनाकेँ तेसर बुझि पमरिया जकाँ हँ-मे-हँ मिलबैत बजला»

“कोनो हर्ज नहि। ई कि कोनो रेडियो स्टेशन छिऐ, ई तँ परिवार छी।”

भनसा-घरमे बैसते रामचन्द्रकेँ पत्नी कहलकैन»

“लिखैकाल, बजैकाल गोलका भाँटाक बड़ाइ करै छी आ खाइकाल जे रंग-विहीन भँट्टाकेँ बजारसँ उठा अनलौं अछि, से पाबैन सन भेल?”

ओना मीरा अपन पड़ोसी ऐठाम जेहेन गोल-गोल-लाल-लाल भाँटा, खिच्चा बोड़ा, पाकल-पाकल टमाटर, दुधिया कोबी इत्यादि देखने छेली, तइ हिसाबे अपन तरकारी झूस बुझि पड़ैन, तँए कड़ैक कऽ बजली। सकदम भेल रामचन्द्र मने-मन विचारैथ- साढ़ू कोनो लोके ने छिया, खाइपर बिकाइबला लोक छैथ, तहूमे अखन खेबेक वौसक तकरार छी, जेहने नताएल साढ़ू छैथ तेहने साइरो छैथे। घरवालीक शिकाइत छी, केतए जाएब। कियो आगूसँ तँ कियो पाछूसँ बतुआइत बत्तु बना-बना बोकिएबे करता। मुदा तैयो अचताइत-पचताइत रामचन्द्र अपन सफाइमे बजला»

“भलेँ अहाँ सभ भाँटाक रंग-रूप देखि झुझुआ गेल छी, मुदा हमरो मन नइ मानैए जे ई नीक भँटा नइ छी?”

पंच बनि राधा बजली»

“सोझे नीक कहने नीक थोड़े हएत!”

राधाक बात सुनि रामचन्द्रकेँ जान-मे-जान एलैन। बजला»

“परसूओ प्रसारणमे कहने रहिऐ जे जाबे प्रदूषित वस्तुसँ अपनाकेँ सुरक्षित नइ राखब, ताबे प्रदूषणक प्रभावसँ बँचि नइ सकै छी। केतए केते प्रदूषण अछि, ओ अखन नइ कहल जा सकैए। समैयक अँटावेश

नइए, तँए अखन एतबे जे हम ओहन किसानक भँट्टा कीनि कऽ अनने छी, जे अपना ढंगे उपजौने छैथ, तँए केमिकलक चकचकी-प्रभाव आ पुष्ट फल नइ बुझि पड़ैए। मुदा अनाड़ी जकाँ कीनि अनने छी, सेहो बात नहियेँ अछि।"

तैबीच एक-घानी तड़ूआ लोहियासँ निकैल गेल छल, गौरीकान्त बजला»

"साढ़ू, जेहने भूजल चूड़ा-मुरही अछि तेहने कड़कड़ाएल तड़ूओ अछि, तँए दुनूक संयोगक अपन सुआद छइ।"



शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016

कछमछी

ओछाइनपर पड़ले रही, रवि दिन रहने मनमे कोनो काजक धड़फड़ियो ने रहए, दोसर ईहो भेल जे रातिमे देरीसँ नीन भेल तँए देह भरियाएल सेहो रहए। आँगन बहारि पत्नी जखन दरबज्जाक ओसारपर बहारए पहुँचली, कि बिच्चेमे दरबज्जाक पछुआरमे, रस्तापर गल्ल-गूल होइत सुनलैन। बाढ़ैन ओसारेपर रखि रस्ता दिस बढ़ली। नजैरपर पड़िते श्याम कहलकैन»

“भौजी, भूदानी बाबाकेँ कछमछी आबि गेलैन, जे दिन जे पहर छैथ, सएह!”

कहि श्याम आगू बढ़ि गेला आ पत्नियोँक मनमे कोनो शंके ने उठलैन जे दोहरा कऽ श्यामकेँ किछु पुछितैन। रस्तापर सँ चोटे घुमि पत्नी केबाड़ ढकढकौलैन। जगले रही, मुदा पड़ल रही। पड़ले-पड़ल बजलौं»

“किए केबाड़ ढकढकबै छी, जगले छी मुदा देह कनी असकताएल बुझि पड़ैए।”

पत्नीकेँ जेना समाजक सुपारी भेट गेल होइन तहिना दाबीमे रहैथ। केना माइनती। बोलीमे कनी टाँस आबिये गेल रहैन। बजली»

“केबाड़ खोलू, एकटा समाचार कहब।”

समाचारो तँ समाचार छी, अकाससँ लऽ कऽ पताल तक, सुखसँ लऽ कऽ दुख तकक आ पानिसँ लऽ कऽ पाथर आ पाथरसँ लऽ कऽ हवा तकक होइए। एहेन स्थितिमे नहियोँ सुनब सेहो बात नहियेँ। ओना, जेते

देह भरिआ कऽ असकताइत रहए तइसँ बेसी मन असकताइत रहए। असकताइक कारण छल, काल्हि भरि दिन कचहरियेक चक्करमे बीतल रहए। बिना अपने उठने केबाड़क बिलैया तँ खुजैत नहि, मुदा तैयो असकताइते मनो आ देहोकेँ उठबैत ओछाइन छोड़ि बिलैया खोललौं।

एकटा पट्टा हटैबते पत्नीक तमतमाएल चेहरा सोझमे आबि गेल। मुदा हमहूँ तँ नौतल रही, माने पहिनहि कानमे पड़ि गेल रहए जे एकटा समाचार पत्नी कहती, तँए बीचमे किछु बाजबकेँ उचित नइ बुझि समाचार सुनैले कानो ठाढ़ केलौं आ आँखियो पत्नीक मुँहपर गरेलौं। पत्नियोँ बुझि गेली जे हमरे समाचार सुनैले कनखड़ल छैथ। ठिकिया कऽ बजली»

“भूदानी बाबाकेँ कछमछी आबि गेल छैन, जे दिन जे पहर छैथ, सहए।”

पत्नी ई नइ कहली जे जा कऽ जिगेसा करियौन। मुदा एहेन समाचारक अरथे की भेल। एक तँ मनो-देहो असकताएल तैपर बज्रपात भेल। ओना बजरपातेसँ ब्रज-पात कहियौ आकि लुज पात, सेहो तँ होइते अछि। मन हल्लुक बनबै दुआरे बजलौं»

“पहिने एक-लोटा पानि आ एक गिलास चाह नेने आउ, तखन आगूक कोनो मुँह-मिलानी करब।”

पत्नियोकेँ बुझले रहैन जे काल्हि भरि दिन ओहन अगियाएल समयमे कचहरीक चक्कर लगबैमे बीतल रहैन तँए देहोमे जरान आबिये गेल हेतैन आ मनो तबैधिये गेल हेतैन, ओ खुमारी जाबे मनसँ नइ निकलतैन ताबे असकतेबे करता। जइसँ एक नइ अनेक रंगक छिन्ना-बहाना तकबे करता। तँए बिना किछु हँ-हूँ बजने पत्नी पानि-चाहक ओरियानमे विदा भेली। बाढ़ैन जे बिच्चे ओसारपर छल ओकरा उठा कातमे रखि आगू बढ़ली।

पत्नीकेँ आगू बढ़िते केबाड़क जे दोसर पट्टा लगले छल ओकरो खोलि देलिऐ आ ओछाइनपर पुन: आबि पड़ि रहलौं। मनमे उठल कौल्हुका काज। काल्हि भूदानी जमीनक गामक दूटा झगड़ाक फैसला भेल।

एकटा गौएँक छेलैन माने जीतवारपुरेक आ दोसर बगलक गाम-हरपुरक छल। दुनू गोरे कचहरिया संगी सेहो छैथे, तँए दस दिन पहिने कहि देने छला जे केसक फैसला दिन रहबै। एक तँ पेटक आगिक भूख मेटबैबला वौस, तैठाम नइ जाएब केहेन होएत। भिखमंगाकेँ एकमुट्ठी भीख खाइले आ एक बीत भरि वस्त्र पहिरैले तँ सभ दइ छैथ, मुदा मुट्ठियो भरि अन्न आ बीत भरि वस्त्र सभ-दिना भेटै से केते गोरे विचारि दइ छैथ। एहेन स्थितिमे कचहरी नइ जइतौं सेहो तँ नीक नहियेँ होएत। भरि दिन दौड़-बरहाक पछाइत साढ़े चारि बजेमे दुनू केसक फैसला सुनौल गेल। एके कचहरी, एके केस मुदा दुनू दू गामक रहितो फैसला दू-रंगक भेल। जीतवारपुरक जीवकान्त भाइक फैसला पक्षमे भेलैन आ हरपुरबला हरनाथक फैसला विपक्षमे भेलैन। फैसला तँ हँ-नइमे होइते अछि, तँए जहिना माथक चोट जकाँ झनाक-दे सोझे मगजमे लगैए तहिना भेल। ओना फैसला तँ एक शब्द-एक पाँतमे होइए मुदा फैसलाक व्याख्या तँ अनेको पाँतमे होइए, ओ तँ बिनु पाँत-पाँत आ पतियानी-पतियानी बुझनौं तँ नहियेँ बुझि सकै छी, तँए तत्काल माथकेँ दबैत कचहरीसँ निकललौं।

ओना संगमे दुनू गोरे माने जीवकान्तो भाय आ हरनाथो भाय रहैथ, तँए बिना किछु बजने-भुकने गाम एलौं।

जहिना जीतवारपुरक भूदानी विवादक जमीनमे एक पक्ष गौंआँ छला आ दोसर पक्ष बहरबैया रहथिन, तहिना हरपुरोक विवादमे छला। मुदा दुनूक विवाद दू रंगक छेलैन। भूदानी आन्दोलनक किछुए दिनक पछाइत जीतवारपुरक समाज एकठाम बैस, आन्दोलनकेँ संग पुरैत जेते

जमीन दान- स्वरूप गामकेँ भेटल छल ओकर निवटारा कऽ नेने छला। ओइमे दू तरहक जमीन छल। एक तरहक छल- गौंआँक देल आ दोसर तरहक छल- बहरबैयाक देल मलिकाना जमीन। ओना आन्दोलनक मांग छल अपन जमीनक छठम भाग दानमे देल जाए, मुदा से हू-बहू नइ भेल। जे सम्भवो नहियेँ छल। सम्भव ऐ दुआरे नइ छल जे गाममे गोटि-पँगरा पाँच बीघासँ ऊपर जमीनबला छला बाँकी बिनु जमीनबला आ कट्ठासँ बीघा भरिक छला आ अखनो छैथ। जिनका अपनो पेटक बुतात खेतसँ नइ जुमै छैन ओ दानमे केते जमीने देथिन। तँए कट्ठा-दू-कट्ठा पाँच-दस कट्ठा तक लोक दान केने छला।

गामक बैसारमे माने भूदानमे देल गेल जमीनक बँटवाराक बैसारमे जहिना सभ स्वेच्छासँ दान देने छला तहिना छोड़ि देलैन। जरूरत-मन्द लोकक बीच बँटबरो कऽ लेलैन। मुदा गाममे जे बहरबैयाक जमीन छल, ओइमे विवाद शुरू भेल। ओना, बहरबैयाक जमीन गामेक लोक बँटाइयो करै छला। गामक-गाम जमीन रखनिहार जमीनदार सभ भूदानी आन्दोलनकेँ सुरक्षा-कबच बुझि गामक-गाम दानमे दऽ देलखिन।

जीतवारपुरबला सभ सामूहिक विचार कऽ बहरबैयो-बला जमीनकेँ जिला-कार्यालयक भूदानी कार्यकर्ताक बीच बैसारमे सभकेँ सभटा जमीन बाँटि देलैन। अधिकांश बँटेदारे छला, जे सोलहन्नी खेतक मालिक भऽ गेला। गौंआँ तँ एक-मुहरी भऽ बाँटि लेलैन, मुदा कानूनोक तँ अपन रस्ता छइ। जे जमीन-दाता छला, हुनका नाओंसँ कागजे ने छेलैन। कागजी अधिकार दोसर-तेसर समांगक छेलैन। यएह मुद्दा जीतवारपुरक रहइ। मुदा हरपुरक मुद्दा दोसर रंगक छल। हरपुरक मुद्दा छल जे अपन सुरक्षा-कबच बना हरपुरक जमीन भूदानकेँ तँ दऽ देलैन मुदा ओइ जमीनक बिकरीक गप, दाम तोड़ि कऽ गौंआँ सभसँ कऽ लेलैन। ओना सैयो बीघा जमीनक बिकरीक बात-चीत चारिये गोरेसँ केलैन।

मुदा ओ चारू चारि जातिक मुँहगर-कन्हगर लोक। एक-के-दू के नै चाहैए। जइ जमीनक दाम जेतेक छै ओ ओतेक अदहेमे हएत, केकरा गाड़ा लगतै। आन्दोलन खेल भऽ जाए, तँ भऽ जाए! आन्दोलनी तँ खेलाड़ी बनि खेलबे करता! सएह भेल। बीस बीघा जमीन गामक जे छुट्टा सभ छल से-सभ मिला अस्सी बीघा जमीन, अपना नामपर चारू गोरे लिखा लेलैन। दस्तावेज बनि गेल। ने हरिपुर-समाजक बैसारमे भूदानी जमीनक बँटबारा भेल आ ने कियो भूदानक जिला कमिटि दिससँ आबि जमीन बँटलैन। गौंआँक देल जमीनसँ लऽ कऽ अनगौंआँक तकक जमीनमे झंझट ठाढ़ भेल। कम संख्यामे रहितो जरूरत-मन्द लोक अपनामे बैस विचारलैन जे जोरू-जमीन जोरकेँ नइ ते केकरो औरकेँ..। विचारमे उग्रता बढ़ल, जमीनबला कानूनक दोगमे नुका रहला आ गौंआँक बीच मारि भऽ गेल, एक गोरे खून भेला।

हरनाथ भाइक मुद्दा ऐसँ भिन्न छेलैन। हुनकर मुद्दा छेलैन जे भूदानक जिला-कार्यलयसँ जमीनक प्रमाण-पत्र भेट गेल छेलैन, मुदा ब्लौकसँ रसीद नइ भेटल छेलैन, लेन-देनक दुआरे प्रमाण-पत्रेकेँ प्रमाण बुझि जमीनपर केस कऽ देलखिन। संजोग नीक भेलैन जे आन भूदानी जकाँ जिनगी भरि कोटे-कचहरीक झोरा नइ उठबए पड़लैन, आठे बर्खमे फैसलापर आबि गेलैन। ओना जमीनक ओझरी चारू दिससँ लगि गेल रहैन, भूदान कार्यालयसँ तीन-तीन गोरेकेँ एके जमीनक प्रमाण-पत्र, पाइक लेन-देन कऽ भेट गेलैन। जेकरा जमीनदाता भूदानमे देल गेल जमीनक रजिष्ट्री केने छेलखिन तेकरे भूदानक कार्यालय सेहो बँटवारा कऽ प्रमाण-पत्र दऽ देलक। पहिलुकाकेँ खारिज करैत दोसर गोरेक नाओंसँ दऽ देलक। चालू-पुरजा लोक, ब्लौकोसँ रसीद कटि गेलइ। ओना भूदानक प्रमाण-पत्रक रसीद नइ रहै, रहै रजिष्ट्री जमीनक रसीद, मुदा रसीद तँ रसीद छी, जे रहबे करइ। ओना जमीन लिखौनिहार कोटमे नइ रहैथ, रहैथ जमीनदाता, जिनकर लगक लोक फैसला केनिहार कुरसीपर, तँए

सोझमे रहब जरूरी रहबे करैन।

पत्नी पहिने लोटामे पानि दऽ गेली, जाबे कुर्ड़ा-आचमन केलौं ताबे चाहो बना कऽ नेने एली। भिनसुरका समय, तहूमे समाजक समाचार सेहो कानमे पड़िये गेल छल, मन फुल-फुलाएल रहबे करए, पत्नीक हाथमे चाह देखिते बजलौं»

“भोरे-भोर अहाँ तेहेन समाचार सुनेलौं जे भरि दिनक यात्रा भङैठ गेल।”

पत्नी अकचकेली। अकचकेली ई जे कोन एहेन बात बजा गेल जे सुति-उठि लोक शुभ-शुभ करैए आ ई एना कहलैन! पुछबो की करबैन, अखन मुँहमे चाहो नइ लेला अछि, मुँहमे चाहक गिलास भीरेबे केलौं कि पत्नी बजली»

“से की?”

एक घोंट चाह पीब नेने रही, कण्ठ लगतक गरमी पसैर गेल रहए, बजलौं» “तेहेन समाचार भोरे-भोर कहलौं जे अपने दिन बेठेकान भऽ गेल!”

पुन: पत्नी बजली» “से की?”

कहलयैन» “भूदानी बाबाकेँ जखन कछमछी आबिये गेलैन तखन जँ जिगेसा करए नइ जाएब से उचित हएत? संयोग छी जँ ओतए पहुँची आ परान छुटि जाइन तखन छोड़ि कऽ अएबो तँ उचित नहियेँ हएत। मनमे रोपने छेलौं जे पहिने कोटक कौल्हुका फैसला पढ़ब, से अहाँ छोड़ा देलौं!”

ओना विषय-विषयक अपन-अपन काजक गम्भीरता छै, मुदा काजो तँ काज छी, सभकेँ अपन-अपन अनुकूल होइ छइ। जइसँ काजोक गम्भीरता तँ भिन्न-भिन्न भइये जाइए। पत्नीक लेल तँ भूदानी बाबाक कछमछी गम्भीर भेबे कएल। तँए अपना जनैत ओ ओकरे जरूरी

बुझलैन। चाह पीब लेलौं आ पान खा भूदानी बाबाक जिगेसा करए विदा भेलौं।

रस्तापर अबिते कन्हामे खादी भण्डारक झोरा टाँगल, धपधपौआ धोती-कुरताक ऊपर चरि-हत्थी चद्दैर आ कटोरिया धोधि, धक्-दऽ मनमे खसला। जेना-जेना पाछू दिस ताकी तेना-तेना भूदानी बाबा सिनेमाक रील जकाँ घुमए लगला। सभ-दिना रूटिंग छैन जे दाढ़ी बनेबे करता, देहक जेते वस्त्र छैन, सभ दिन ओकरा साबुन चढ़ेबे करता, तैसंग अपन विचारकेँ लोकक बीच दू घन्टा रखबे करता। दिने केतेटा होइए जे ऐसँ बेसी काज लोक पुराइये पौत। अहिना ने एक दिन एक दिन सटि जिनगीक अन्तिम दिन लग पहुँच जाइए।

दलानक ओसारक पलंगपर भूदानी बाबा, माछी दुआरे आकि कि सौंसे देह झँपने सुतल छैथ। दोसर कियो लगमे नइ रहैन। दुनू बेटा बीस-पचीस बर्ख पहिनहि बजारेमे जमीन कीनि, मकान बना अपन-अपन कारोबार केने छैन।

सीढ़ीसँ ओसारपर चढ़िते बुझि पड़ल जे भूदानी बाबाकेँ कछमछी नइ छटपटी छैन। शरीरक रोगसँ शरीरमे कछमछी अबै छै आ मनक रोगसँ छटपटी अबैए, सएह बुझि पड़ल। जहिना शिकारीक तीर लगल कोनो चिड़ै हौउ आकि भाला लगल कोनो जानवर, दर्दसँ जहिना छटपटाइत परान तियागैए तहिना बुझि पड़ल। तारतममे पड़ि गेलौं जे भोरे-भोर पत्नी कहने छेली जे भूदानी बाबाकेँ कछमछी आबि गेलैन। तइसँ बुझलौं जे भूदानी बाबा चलन-पियारा भऽ गेला, मुदा ऐठाम देखै छी जे गमौल प्रण-प्रतिज्ञा मनकेँ गरगोटिया दऽ रहलैन अछि तइसँ छटपटा रहला अछि। झाँपल देह तइसँ बुझिये ने पबी जे जागल छैथ कि सुतल। मत्था दिस कनी हिल-डोल होइन बाँकी सौंसे देह असथिर भेल पड़ल रहैन। संजोग बनल, तहीकाल सुधनी दादी आँगन दिससँ खों-खों करैत दरबज्जापर पहुँचली।

नजैर पड़िते बजली»“बौआ, तेहेन कफ भऽ गेल अछि जे भरिसक लाइये कऽ जाएत।”

तेहेन बात दादी बाजि गेली जे मने अकबका गेल। मनमे हुअए जे पत्नीक समाचार सुनि भूदानी बाबाकेँ जिज्ञासा करए एलौं आ दादी अपने बेथे बेथाएल बजै छैथ- ‘मरिये जाएब।’ ओना दादीक बात सुनि मनमे खौंझ उठल, खौंझ ई उठल जे दादी बुढ़ भेली जे मरैक उमेरो भेलैन, अपनो जनिते छैथ जे जहिना सभ मरैए तहिना हमहूँ मरब। कहाँसँ भूदानी बाबाक कष्ट-पीड़ाक बात कहितैथ, तँ कहै छैथ जे आब अही कफे संगे चलि जाएब! मुदा, की करितौं पाशा बदलैत बजलौं»

“दादी, बाबा सुतल छैथ कि जागल। एकटा विचार करब अछि?”

विचार सुनि दादी अपन बेथाकेँ टारैत बजली» “जगले छैथ।”

‘जागब’ सुनि भूदानियोँ बाबा मुँह परक चद्दैर उघारलैन। हमहूँ ससैर कऽ लगमे जा पलंगपर बैसलौं। भूदानी बाबाकेँ बकारे ने फुटैन जे किछु बजता। मुदा तैयो मुहेँ दिस तकैत रहैथ, हमहूँ चुपे रही। संजोग नीक भेल जे दादीए पलंगपर बैसैत बजली»“बौआ, चाहो पीऐबतियऽ से जहियासँ अपने चाह पीब छोड़ि देलैन तहियासँ अपनो छोड़ि देलौं, तँए चाहक ओरियाने छोड़ि देने छी।”

ओना मनमे ई भेल जे कहिऐन घरबैया दुआरे जँ बहरबैया मारल जाए, से केहेन भेल। मुदा लगले मनमे उठल- आब ऐ अवस्थामे कहनौं आ बिनु कहनौं दुनू बरबैर। आब तँ सहजे गाछीक बाट पकैड़ नेने छैथ, आब गाछी ओगरती आकि अपन घर-अँगनाक मान-मरजाद रखती। तँए दादीक विचारमे हुअए जे हुँहकारी भरैत कहिऐन जे दादी, हमहूँ चाहक ओते सिनेही कहाँ छी, पाबैनियेँ-तिहारे कहियो पीब लइ छी। मुदा से नइ कहि कहलयैन»

“दादी, एकबेर भिनसरमे आ एकबेर साँझकेँ चाह पीबै छी, तइमे

भिनसुरका पीबिये कऽ घरसँ निकलल छी, तँए चाह-ताह भने नहियेँ अछि सएह नीक।”

मनमे उठैत रहए जे भूदानी बाबासँ भूदानक किछु विचार करब, मुदा दादीक बात जेना अखन ओराएले ने छेलैन, तहिना लगले-सूढ़िये बजली»

“बौआ, अपने चाह छोड़ि देलैन एकर माने हमहूँ छोड़ि दी ई उचित नइ भेल, हँ एहेन छोट बच्चा- दूध-पीबा बच्चा-क संग माइक सम्बन्धमे कहल जा सकैए, मुदा पति-पत्नी तँ से नइ छी।”

बिच्चेमे बजा गेल»

“एकरा के काटत।”

हमरा बातमे दादीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा मुँहक सुरखी बदलए लगलैन। बजली»

“बौआ, अपने जे चाह छोड़ि देलौं से डॉक्टर मनाही कऽ देलैन तँए, कहलैन जे चीनी देल चाह नइ पीबू।”

कहलयैन»

“चाहक गाछक पातक रस लोक पीबैए आकि दूध-चीनी पीबैए, तइले चाहसँ सिनेह किए तोड़ि लेलौं?”

‘सिनेह’ सुनिते दादीक मन उमैड़ गेलैन। उमैड़ते जेना मातृत्व जगि गेलैन। बजली»

“बौआ, चाहसँ सिनेह तोड़ैक मन कहाँ भेल, असल भेल जे सभ दिन मीठ-मीठाइ खाइक चहैट तेहेन पकैड़ लेलक जे बिनु मीठे किछु नीके ने लगै छेलए, जे रोग बनि गेल आ डॉक्टर मनाही करि देलैन। ओही लागल चाहो छुटि गेल।”

ओना मनमे ईहो हुअए जे अनेरे दादीक दादागिरीमे वौआइ छी,

मुदा मनाहियोँ केना करितिऐन जे कनी बाबासँ गप करए दिअ। ओना दादीपर भूदानी बाबा तरेतर दाँत पीसैत रहथिन। ओ ऐ दुआरे जे जनु अपन मनक बात कहैले ओंढ़, ओलाढ़ि मारैत रहैन। सएह भेल, दादीक मुँहक बात छिनैत-चोहटैत बाबा बजला»

"कते अहाँ चाह-ताहकेँ औंटै छी!"

भूदानी बाबाक चोहाटसँ दादी चुप भेली। जइसँ वातावरणमे शान्ति पसरल। मनमे भेल जे जँ रामायणिक कोनो काण्डक प्रश्न बजा जाएत तँ बाबाक मनक बात तर पड़ि जेतैन, तँए, हुनकेसँ बजाएब नीक हएत। अकचकाइत बजलौं»

"बाबा?"

'बाबा' सुनिते बाबाकेँ भूदानी रूप सोझामे नाचि उठलैन। बजला»

"बौआ, मन औनाइ-ए जे अपन जिनगीक बात ओहन आत्मा लग पहुँचा दिऐ जे विचारवान हुअए, जे तोरासँ नीक केतए भेटत।"

बाबाक विचार सुनि मन पघील गेल। आँखि उठा आँखिपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे बाबाक मनमे ओहन विचार औना रहलैन अछि जे बाहर होइले चाहि रहल छैन। झोंक दैत बजलौं»

"बाबा?"

भूदानी बाबा अपन विषाद भरल जिनगीक मनसँ निकैल बजला»

"बौआ, भरि जिनगीक कथा तँ बड़ नमहर अछि, मुदा ओते बजैक ने समय अछि आ ने शरीरमे शक्ति, आ ने बजैक मोले। तखन एतबे सुनह जे भूदानी भाषण आ भूदानी काजमे एते दूरी रहल जे लूटक अड्डा बना हमरो सबहक, माने सर्वोदय कार्यकर्ताक जिनगी लूटि लेलक। खादी भण्डारक सुविधा, जमीनक मामला, लूइटिक बीच लूटिहारा बनि गेलौं। धनक इत्ता नइ रहल मुदा आइ जखन ओछाइनपर अन्तिम साँस गनि

रहल छी, तखन बुझि पड़ि रहल अछि जे सर्वोदयक नामपर जे कौलेज छोड़ि भूदानसँ जुड़ि सर्वोदयक प्रणक संग जिनगीक प्राण-प्रतिष्ठा केलौं, से..!"

दुनू आँखि नोरा गेलैन। मने-मन जेना बुकौर लागए लगलैन, मुँहक बोल जेना बिला गेलैन! कहलयैन»

"बाबा! एकरत्ती चूक भेने लोक पीछैड़ कऽ खसि हाड़-पाँजर तोड़ि लइए, मुदा... ।"

'मुदा' कहि चुप्पे रहि गेलौं। आगू कि कहितिऐन से पेटसँ निकलबे ने कएल।



शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016

गैत-वीध

पोती बिआहक छअ मासक पछाइत, बेरुका समय, जुआएल रौद, हवा खसल, दरबज्जाक ओसारक मोथीक ओछाइन बिछौल चौकीपर असगरे चिन्तू काका बैसल अपन वीर्तमानसँ भविस दिस चिन्त्यमे पड़ल छैथ। ने आगूक समटल-समतल कोनो बाट देखि रहला अछि आ ने पाछू घुसकब उचित बुझि रहल छैथ। पाछू उनैट जखन अपन जीवन-क्रिया दिस तकै छैथ तँ विचार समतले बुझि पड़ै छैन, मुदा एना जिनगी बीच धारमे डुमि जाएत, से अनुमान नइ छेलैन। तखन एना किए परिवारक गाड़ीक धुरिये टुटि गेल जे एकाएक जीवन मरणमे बदलैक रूप पकड़ने जा रहल अछि? नजैर आगू घुसैकते मन कहलकैन»

“यएह परिवार छी जे सालो भरि खाइ-पीबैक चिन्ता कहियो ने मनमे आबए देलक, आ आइ देखि रहल छी जे रातियो चुल्हि जरत कि नइ, सेहो अन्देशा अछि..!”

चिन्तू कक्काक लगमे दोसर कियो ने, जे कहबो करथिन आ रस्तो तकताह। असगरे बैसल चिन्तू काका चिन्तामे डुमल चिन्त्य करए चाहै छला मुदा चिन्ताक पन्ना भेटिये ने रहल छेलैन जे एना भेल किए। समाजमे बेटी बिआहक जे धार फोड़ि रहल अछि ओ पाँच लाखक संस्कार जरूर भऽ गेल अछि। ओना, मिथिलांचलमे मिथि-मालिनिक कमी नइ, तँए ने मथि-मथि कहै छैथ जे बेटीकेँ जेते नीक शिक्षा दिअबैमे, जेतेक नीक खर्च करब, तेते नीक ओरियान तँ बिआहो-संस्कार-ले करए

पड़त। डॉक्टर बरक मोल पनरह लाख मुदा डॉक्टर कन्याँक मोल केते? वएह ने- माइनस पनरह लाख? वाह रे साँझ पराती आ भोर वसंत गौनिहार बुधियार समाज..!

पोती बिआहक खर्च–पाँच लाख–पर नजैर पहुँचते पाँचो लाखक बेवस्थापर चिन्तू कक्काक नजैर अँटकलैन। दू-लाख रुपैआक ओरियान अपन असथिर सम्पैतोसँ आ खेतोक उपजासँ भेल मुदा तीन लाख तँ लोकेसँ कर्ज लिअ पड़त।एक तँ एते पाइक लेन-देन कर्ता गाममे नहि, दोसर जँ कियो परदेशी चोरनुकबा जगबो कएल तँ ओकरा पाँच रुपैआ महीना सुइद चाही! जे सुइद बाँसक कोंपर जकाँ एगो-दूगो बिआन नहि करैत, ओ तँ पानिक-केचली जकाँ सत-सतटा बिआन करैए! एक तँ ने नोकरी-चाकरीक आमदनी अछि आ ने वणिज-बेपारक, छेहा किसान भेलौं, तैठाम पाँच लाख खर्चक काज बाल-बोधक खेल नइ ने छी।

समाजमे खर्चक जे धार बेटी बिआहक फुटि गेल अछि, ओकरा थोड़े रोकि पएब। तखन तँ जीबैले ओइ धारमे बहए पड़त। आब कि ओ विचार आकि ओ काज थोड़े रहल जे सृष्टिक सृजन-ले पुरुख-नारीक सम्बन्ध स्थापित हुअए, जे एक चुटकी भुसना सेनुर आ कनगुरिया आँगुरक एक बून खून-सँ-खून मिला सिनेह स्थापित कएल जाएत। आब तँ समाजमे ओ प्रतिष्ठित बेकती भेला जे बेटा बिआहमे सभसँ ऊपर चढ़ि नगद-नारायण पौलैन आ बेटी बिआहमे नगद-नारायण गनलैन। मुदा ऐठाम तँ विचारणीय बात ईहो ऐछे जे एहेन प्रतिष्ठाकेँ समाज अंगीकार करैथ वा नइ करैथ। समाजो तँ समाज छी। ओना समाजोक भीतर तेते विचारक समाज पनैप गेल अछि, जेकरा समरस बना चलब, खेल नहियेँ छी। खेलो केना रहत, जहिना रंग-रंगक समाज, गामक-समाजक पेटमे समाएल अछि तहिना समाजक बीच जातिक सेहो अछिए। जातियो तँ जाति छी, केकरा आगू कहबै आ केकरा पाछू, बेराएब कठिन अछि। धारीनुमा एहेन धार जकाँ बनल अछि जे पकड़ब कठिन अछिए। एक तँ

ओहिना सएक-सए जाति, तइमे एक-एक जातिक बीच साए तँ नइ मुदा गण्डा, गाही, दर्जन, सोरे आ कौरीक हिसाबसँ सबहक उपजाति अछि। जेकरा बीच आगू-पाछूक सीढ़ी बनल छइ। जइक चलैत ने एक-दोसराक अन-पानि खाइ-पीबैए आ ने बेटा-बेटीक बिआह-दान एक संग करैए। ओना बेटी बिआह सभ जातिक बीच अखनो एके रंग सस्त कि महग सेहो नहियेँ अछि। अखनो खास-खास जातिक लेन-देनमे किछु-ने-किछु अन्तर देखमे अबिते अछि, तैपर जातियोक बीच नव-नव उठाइन भेने, आरो दूरी पैदा कइये रहल अछि।

चिन्तू कक्काक नजैर अपन पोतीक बिआहक खर्चक ओरियानपर पुन: पहुँचलैन। तीन लाख रुपैआमे तीन बीघा खेत जे जोतसीम अछि, भरना लगा लेलौं। जइकेँ चलैत एको कनमा ने धान भेल आ ने ऐगला आशा देखि रहल छी। धारक पतराएल धारा जकाँ मध्यम् किसान आ छोट किसानक जिनगी चलि रहल अछि, तेकरो जेना आगूसँ घेर तेना रोकि रहल अछि, जइसँ दिन पहाड़ जकाँ बनि रहल अछि..!

एकाएक चिन्तू कक्काक खसैत मन पनपलैन। पनैपते चिन्तू काका अपन सोचै-विचारैक समीक्षा करए लगला। समीक्षा शुरू करिते मन बुदबुदेलैन»

“बेटा-बेटीक बिआह तँ जेहने मनुक्खक वंश बेवस्था-ले तेहने तँ समाजो-ले छीहे। आब तँ ओ जुग नै रहल जे पशु-वत रूपमे चलत। आब तँ समाज-बेवस्था एते आगू बढ़ि छिड़िया रहल अछि जे समृद्ध समाजमे बसब असम्भव तँ नहि मुदा कठिन तँ भइये गेल अछि। बेकता-बेकती आगू बढ़ैक होर पकड़ने जा रहल अछि जइसँ संयुक्त परिवार तँ छिन्न-भिन्न भइये रहल अछि जे समाजोक रूप-रंगकेँ बिगाड़ि रहल अछि। समाज उठने परिवार आ परिवार उठने, बेकती उठैए। मुदा एहेन धारणा धरियाइत-धरियाइत धैड़-किनछैर पकैड़ रहल अछि। बीच धारमे यएह विचार तरंगित भऽ रहल अछि, जे अढ़ाइ-तीन सालक जखन बेटा-बेटी

हएत तखने माल-जाल आकि कुत्ता-बिलाइ जकाँ परिवारसँ अलग शिक्षण संस्थानमे दाखिला करा, छोड़ि दियौ, मासे-मास पाइ-पठबैत रहू आ बेटा-बेटी आगू बढ़ैत रहत। एहेने सम्बन्ध बनने ने मातो-पिताक अपन पसरल जिनगी सम्हारमे नइ औत, तखन ऐगला पीढ़ी- बेटा-बेटी-क खगता महसूस हएत। तैठाम जँ मासे-मास पाइ पठा वा अपने पेन्शन भरोसे छोड़ि देब, आकि पूर्वजक देल खेत-पथार, जइसँ जीवन-जापन करैत चलि आबि रहल छी वा बेटाक भिनौजीसँ तेसर-चारम-पाँचम भागमे जिनगी टुटि ऐने रहह, टुटैत पारिवारिक सम्बन्धेटा पिता-पुत्रक वा पति-पत्नीक नइ ने छी, मनुक्खक जिनगी छी किने, जइमे मनुक्खताक वृक्ष अँकुरैत बढ़ैत, चतरैत, फुलाइत, फड़ैत दुनियाँक बीचमे ठाढ़ भऽ दुनियोँ देखै आ ओहो देखए...।”

क्लेशसँ कलशैत मनमे मनुक्खता अबिते चिन्तू कक्काक विचार आगू ससरलैन। आगू ससैरते विचार उठलैन- जखन परिवारक बीच समस्या उठि गेल अछि तखन परिवारमे जे कियो छैथ, सबहक सोझ एने अपन माथक बोझ तँ कमबे करत। अनेरे परिवारक समस्याकेँ जबूरगर बना मनकेँ बोझिल बनौने छी। बेटो-पुतोहु बुझनुक भइये गेल छैथ तँए किए ने सबहक बीच सभ किछु रहह। पत्नियोँ सहजे एक उमेरिये छैथ। जिनगीक कोनो ठेकान अछि, कखनो माता-पिता तँ कखनो पिता-माता सेहो होइते छइ। अखने आँखि मूनि लेब तँ हमरा जगह तँ वएह ने पिता-माता कहौती...। पत्नी लग आबि चिन्तू कक्काक मन अँटैक गेलैन। अँटैकते अपन पत्नीक चेहरा झलकलैन। गप-सर्रक्का जेते लिअ, सोहर-समदौन जेते सुनी, हाट-बजार जेते घुमि ली, सिनुर-टिकुलीक ओरियान जेतेक कऽ ली, सिनेमा-सरकस जेतेक घुमि-फिर कऽ देखि ली, मुदा परिवारक आमद-खर्चक रस्ता छोड़ि कऽ..! चिन्तू कक्काक मनमे खौंझ उठलैन, खौंझ उठिते विचार जगलैन जे सीढ़ी-दर-सीढ़ीमे पत्नीक गिनती जोड़मे होइए, अखन अपने जब छीहे तखन घटाएबे नीक। कोनो विचार

करैमे जेते जड़ि सक्कत रहत, ओते ओ आगू बढ़ैत ने शक्तिशाली बनैत जाएत?

चिन्तू कक्काक मनमे फेर भेलैन- पोतीक सेवा जेते पत्नी केने छेली, तेते अपने तँ नहियेँ केने छेलौं, जेकरे बिआहक समस्याक समाधान करैक अछि, तँए हुनकोसँ विचारब जरूरी अछिए।

एकाएक जेना चिन्तू कक्काक चिन्ता चुनिया गेलैन। चुनियाइते मनमे उठलैन- आइक सम समयमे, जेते अपन पुश्तैनी लगा अपनो अरजल सम्पैत अछि, ओकर मूल्य केतेको लाख अछि। हरा-हरी, घराड़ीसँ चौक तक जँ पचासो हजार रुपैये कट्ठा जोड़ै छी तैयो दस लाख एके बीघाक भेल। तखन एते चिन्तामे किए छी? मुदा जहिना पूरबा हवामे छोट-छोट मेघक टुकड़ी उड़ैत सूर्जकेँ झाँपि दइए, तहिना चिन्तूओ कक्काक विचार झँपा गेलैन। झँपाइते रंग मलिन भऽ गेलैन। मुदा ओ मलिनता लगले छँटि गेलैन।

काजमे चूक केतए भेल? ऐपर चिन्तू कक्काक मन पहुँच गेलैन। ओ छी जमीनक बिकरी-दाम आ भरना-दाम। तीन बीघा जमीन पाँच हजार रुपैये कट्ठा भरना लगा अपन सभ उपजाउ खेत फँसा देलौं, जइसँ परिवारक आमदनियेँ बाधित भऽ गेल, जइसँ हाथक काज सेहो छीना गेल। माने जिनका हाथे खेत भरना लगौलैन ओ अपने खेती करता। दिन-रातिक चिन्ता चिन्तू कक्काक मनकेँ तेना घेर लेलकैन जे टक-टक तकैत आँखि ज्योति विहीन भऽ आगू-पाछू किछु ने देखैत, दूरक कोन बात जे लगोक आवाजकेँ कान सुनि नहि पबैत। जेना चिन्तासँ चिन्तू काका चेतन-शून्य भेल जा रहल छला। तखने काकी दरबज्जापर एली। पतिक टकटकी देखि चिन्तित भेली। एहेन रूप किए बनि गेल छैन? अपन मनक समस्याक समाधान लछमी काकी ऐ ताकमे ताकए लगली जे जखन लगेमे छिऐन तखन तँ मुँह खोलि किछु बजबे करता, जखने किछु बजता तखने ने चिन्ता घटए लगतैन।

मुदा चिन्तू काका गुम-सुम भेल अपन परिवारक चिन्तामे डुमल डुमकी मारि रहल छला। दुनू बेकती अपन-अपन ताकमे ताकि रहल छला तँए चुपा-चुपी पसरल जा रहल छेलैन।

एकाएक लछमी काकीक मनमे उठलैन जे भरिसक चाहक ने तँ तिसना जगल छैन? जइसँ देह-तेह ने तँ ज्वरित भऽ गेलैन अछि?

बिना किछु बजने काकी दरबज्जापर सँ ऑंगन आबि पुतोहुकेँ कहली»

“कनियाँ, बुड़हाकेँ चाहक बेर भऽ गेलैन।”

ओना सुचितो बेरुका चाह बना नेनी छेली। चाहक गिलास सासुक हाथमे देली। कुशेसर ओसारेक खुट्टामे ओंगैठ चाहक आशामे बैसल। हाथमे चाहक गिलास नेने लछमी दरबज्जा दिस बढ़ैत बेटाकेँ कहलखिन»

“बौआ, चाह पीब दरबज्जेपर अबिहह।”

चिन्तू कक्काक आगूमे चाहक गिलास रखैत लछमी काकी बजली»

“अँगनासँ अबै छी ताबे अहाँ चाह पीबू।”

खग जानए खगक भाषा, चिन्तू काका बुझि गेला जे चाह पीबए जा रहल छैथ। बजला»

“बेसी देरी नइ करब।एकटा विचार करैक अछि।”

पति-मुँहक विचार सुनि लछमी-काकीक मन क्लेशसँ कलैश गेलैन। कलशबो केना ने करितैन। पत्नीक अनेक रूपमे विचारी-रूप जे हाथ लगलैन। हाथ लगिते देहमे पानि चढ़ि गेलैन। उनटे डेगे दरबज्जासँ आँगन पहुँचली, चाहक गिलास भफाइते रहइ।

हाँइ-हाँइ गिलास उठा दुखियाएल रोगी जहिना दवाइक खोराक बढ़ा कऽ खाए चाहैए, तहिना लछमी काकी चाहक खोराक सेहो बढ़ा लेलैन। होइतो अहिना छै जे काजक ताकक पाछू लोकक खेनाइयो-

पीनाइ अबेवस्थित भइये जाइ छइ।

ओना सुचिता देवालक अढ़ेमे ठाढ़ भेली, किएक तँ सभ बात सुनै-बुझैक जिज्ञासा मनमे रहबे करैन। तीनू गोरे–माने चिन्तू काका, लछमी काकी आ कुशेसर–एक-दोसराक कोणा-कोणी चौकीपर बैसल रहैथ। जहिना कोनो ऑफिसमे एक-दोसराक हाथे काजक निष्पादन-ले भार बढ़ौल जाइए तहिना चिन्तू काका अपन भार बढ़बैत कुशेसरकेँ पुछलखिन»

“बौआ, परिवारक गाड़ी एहेन लसकामे लसैक रहलह अछि जे जँ समय रहैत अखैन नइ चेतबह तँ आगूक दुर्दिनमे दुरकालक सामना करए पड़तह।”

ओना पिताक बात सुनि कुशेसर चुपे रहल मुदा लछमी काकी टपैक पड़ली»

“से की?”

पत्नीक प्रश्न सुनि चिन्तू कक्काक मनमे विराग नइ राग जगलैन। राग जगिते विचार भेलैन जे किए ने सभ बात सबहक बीचमे रखि पारिवारिक जिनगीक ढाँचाक रूप-रेखा खींच दिऐ। ओना कुशेसर चुपे रहल मुदा मने-मन पिताक आक्रान्तक अंकन तँ करिते छल।

समझदार चिन्तू काका, मने-मन विचारलैन जे अखन परिवारक बीच सुदिन आ दुर्दिनक विचार करए बैसल छी। तँए कोनो समस्याक वर्तमाने रूप-टा नइ, ओ रूप बनैक जे पूर्व-पीठिका अछि, माने ओइ समस्याकेँ उठि कऽ ठाढ़ होइक जे कारण अछि, जँ ओकरा नीक जकाँ बुझब आ परिजनकेँ बुझा दिऐ तँ ओ आगू बढ़ैले बेसी कारगर हएत। पाछू दिस नजैर खिड़ा तकलासँ बुझि पड़लैन- परिवारमे जे संकट उपस्थित भऽ गेल अछि, ओकर जड़ि कारण भेल- पोतीक बिआह-काजकेँ ओकातिसँ नमहर बनाएब। ओना ओकातिसँ नमहर काजक दू

कारण अछि- एकटा अछि परिस्थितिवश आ दोसर अछि बलउमकी। अपन काज तँ बलउमकीमे नइ भेल, ओ तँ भेल समाजक बीच बहैत बिआहक धारमे बहब। ओना धारमे बहैक सेहो दू कारण अछि, एक अछि भँसि कऽ डूमब आ दोसर अछि हेल कऽ पार हएब...।

..ऐठाम आबि चिन्तू कक्काक मन ठमैक गेलैन।

ओना लछमियो काकी, पतिक विचार सुनैले आ कुशेसरो, पिताक बात सुनैले कान ठाढ़ केने, मुदा बजनिहारोकेँ तँ अपन विचारक पतियानी लगबए पड़ै छै, तेही पतिअबैमे चिन्तू कक्काक मुँह बन्न रहैन। ओना टटका पीलहा चाहक लहकीसँ सबहक मन लहलहाइते रहैन मुदा किछु छी तँ परिवारक विचार छी, ठट्ठा नइ ने छी। आकि बैकवार्ड-फोरवार्ड ऑफिसक स्टाफ नइ ने छी, परिवार छी किने। कुशेसरो नजैर उठा पिताक आँखिपर देलक। आँखिपर नजैर फेकते कुशेसरकेँ बुझि पड़ल जे घनघोर घटाक बीच पिताजीक मन औना रहल छैन। औनेबो केना ने करितैन। जीन-मरूक बीच पड़ल जिनगीक नाह छैन।

चिन्तू काका कुशेसरकेँ कहलखिन»

“बौआ, परिवारक जे स्थिति बनि गेलह अछि, ओ संकट ग्रस्त भऽ गेल छह, एकर निमरजना तँ अपने सभ ने करबह?”

जहिना कुशेसरक मनमे पहिनहिसँ जवाब तैयार रहै तहिना बाजल»

“हँ, से तँ करए पड़त।”

जेना कोनो फलक गाछ रोपैसँ पहिने फल भेट गेने खुशी होइ छै, तहिना चिन्तू काकाकेँ भेलैन। अपन परिवारक जवाबदेहीक एहसास करैत बजला» “बौआ, बेटी बिआहक मोकर जे लोकक मनमे फूटल जा रहल अछि, तेकरा अखन छोड़ि दहक, अखन अपन जे समस्या छह

तेतबे विचार करह।”

बिच्चेमे लछमी काकी टपकली»

“काजे कोन अछि जे से करए अखने जाएब आ तेकर औगुताइ रहत। जखन विचार करए बैसलौं तखन सभ विचार ने सेरिया कऽ कऽ लेब।”

पत्नीक विचार चिन्तू काकाकेँ अदहा नीक लगलैन आ अदहा अनटोह लगलैन। नीक ई लगलैन जे काजे कोन अछि, भाय! काजे ने जिनगी छी आ अकाजे ने मृत्यु...।

मुदा आगूक जे बात रहैन, माने ‘सभ विचार’ से अनटोह लगलैन। रिझैत-खिजैत चिन्तू काका बजला»

“एहेन जे लाल-बुझक्कर बनब तखन तँ दुनियेँ आछन भऽ जाएत..!”

आगूक बात चिन्तू कक्काक पेटेमे रहैन कि बीच्चेमे लछमी काकी बजली»

“से की?”

जहिना लछमी काकीक मुहसँ जिज्ञासु-वाण छुटलैन, तहिना चिन्तूओ काका समधाइन कऽ जवाब-वाण छोड़ला»

“घर-अँगनामे जखन कोसी धारक बाढ़ि चलि औत, तखन पहिने बँचै-बँचबैक ओरियान करब आकि ई विचारए लगब जे कोसी नदीक छहरे-नहर इंजीनियर कमजोर बनौलक!”

चिन्तू कक्काक विचार लछमी काकीक मनमे चुभलैन। चुभलैन ई जे कोनो समस्या, जैठामक रहए, ओकरा नीक जकाँ बुझैक कोशिश करी, जेते नीक जकाँ बुझैक परियास करब तेते ओकर तह-तहक बात बुझबै। ओना अढ़मे पुतोहु-सुचिता सेहो ठाढ़ छेली। हुनका मनमे कि

चुभलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा खिल-खिला-खिल-खिला हँसली से सभ सुनलैन। एहनो भऽ सकैए जे मनकेँ खींच काज लग आ काजक समस्या लग अनलासँ, किछु नव रोशनी सेहो भेटै छै, जइ रोशनाइसँ लोक अपन बेथा-कथा सेहो लिखि सकैए...।

सुचिताक हँसबसँ चिन्तू कक्काक चिन्ता जेना कमलैन, कमबो केना ने करितैन, हँसि कऽ समस्याक समाधान करैत हँसैत चली, यएह ने भेल जिनगी। मुदा लछमी काकीकेँ पुतोहुक हँसब नीक नइ लगलैन। भाय, कियो अपनापर हँसि दिअए, ई केकरा नीक लगतै जे लछमी काकीकेँ नीक लगितैन?

हँ! जँ मन-बुधि आ हाथ-पएरसँ ओहन काज करी जे खुशीसँ हँसी पैदा करए, ओ ने नीक भेल। दाँत पीसैत लछमी काकी रहि गेली मुदा बजली किछु ने।

ओना माइयो आ पत्नियोँक बीच कुशेसर, तँए थोड़े धर्म-संकटमे पड़िये गेल। धर्म-संकट ई जे माइक विचारकेँ खण्डित होइत देखि पुतोहु हँसली, सासुपर थोड़े हँसली? विचारक एक टुकड़ीपर हँसली, सेहो अधलासँ नीकक बाटमे हँसली।

ओना अही तारतममे चुपा-चुपी सेहो पसैर गेल। चुपा-चुपी देखि चिन्तू काका पाशा बदलैत बजला» “बौआ, बिआहमे जेना सभ उपजाउ खेत भरना लगा लेलौं..?”

कुशेसरोकेँ जेना सह भेटल। बाजल» “बाबू, ओना मुँह खोलि कऽ तँ नइ, मुदा जी दाबि कऽ तँ कहने रही ने जे..?”

खेतक भरना आ बिकरीक बात खुलि कऽ नइ उठल, मुदा लाल बुझक्कैर जकाँ लछमी काकी बुझि गेली। बजली» “बाप-माइक सम्पैतमे जखन बेटियोक हिस्सा छै, पचास हजार रुपैये कट्ठा जमीन अछि, छबे कट्ठा बेचने सभ भार हटि गेल रहैत, बाँकी जे खेत अछि ओकर उपजा तँ

हेबे करैत। किए एहेन स्थिति होइतए।"

ओना चिन्तू काका लछमी काकीक विचारकेँ महसूस केलैन, मुदा अपन जे विचार- 'भरना लगाएब' छेलैन, सेहो सोलहन्नी मनसँ हटल नइ छेलैन, जे बात कुशेसर बुझि गेल।

ओना कुशेसर पहिनेसँ बुझैत जे भरना-मूल्य खेतक उपजापर निर्भर करै छै, खेती पछुएने- माने किसानक दशा पछुएने- खेतक उपजो पछुआएल, तैपर रौदी-दही सेहो अनिवार्जे जकाँ भऽ गेल अछि, जइसँ भरनाक स्थिति बिगड़ल छइ। तँए मूल्य, माने भरना-दर, कम अछि। बैंकक सुइदमे रौदी-दाही नइ छै, तैसंग बिसवासू सेहो अछि...।

..आगूक जिनगीक आस लगा कुशेसर बाजल» "उपाय?"

बेटाक मुहसँ 'उपाय' सुनिते चिन्तू कक्काक चिन्त-मन चिनमय भऽ गेलैन, चिनमय होइते बकार होइत मुहसँ फुटलैन»

"बौआ, गनगुआरिक एकटा टाँग टुटने गनगुआरि नांगर थोड़े हएत। पाँच बीघा सम्पैतमे जे पान-छह कट्ठा चलिये जाएत तइसँ केते जिनगी प्रभावित हएत।"

सह दैत कुशेसर बाजल»

"जँ जिनगी प्रभावितो हएत तेकरो तँ लाखो उपाय अछिए। जखन हाथ-पएरक संग धरतीपर छी तखन करै-चलैसँ केकरो कियो रोकि थोड़े देत?"



शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016

दियरबा-भैंसुर

विलासपुर एकटा मझोलका गाम। ओना इलाको-इलाकाक गामक बासमे अन्तर होइ छै, नम्हरो गाममे आबादी कम रहै छै आ छोटोमे बेसी रहै छइ। विलासपुर चारू भागक गामक बीचमे सेहो पड़िते अछि। एक तँ मिथिलांचल ओहिना सघन बासबला गामक समूह छी, तहूमे विलासपुर ओहन इलाकाक गाम छी, जे आरो बेसी सघन अछि। मुदा जे अछि से अछि, अपन जे खतियानी गामक सीमा छै से तँ विलासपुर नाओंसँ छेबे करइ। अही गाममे, माने विलासपुरमे छलानन्द आ सुधानन्द दूटा प्रशासनिक अफसर सेहो छैथ। ओना सालक शुरूहेसँ छलानन्द सेवा निवृत्ति भऽ गामेमे रहि रहला अछि। सुधानन्द दू साल पहिने सेवा निवृत्ति भेला, मुदा ओहो गामेमे रहै छैथ।

छलानन्द आ सुधानन्द पनरहे दिनक जेठ-छोट, तँए एकमसुए दुनू गोरे, मुदा एक-पनरहियाक अन्तर तँ छैन्हे। एकटाक जन्म अन्हरिया-एकादशी आ दोसरक इजोरिया-एकादशीक भेल छैन। एके दिन तँ नहि मुदा एके साल दुनू गोरेक पिता दुनू गोरेकेँ स्कूलमे नाओं सेहो लिखा देलकैन। एके किलासक संगी दुनू गोरे, मुदा एक गाममे रहितो, दू जातिक रहितो पढ़ैमे दुनू एकरंगाहे, तेकर कारण एके शिक्षकक पढ़ौल विद्यार्थी सेहो अछिए।

अदहा फागुन बीत गेल मुदा आन साल जकाँ ने ऐबेर शीतलहरी भेल आ ने मघाइर-बरखे, जइसँ आन सालक अपेक्षा गरमियोँ अगते आबए लगल आ मौसमोक रूप-रंग अगतेसँ अपन रंग पकड़ए लगल।

ओना, छलानन्द आ सुधानन्दक जन्म पनरहे दिनक अन्तरमे भेल छेलैन जइसँ छलान्द पनरह दिन जेठ आ सुधानन्द पनरह दिन छोट भेला। ऐठाम तँ पनरह दिनक अन्तरक जेठाइ-छोटाइ भेल। जौआँ बच्चाक जन्मक अन्तर तँ से नइ होइए मुदा ओहूक बीच तँ जेठाइ-छोटाइक अन्तर भइये जाइए...।

साढ़े चारि बजेक बेरुका समय। दुनू परानी–छलानन्द आ विलासिनी– ओसारक कुरसीपर बैस दोहरौनी चाह पीबैत रहैथ। एक तँ फगुनहैठ हवा, दोसर फगुआक आगमनक खुमारि सभपर चढ़िते रहइ। विलासनियोकेँ से बढ़िये गेल रहैन। पति दिस मुँह उठा बजली» "ऐबेर सुधानन्दक संग फगुआ खेलब।"

साठि बर्खक अवस्थामे सुधानन्दो सेवा मुक्त भेल छला आ छलानन्द सेहो। दू साल पहिने सुधानन्द सेवा मुक्त भेला जे बात छलानन्दोकेँ बुझले छैन। छलानन्दक मनमे भेलैन जे एना किए पत्नी बजली जे सुधानन्दक संग फगुआ खेलब? दियर-भौजाइक बीच लोक फगुआ खेलाइए, भैंसुर-भावोक बीच केना खेलती?

पत्नीकेँ मनाही करैत छलानन्द बजला» "एहेन विचार किए मनमे उठल जे भैंसुरक संग फगुआ खेलब? गामक लोक जे बुझत ते बाट चलए देत?"

पतिक विचार विलासिनीकेँ नीक नइ लगलैन। एक संग केता प्रश्न मनमे उठि गेलैन। पहिल उठलैन जे सुधानन्द एक रेंकक निच्चाँ रहि सेवा निवृत्ति भेला आ अपने एक रेंक ऊपर चढ़ि सेवा निवृत्ति भेला, तखन तँ हम ओहिना ऊपर भेलौं माने जेठ भेलौं, जइसँ भैंसुर-भावोक सम्बन्ध नहि दियर-भौजाइक सम्बन्ध भेल। दोसर ईहो विलासिनीकेँ बुझल रहैन जे सुधानन्द पनरह दिनक छोट हमरा पतिसँ छैथ, जे झँपाएल अछि, मुदा अपने तँ जनै छी। असल इच्छा विलासिनीक मनमे ई रहैन जे समाज

सुधानन्दकेँ निष्ठित बनौनहि छैथ। जहिना सबहक मनमे निष्ठितक लिलसा रहै छै तहिना विलासिनियोँक मनमे रहैन। जेकरा ओ सम्बन्धक रूपमे बनबए चाहै छेली। मुदा मनमे ईहो तँ नचिते रहैन जे ने एक आँगुरसँ चुटकी बजै छै आ ने एक हाथसँ थोपड़ी, तहिना असगरमे दोस्तियो केकरासँ हएत। अपन जँ इच्छे अछि आ सुधानन्दक इच्छा नइ हेतैन, तखन केना हएत। तँए पतिकेँ पुछने छेली जे सुधानन्दक संग फगुआ खेलब...।

ओना सुधानन्द ऐ रहसकेँ बुझै छैथ जे दुनू गोरेक बीच पनरह दिनक जेठाइ-छोटाइक अन्तर अछि, भऽ सकैए जे छलानन्दे जेठ होथि, मुदा जन्म तिथिक चुगली तँ जन्म-कुण्डली करैए, तइसँ छलानन्द छोट साबित भइये रहल छैथ। ओना सुधानन्दक अपन मन तँ गवाही दइते छैन जे एके मास स्कूलमे दुनू गोरेकेँ पिताजी नाओं लिखौलैन, एके किलाससँ पढ़ब शुरूहो केलौं आ साले-साले संगे-संगे आगूओ किलासमे पढ़लौं। तेतबे नइ, पढ़ाइक पछाइत दुनू गोरे एके साल नोकरियो करब शुरू केलौं। मुदा..? मुदा ई जे सभ किछु एक रहितो दू साल बेसी छलानन्द नोकरी केलैन आ एकटा परमोशन भेने ऊपरो उठला।

शिक्षामे उम्र सीमा ऐछे जइसँ नोकरी प्रभावित होइए। छलानन्द आ सुधानन्दक सभ किछु एक रहितो, की छलानन्द नइ बुझि पेब रहला अछि जे केतए गड़बड़ अछि, आकि सुधानन्दे नहि बुझि पेब रहला अछि? ओना सुधानन्द उम्रक गड़बड़ी पछाइत बुझलैन। जबकी छलानन्द अगतिये बुझै छला। ओना बाल-बोध रहने ने छलानन्द बच्चामे बुझलैन आ ने सुधानन्द। तँए ईहो नहियेँ कहल जा सकैए जे आनो नइ बुझै छला, बुझै छेलखिन छलानन्दक पिता। तँए ने अपन जे जन्म टिप्पणि छैन तइसँ दू साल घटा कऽ छलानन्दक नाओं स्कूलमे लिखौलखिन।

ओना एहेन विचार जे छलानन्दक पिताक मनमे एलैन ओहो अनुचित नहियेँ एलैन, किएक तँ माता-पिताक धर्म-कर्मक सूचीमे बाल-

बच्चाकेँ पढ़ाएबो तँ अछिए। तइ काज-ले जँ हम समयसँ पहिने तैयार भऽ जाइ तँ ऐमे दोख की भेल? तँए बाल-बच्चाक शिक्षा ग्रहणक समय जँ पाँच बर्ख निर्धारित करै छी आ तैठाम जँ हम तीनियेँ बर्खमे तैयार भऽ जाइ छी, तँ दोख की भेल?

एक तँ ओहुना जन्म-टिप्पणि लिखैक प्रथा समाजक किछु जातिक किछु परिवारक बीच समटा गेल अछि। तेकर अनेको कारण अछि, मुदा प्रमुख कारण ई अछि जे अधिकांश परिवारक जीवन-स्तर ओहन रहल, जेकरा ने जाड़सँ बँचैक समुचित उपाय छेलै आ ने रहैक नीक घरमे नीक वस्त्र छेलै आ नहियेँ उचित भोजन, एहेन स्थितिमे कागज-पत्रकेँ बँचा राखब असम्भव नहि तँ कठित तँ अछिए। जँ से नइ छल तँ की गोटि-पँगरा रचना छोड़ि सभ डुमि केना गेल? की रचनाकारे आकि सृजनकारे जुग-जुगक अन्तरालपर जन्म लेलैन आ ओ अपन पैरूख देखा कऽ गेला?

एहेन विचारक पाछू ईहो तँ कहले जा सकैए जे तखन सभ जुगमे एते लड़ाइ-झगड़ा किए भेल? लोकक सोभावमे झगड़ालुपन सेहो तँ ऐछे, मुदा ईहो तँ कहले जा सकैए जे शान्ति-प्रिय मनुक्ख एना अशान्त भऽ किए जीबए चाहैए?

सभ दिन धरती एकसँ एक रचनाकारो-सिरजनकारो पैदा करैत रहल अछि आ आगूओ करैत रहत। तखन एकरो नइ नकारल जा सकैए जे छोट-छीन धारकेँ जहिना बड़की धार अपना पेटमे समेट लइए तहिना भेल हएत। जइसँ एहनो तँ भेले हएत जे दसटा खलीफाक बल पेब जहिना एकटा महा-खलीफा भेल हेता तहिना दसटा रचना समेट कियो रचनाकार वा सिरजन समेट सिरजनकारो भेल हेता।

अपन मिथिला आइयेसँ नइ पहिनहिसँ सभ दिन उर्वर भूमि रहल अछि। उत्तरसँ सैकड़ो पहाड़ी धार जइमे अधिकांश बारहो मास पानिक भण्डार भरैत रहल अछि, तैसंग बर्खाक जोग सेहो अछिए। सालक

तिहाइ-चौथाइक मासमे बर्खा होइते अछि। तहिना धरतीक माटि सेहो अछिए। मुलायम उपजाउ। तैसंग मौसमक चक्र सेहो एहेन अछि जे सालक तीन रूप तँ अछिए। अगहनसँ फागुन जाड़, चैतसँ अखाढ़ रौद-गरमी आ सौनसँ कातिक बरसात। तीनू मौसमक अपन-अपन गुण-धर्म छै जइसँ सृजन-संहारक शक्ति सेहो छइहे। खाएर जे छै, मुदा एते तँ सभ देखिते छिऐ जे बारहो महिना अपन किछु-ने-किछु रंग-रूप लऽ कऽ अबिते अछि। तैसंग दुनियाँक सभसँ सुरक्षित, माने धरतीक जे उपद्रवी तत्व अछि, तइसँ जेना ज्वालामुखी, जे भुमकमक कारण बनैए, से छीहे। जइसँ गाछ-बिरीछसँ लऽ कऽ चिड़ै-चुनमुनी, जंगलीसँ पालतू धरि जानवर, रंग-रंगक मौसमानुकूल फल-फूल, तीमन-तरकारी, उपजैमे दुनियाँमे सभसँ आगू अछि। जे मिथिलांचल छोड़ि दोसर नइ अछि। तँए अदौसँ मिथिला ऋृषि-मुनी-साधकक भूमि रहल अछि आ आगुओ रहत।

दोसर पक्ष ईहो अछि जे मौसमोक चढ़ाव-उतार होइ छइ। गोटे साल कम तँ गोटे साल मध्यम आ गोटे साल बेसी जे अपन उग्र रूप धारण कऽ लइए तइसँ जिनगी जीबे दूभर भेल जाइए।

..मुदा ईहो तँ बिसवास ऐछे जे जहियासँ ऐ धरतीपर मनुक्ख भेल तहियासँ जे मनुक्खक वंश आगू बढ़ल ओ आइ धरि जीवित अछि। जँ से नइ तखन अपने केना छी? ओना वर्तमानक उम्रक पाछू अनेको कारण आरो अछि मुदा ओ अखन नइ, संगे उम्रक गड़बड़ी केतए-केतए केना-किए होइए अखन सेहो नहि।

नोकरीक जिनगीसँ साल भरि पहिने जहिना छलानन्दक बिआह भेलैन तहिना सुधानन्दोकेँ भेलैन। नोकरी शुरू करिते दुनू गोरे अपन-अपन परिवारकेँ–परिवारक माने माता-पिता-दादा-दादी नइ, खाली अपन पत्नी, पछाइत ने ओइ परिवारमे बच्चाक जन्म हएत–लऽ कऽ संगे रहए लगला। सरकारी मकानक संगे स्तरक हिसाबसँ सभ किछु उपलब्ध भेलैन। ..छलानन्दक जेहने परिवार अपन छेलैन तेहने परिवारमे बिआहो

भेल छेलैन। जइसँ अपना जकाँ तँ नहि मुदा पढ़ल-लिखल पत्नी छेलखिने एम.ए.पास। मुदा सुधानन्दकेँ से नइ भेलैन, बिनु पढ़ल-लिखल पछुआएल जातिक परिवारमे जन्म भेने, केते तक्का-हेरीक पछाइत एकटा लोअर-प्राइमरी स्कूलक शिक्षकक बेटी, जिनका नाम-गाम लिखबसँ चिट्ठी-पत्री पढ़बक संग हुट्ठा तक खांत लिखऽ अबै छेलैन, तिनका संग बिआह भेलैन।

मुदा संगीक पत्नी माने छलानन्दक पत्नीकेँ देखि सुधानन्द झुझुएला नहि। मनुक्ख तँ माटिक शकल-रूपमे जन्म लइए मुदा ओकरा तँ परिवारे-जन आकि माते-पिता गढ़ि-मढ़ि मनुक्ख बनबै छैथ।

ओना छलानन्दो आ सुधानन्दोकेँ एके दिन नोकरीक चिट्ठी भेटलैन मुदा तीन दिनक आगू-पाछू दुनू गोरे ज्वाइन कऽ सरकारी अफसर बनि गेला। अखन धरिक संग-साथ दुनू गोरेक हटए लगलैन। तेकर कारण भेल दुनू गोरे राज्यक दू भागक जिलामे पदस्थापित भेला।

आर्थिको आ शैक्षणिको स्तरपर आगू बढ़ल परिवारक छलानन्द अखन धरिक माने नोकरीसँ पूर्व जे जिनगी बितौने छला ओ विद्यार्थीक रूपमे, तँए कनी-मनी खाइ-पीबैक दोष आबि गेल छेलैन, मुदा दोखी बनै जोकर नइ आएल छेलैन।

ओना अगुआएल परिवारक किछु अवगुण विलासनियोंमे शुरूहेसँ रहलैन जे नोकरीक पछाइत जिनगीमे उतरए लगलैन। जइसँ छलानन्द परिवारक संग गामसँ विदा भेला तँ गामेक दू गोरेकेँ नोकर-रूपमे संग कऽ लेलैन। नमहर सरकारी क्वाटर रहबे करैन, तँए नोकरो-चाकरकेँ रहैक असुविधा नहियेँ रहैन। नीक वेतन, सरकारी खजानाक अधिकारीक संग विशाल आमजनक भविस सेहो हाथमे आबिये गेलैन।

एक तँ ओहुना सरकारी पदाधिकारीक परिवारक बीच भोज-काज बेसी होइते अछि तैसंग गामो-समाजक बीच सम्बन्ध बनने आरो बढ़िये

जाइए। अनधुन कमाइक संग अनधुन खरचो आ बँचतो करैक जोगारक गोटी नीक जकाँ छलानन्दकेँ बैसिये गेल रहैन। धीरे-धीरे जइसँ जिनगी अबेवस्थित जकाँ हुअ लगलैन। माने जीवन-क्रिया आ समय-क्रियामे दूरी आबए लगलैन। ने काजक चिन्ता आ ने अपन चिन्ता दुनू परानी छलानन्दकेँ रहलैन। होइतो अहिना छै जे जखन कियो तीस-पैंतीस सालक नोकरी देखि अपन ऐगला जिनगी (माने सेवा निवृत्तिक) नहि देखि पबैए, तहिना छलानन्दोकेँ भेलैन।

ओना सुधानन्दो छलानन्दे जकाँ वेतनक संग सरकारी खजानाक जबवदेहो भेला आ विशाल आमजनक बीच सेहो रहला। मुदा अपन ज्ञान-शक्तिकेँ इमान-शक्ति अरजैक दिशामे सुधानन्द अपनाकेँ अग्रसर केलैन। भाय, केकरो कहने आ केकरो केने, केकरो इमान-धर्म बनै छै आकि नइ बनै छै? ओ तँ अपन जिनगीक लीला छी। जे अपने केने हेबो करैए आ जेबो करैए।

जहिना सुशील बेकती अपन शीलकेँ शुरूहेसँ ई सोचि रक्छा करैए जे जे जीवधारी अछि ओकर विनाश एक दिन हेबे करत। तहूमे कहिया हएत तेकरो निसचित नहियेँ अछि। एहेन वेठेकान जिनगीकेँ जँ ठेकाइन कऽ नहि चलब तँ जिनगीए बेठेकान भऽ जाएत, जेकर कोनो मोजर धरतीपर नइ रहि जाइ छै, तँए ओकरा ठेकाइन कऽ चलैक भार तँ ओइ बेकतीपर अछिए। से सुधानन्दो बुझलैन आ बुझि-विचारि कऽ जिनगीक डेगो उठौलैन।

पहिल दिन परिवारक संग सरकारी बासमे जखन दुनू बेकती सुधानन्द प्रवेश केलैन आ कार्यालयमे ड्यूटी करए पहुँचला, तखन मात्र औपचारिक रूपमे काज-भार लेलैन। ने किछु बुझल रहैन आ ने किछु कएल रहैन। ऑफिसमे असगरे बिनु काजेक बैसल छला। मुदा आजुक दिन तँ जिनगीक चौबट्टीपर आबि अँटकल रहैथ, से तँ मनमे रहबे करैन।

पहिल दिन छी, ओना आन सभ जकाँ ज्वाइन केलाक पछाइत

ऑफिस छोड़ि जाइए सकै छी, मुदा से नइ जिनगीक एक सीमापर ठाढ़ सेहो तँ छीहे, जँ आइयेसँ काजमे ढील-ढाल आकि लापरवाही राखब तँ ओ घर करैत जाएत, जइसँ धीरे-धीरे लापरवाही बढ़ैत जाएत, तँए जिनगी जीबैले किछु संकल्प-व्रत लिअ पड़त...।

मुदा लगले सुधानन्दक मन आगू बढ़ि पत्नी आ माता-पिताक परिवारपर पहुँचलैन।

परिवारपर जनैर दौड़ते सुधानन्दकेँ एक संग अनेक रंगक बोझ माथपर अबैत देखाइ देलकैन। दुनू दिससँ देखल जा सकैए। एक दिस अपन जिनगी अछि, तैसंग पत्नीक बीच परिवार अछि, माता-पिताक बीचक परिवार अछि, संगे जइ समाजमे जन्म लऽ प्रशासनिक अफसर बनलौं, तइ माटि-पानिक पूजा जँ नइ कऽ सकब, तखन जिनगीए की हएत?

मुदा लगले मन घुमि पहिल दिनक प्रवासी जिनगी बुझि अपन क्रिया-कलापकेँ असथिर करैक विचार सुधानन्द मनमे रोपलैन। अपने अफसर बनलौं, पत्नी साधारण शिक्षकक बेटी छैथ, जे पढ़ै-लिखैक नामपर हुट्ठा तक खाँत आ चिट्ठी-पत्री पढ़ै धरि छैथ...।

बर्खाक बीच जहिना बादल तड़ैक ठनका खसबैए, तहिना सुधानन्दोकेँ भेलैन। भेलैन ई जे जइ समाजक बीच आबि ठाढ़ भेलौं अछि ओ समाज केहेन अछि? आ ओइ समाजक बीच अपन पत्नीक संग सम्बन्ध स्थापित केते दूर तक कऽ पाएब? अखनो समाजमे अल्हर-बकलेलकेँ हँसीक पात्र बना लोक हँसैए। मुदा समाजक ओहो अंग छी, एकरा के बुझत?

अपन समाजक जे रूप-रंग बनि गेल अछि ओकरा छोड़लो नइ जा सकैए आ पकड़लो नइ जा सकैए। मुदा केते पकड़ल जाए आ केते छोड़ल जाए, ई तँ निर्भर करैए ओइ कर्ताक काजपर...।

एकाएक सुधानन्दक मन अपन नोकरीक काजपर उतरलैन। काजपर उतैरते अपन निर्धारित काजक समय आकि अपन आठ घन्टाक समय निर्धारित कऽ लेलैन। सरकारी काज करैक जगह कार्यालय छी आ कार्यालयक काज छी।

तैबीच जँ कोनो नब सम्बन्ध स्थापित होइए तँ ओकरा एक सीमा तक राखबे नीक हएत। मुदा अपन जे बाँकी बँचल समय अछि जँ ओकरा परिवारक संग आगू बढ़ैक बाटपर उतारि आनि अपनाकेँ ठाढ़ कऽ लइ छी, तँ ओ बेसी नीक हेबे करत।

ऑफिसक पछाइत जखन सुधानन्द डेरा एला, तँ डेराक मुहथैरपर विरहाएल पत्नीक चेहरापर नजैर पड़लैन। पत्नीकेँ देखिते सुधानन्दक अपनो मन विरहा गेलैन। चाह पीविते पत्नीकेँ कहलखिन»

“आइसँ हम कमाए लगलौं। कमा कऽ आनब आ अहाँ-हाथमे ऐ दुआरे देब जे अहीं ने गृहिणी भेलिऐ।”

पतिक विचारकेँ सुचालिनी हलैस कऽ नइ, हलैस कऽ ऐ दुआरे नहि जे एक आज्ञाकारी केना अपन आज्ञा पलबैक भार लेत। मुदा हिया कऽ जरूर अडैज लेलैन। ..तीस सालक नोकरीक जिनगीमे सुधानन्द निष्ठित मनुक्ख बनि, सेवा निवृत्तिक पछाइत शेष जिनगी बितबए चाहै छैथ।

विलासिनी दियोर बुझि, माने वास्तविक जिनगीक तिथि भँजिया मने-मन बजैत जे फगुआ खेलब। मुदा समाजोक तँ अपन बान्ह-छेक छै, केना मानत जे सुधानन्द विलासिनीक दियर भेलैन?



शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016

एक दिन

चौमुहानीपर ठाढ़ भेल कोनो यात्रीकेँ जहिना चारू दिससँ अबैत गाड़ी-सवारी बाट रोकि दैत, तहिना लाल भायकेँ सेहो भेलैन। एक संग चारिटा काज आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। ओना जँ चारू काज आगू-पाछू रहैत तरवन तँ कोनो प्रश्ने नहि भेल, मुदा से नइ एक समयमे चारू काज चारि दिससँ चौमुहानीपर ठाढ़ भेल यात्री जकाँ घेर लेलकैन। करब चारूकेँ छैन, छोड़ैबला एकोटा ने। निराश भेल लाल भाइक एक मनकेँ दोसर मन आस दैत कहलकैन»

“अरे, धीर मन चल।”

कानमे पड़िते लाल भाइक मन सुगबुगेलैन। सुगबुगाइते बुझि पड़लैन जे चारू काजकेँ सेरिया-बटिया पकैड़ करब तँ समैयक संग चारू काज निमाहि लेब। मुदा जहिना एकटा पढ़ल-लिखल लोक सन विचारमे विचरन करैत अबोधो सबोध बनि निच्चासँ ऊपर तक, पेनीसँ कान तक वा जड़िसँ छीप तक देखि लइए तहिना लाल भाइक मन देखलकैन तँ मुदा बच्चासँ कौलेज तकक बीतल जिनगीक काजसँ भेँट नइ भेने जहिना पहाड़ बनि अज्ञान जिनगी आगूमे ठाढ़ भेल रहैए तहिना लालो भायकेँ भेबे केलैन। एक संग आएल चारू काजकेँ तहियबैत-सरियबैत पहिल नम्बरक काज अगुएलैन। पोती बिआहक काजक अन्तिम प्रक्रिया काल्हि नइ सम्पन्न भऽ जाएत तँ एकेटा दिन बिआहक आगू शेष अछि, साले सम्पन्न भऽ जाएत! सालक महतपूर्ण पारिवारिक काज पूर नइ भेने

परिवार तँ धकाल खेबे करत। आगू सालक तँ आगू काज अछि, तइमे जँ पैछला सालक महतपूर्ण काज छुटि जाएत, जइमे अर्थक खर्च संगे समैयक खर्च सेहो हेबे करत। जखने से हएत तखने ऐगला साले अ-असथिर भऽ जाएत! तखन? मुदा उलझनो तँ असान नहियेँ अछि। बेटीक बिआह पिताक माथक केहेन बोझ बनि ठाढ़ भऽ गेल अछि, सबहक सोझहेमे अछि।

लाल भाय अपन मनकेँ केतबो उत्साहित करैथ तैयो एक्काक घोड़ी जकाँ पएर पाछू घुसैक जाइन। घुसैक ई जाइन जे रहक समाजेमे अछि, समाज दिशाहीन बनि कन्यादानकेँ पहाड़ बना आगूमे ठाढ़ कऽ लेलक अछि, कन्यादान केतए हुअए, केना हुअए तइमे पुरना घटक सभकेँ गरदनियाँ दैत नवका घटक सभ भऽ गेला अछि। जहिना शीशोक गाछ वा अन्य ओहन गाछ जे जिनगीक संग-संग अपनामे शीलपन सिरजए लगैए जे सारील रूपमे जेते जुआइए तेते चमकैए तहिना विचारक बोनमे वौआइत-वौआइत लाल भाइक मन ऐठाम आबि गेलैन जे आइ कन्यादानक दिन पक्का कऽ काल्हि बिआहक पूर्वक अन्तिम प्रक्रिया पूरा कऽ नेनाइए।

व्रतक संग लाल भाय विचारकेँ काजक मुड़ी पकैड़ ऐगला सूचीमे रखलैन। एक काजक विचारक पाराग्राफ समाप्त होइते कथाक दोसर पाराग्राफ जकाँ दोसर काज धाँइ-दे विचार करए आगूमे खसलैन।

लाल भाइक आगूमे दोसर काज ई खसलैन जे आइ चारि बजे भोरे एकटा संगीक फोन आएल रहैन जे फल्लाँ संगी रहैत हमरा केण्डिडेटक विरोधमे काज कऽ रहला अछि। बिनु किछु जवाब देनहि लाल भाय फोन रखि नेने छला।

लाल भाइक जिनगी बहुआयामी छैन, जइमे गौ-पालन सेहो छैन। अपनो मन गवाही दैते छैन जे गौ-पालनेसँ ने गोबरधन पूजाक पाबैन सेहो

होइए जइसँ अन्न सबहक बखारीमे अन्न भरल रहैए। गौ-पालनेसँ ने गजधन सेहो भेटै छै आ गौमुखी विचारक धार सेहो सदिकाल प्रवाहित होइए। मुदा प्रश्न एतबे नइ अछि।

प्रश्न अछि पौष्टिक अहार-ले दूधक जरूरत अछि, जे औत गाए-महींसक पालनसँ। मुदा ओ पलाएत केना से नान्हिटा प्रश्न नइ अछि। गाइक पालन-ले घासक जरूरत सेहो होइ छै, एक-आधटा जँ पोसौ चाहब ओकरो-ले घास चाही। बारहो मासक घास-ले खेतक संग पानियोंक जरूरत होइ छै, तैठाम एक दिस खेतक समस्या अछि, समस्या ई जे जिनका बेसी खेत छैन हुनके नमहरका नोकरी सेहो छैन। अपने की करता, केमहर करता? माल-जालक घास-ले बँटाइयो खेत के देत? हुनका ओइ घाससँ की भेटतैन। तँए गम्भीर प्रश्न अछि। एक दिस गामक बेरोजगार युवक गामसँ पलायन कऽ रहला अछि तँ दोसर अनुकूल परिस्थिति पैदा नइ हुअ देल जा रहल अछि।

गाइक सेवासँ जुड़ल लाल भायकेँ जहिना सम्बन्ध गाए-मालक डॉक्टर डा. किशोरीसँ तहिना दवाइ दोकानदार-साहित्य प्रेमी गोपीकान्तसँ सेहो जुड़ल छैन। मुदा जिनगी बहुविधि काजक सम्बन्धो तँ बहुविधि लोकोसँ हेबे करत। तँए अपन-अपन जिनगीक सीमा होइ छै जे लक्ष्मण रेखा सदृश होइ छइ। गोपीकान्तेक फोन लाल भायकेँ डॉक्टर किशोरीक सम्बन्धमे आएल छेलैन। एक दिस जहिना पंचायतक वार्ड सदससँ लऽ कऽ सरपंच, पंचायत समिति, मुखिया, जिला परिषदक चुनावक सुगबुगाहट बिहारमे अछि, तहिना केते राज्यमे एम.एल.ए.क सेहो छइहे। सौंसे देशेमे जखन चुनावी माहौल बनल अछि तखन अखन तँ बिहारक बच्चा-बच्चा घरक मुहथैरपर बैसल अछि..! एकाएक लाल भाइक मनक विचार मोन पड़लैन। मोन पड़लैन ई जे जखन भोँट खसाएब छोड़ि देलौं, राजनीतिक मंच छोड़ि देलौं, तखन अनेरे गोपीकान्तक प्रश्न मन रखने

छी। गाए पोसै छी, तँए डॉक्टर किशोरीसँ सम्बन्ध बना रखै पड़त, तहिना तँ गोपीकान्तो दवाइ-ले भेला, जहिना लाल भाइक सम्बन्ध गोपीकान्तसँ छैन तहिना गोपीकान्तोक सम्बन्ध डॉक्टर किशोरीसँ छैन्हे। तीनू गोरे तीनू गोरेक परीचितेमे छैथ।

एहेन स्थितिमे की करब से लाल भाइक मनमे एबे ने करैन। तहूमे सेकरेट मेटर छी, तीनियेँ गोरेक बीचक बात छी, तहूमे तीनू बुधिजीवियो छी। जँ कोनो हवामे कनियोँ गन्ध निकैल जाएत तँ तीनूक बीचक सम्बन्ध कसाइन-कसाइन भऽ जाएत! तँए केकरोसँ पुछलो केना जाएत? जहिना सभकेँ होइ छै जे अन्हारमे चलैत-चलैत अन्हार कम हुअ लगै छै आ आँखिक इजोत बढ़ए लगै छै, जइसँ किछु फरीच देखए लगैए तहिना लाल भायकेँ भेलैन। नजैरकेँ फरिच होइते मन कुदि कऽ कहि देलकैन»

"जाबे प्रश्नक जड़ि नइ पकड़ब ताबेक जवाब अधखिजुए रहत।"

लाल भाइक एक मनक विचारमे दोसर मन अपन जिज्ञासा रखैत बाजल»

"अखन तँ गामक वार्ड सदससँ लऽ कऽ अमेरिकाक राष्ट्रपति तकक चुनावी माहौल अछि। मुदा लोक तँ अपन अधिकारक प्रयोग अपने करत ने। तहूमे विदेश-देशक बात जे गामो-घरमे अधिकार चाहे विकाउ भऽ गेल अछि चाहे ठकक ठकैती भऽ गेल अछि! एहेन स्थितिमे लोक अपन जीबैक बाट तँ अपने ताकत ने। भोँट खसबैक देखौआ प्रयोगमे एकटा अछि, ओ अछि नोटा भोँट। जेकर माने अछि जे हमरा मनोनुकूल या तँ राजनीतिक दले ने अछि वा दलवाहे ने अछि। भाय, जेहेन भगता रहत तेहने ने डलवाहो रहतै। एहेन स्थितिमे जँ अहाँ नोटा भोँट विचारि कऽ खसबै गेलौं आ केण्डिडेट सबहक एजेन्ट बुथपर नइ देखत? देखबे करत। जखने देखत तखने सभ अपना-अपना गिरहतकेँ नइ कहत जे फल्लाँ भाय फल्लाँकेँ देखि मुसकिया देलैन आ हमरा दिस

तकबो ने केलैन? तखने ने सबहक मन गवाही देत- ‘फल्लाँ फल्लाँकेँ भोँट देलखिन।”

जखने से भेल तखने लाल सागरमे खसब कि कारी सागरमे आकि प्रशान्त महासागरमे पहुँचब तेकर कोन ठेकान? मुदा जहिना बेसी खेलापर ढकार हुअ लगै छै तहिना लाल भायकेँ पेटसँ निकललैन»

“जे मंच छोड़ि देलौं पुन: जाएब नीक नहि। हँ! ओइ विषयक जे आगूक मूल छै, तेकरा पकैड़ चलब अछि।”

ढकारक पछाइत जहिना सबहक मन-पेट हल्लुक होइए तहिना लाल भायकेँ सेहो भेलैन। असथिर होइते मोन पड़लैन»

“फोनमे गोपीकान्त की कहने छला? एतबे ने जे डॉक्टर किशोरी हमरा केण्डिडेटक विपरीतमे दोसर केण्डिडेटक संग दइ छैथ?”

असथिरसँ मने-मन लाल भाय विचार करए लगला। बहुआयामी जिनगीमे परिवारसँ लऽ कऽ देश-विदेश तक सम्बन्ध बनैए आ टुटैए, तैठाम अनेक रंग सखा-सम्बन्धित सेहो होइते छै, मुदा हमरा तीनू गोरेक बीच चुनावीक सम्बन्ध तँ नहियेँ अछि। ओ दुनू गोरेक माने डॉक्टर किशोरी आ गोपीकान्तक बीचमे कोन-कोन तरहक सम्बन्ध छैन, से केना बुझब? एहेन अनभुआर जगहमे अपने हेरा जाइ ईहो तँ उचित नहियेँ हएत। डॉक्टर किशोरीक गौंआँ केण्डिडेट छिऐन, पुश्तैनी केहेन सम्बन्ध रहलैन.., हमरा चलैत जँ ओइपर कोनो अवघात हएत, ई नीक नहि। जहिना विचारक सीमान होइ छै, जैठाम दोसर-तेसर आड़ि-मेड़ रस्ता-पेरा होइ छै तैठाम तँ लोक अपने नजैरसँ हिया कऽ देखि अपने ने डेग बढ़ौत? विचारक पराग्राफक छीप लग पहुँचबो ने लाल भाय केलाह कि बिच्चेमे एक मन कहलकैन»

“भने सेकरेट मेटर छी, एकरा जँ बेसी सेकरेसी दऽ देबै तखन ओ आरो बेसी सेकरेट भऽ जाएत, तँए नीक हएत जे जहिना आन-ले तहिना

जँ डॉक्टर किशोरियो बाबू-ले सेकरेटे बना ली, ओ बेसी नीक हएत।”

अपन पहिल मन तँ लाल भाइक मानि गेलैन मुदा दोसर मन टोकि देलकैन»

“जँ गोपीकान्त तगेदा करैथ तँ?”

पहिल मन बाजल»

“की तगेदा करता यएह ने अहाँ जे कहने रहितिऐन तँ ओ आबि कऽ अपन गलती सुधार करितैथ, से नै केने हेतैन सएह ने?”

दोसर मन बाजल» “समदिया बना समाद देलैन आकि सिपाही बना कहने छला जे पकैड़ कऽ नेने आउ! भेँट करैन वा नइ करैन, ई तँ किशोरीजीक मनक विचार छिऐन ओइमे हम केतए छी?”

नीक जकाँ निर्णए कइये ने पेने छला कि जहिना दाहा पाबैनक उपलक्षमे मरसिया गबैकाल गौनिहार गबैए जे ‘एक मरसिया खतम हुआ है दोसर शुरू होता है’, तहिना लाल भाइक मनमे तेसर काज कुदि कऽ खसलैन। खसिते मन बजलैन»

“काल्हि तँ सर-पोतीक बिआहक बरियाती औत, नौत-लियौन भेल अछि?”

जहिना भारी मोटा देखि मोटैत वा सवारी भरल सवारीक घोड़ा हदिया जाइत जे उठाएब कठिन अछि, तहिना लालो भायकेँ भेलैन। अक्-बक् दुनू बन्न भऽ गेलैन। खग जानए खगक मन-बात। चाहे ओ चिड़ै रूपमे बुधि हौउ आकि खगल रूपमे खगाएल खग। गंगाकातक लोक सभ दिन गंगेमे नहाइ छैथ आ दूर हटल लोककेँ मनेमे रहै छैन जे ‘गंगा नहाएब’ तँए कि गंगा नहाएबक सभटा धरम सबदिने नहेनिहारकेँ भऽ जेतैन आ शेष बाँकी किछु रहबे ने करत जे दोसर-तेसरकेँ हएत..?

बोझ-तर दबल लाल भाइक मनमे ‘सासुर जा हएत कि नइ जा हएत’ ऐ सुरागमे अपन विराग-मन ठेलि देलकैन। ठेलाइते मन

फुनफुनेलैन»

“सासुरक चारिम पीढ़ीक विआहक उत्सव छी, चारि पीढ़िक सर-सम्बन्धी सभसँ भेँट-घाँट हएत, आरो नीक-बेजा जे हौउ मुदा जीवित भेँट तँ हेबे करत। तेकरा छोड़ब नीक हएत? आइक परिवेशमे लोक रस्ते-पेरे बिआह रचि माइयो-बापकेँ नहि निमंत्रित करै छैथ, मुदा संस्कार आ संस्कार गीत वएह गबै छैथ! यएह तँ छी आजुक परिवेश! जे परिवेश जेकरा-ले जे हौन मुदा अपन परिवेश जँ अपना मनोनुकूल बना नइ चलब तखन ओइ बीचमे स्वतंत्र अधिकारक महौते की?”

ई बात मनमे अबिते लाल भाय विचारि लेलैन जे नौत पुरए काल्हि सासुर जरूर जाएब। मुदा लगले जहिना रथक घोड़ाक मुखारी पाछूसँ खिचाइते घोड़ा ठमैक जाइए तहिना लालो भाय ठमकला।

एक दिस घर-परिवारक काजसँ बोझिल लाल भाय, तैपर सर-सम्बन्धीक बोझ सेहो आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। बिआहक नौत छी, रौतका प्रमुख काज छी, माने बिआह। ओ काज एक दिस महिला सबहक छिऐन, दोसर दिस बरियातीक सनोमान करब जइमे बरियातीकेँ खुएनाइ-पीऔनाइ आ यज्ञक अन्तिम प्रक्रिया बर-कनियाँकेँ अरियाति कऽ विदा करब अछि, जे यज्ञक फल भेल, ओ काज सभसँ उपयुक्त तँए ओइ समैपर जरूर पहुँचब अछि। बीचक जे किछु प्रक्रिया भेल ओइमे जँ कमी-बेसी भेल, ओकरो विदाइ करैत ने नव सम्बन्ध स्थापित हएत।

जिनगीक क्रियाक सरियाइत काज देखिते लाल भाइक मन टुसिएलैन। टुसियाइते बुदबुदेलैन»

“जँ भरि दिनक काज गर अँटि जाए, मात्र करबटा बाँकी रहल, तँ वएह ने शुभ लग्न भेल। आइ केते खर्च अछि जे हएत, जँ तेते पाइ जेबीमे रहत तखन अनेरे जे चिन्तासँ मनकेँ दबने रहब, ओ चिन्ता प्रिय, माने अनेरो मनकेँ भरिएने रहब, लोकक वृत्तिक आवृत्ति भेलैन। भाय,

काल्हि-ले काल्हि छै, आइ थोड़े काल्हि छी। काल्हि तँ भविस भेल, वर्तमान ने वीर्तमान भेल जेकर कीर्तमान बनबैक अछि।"

मन असथिर करैत लाल भाय आगू बढ़ैक विचार करिते रहेथ कि समधौत आबि गोर लगलकैन। मुँह उठा असिरवाद दैत पुछलखिन»

"बाउ, की हाल-चाल अछि?"

तइ बिच्चेमे समधौत बिआहक कार्ड आगूमे बढ़ा देलकैन। कार्ड खोलि पढ़ला तँ काल्हिये छोट भाएक बिआह छिऐन, तेकरे नौत-हकार-ले आएल छेलैन।

कार्ड पढ़िते लाल भाइक मन मन्हुआ लगलैन। मन्हुअए ई लगलैन जे एना जँ काजक उपरौज हएत तखन आदमी कइये की सकैए? बिआह सन संस्कारमे संस्कार भरैक अछि, असिरवादक अवसर छी आ तैठाम जँ जाइये ने पएब तखन हएत केना? गनल-गूथल सर-सम्बन्धी कुटुम-परिवार छैथ, एना किए सभ एके दिन काज बेसाहि लेलैन। लगले सूरमे माने विचारक कड़ीमे मने-मन निर्णय कऽ लेलैन जे जे पहिने विचारि नेने छी, से करब, तँए कहि दिऐन। अही असमंजसमे लाल भाइक मन ओझराएल रहैन कि बिच्चेमे समधौत कहलकैन»

"पापा, कहलैन अछि जे अपने जरूर उपस्थिति दर्ज कराबिऐ।"

समधौतक आग्रह सुनि लाल भाइक मन पीड़ित जकाँ पीता गेलैन। भेलैन जे ठाँहि-पठाँहि कहिऐन जे एना अनेरे सभ कियो माने सभ सम्बन्धी एके दिन किए काज ठेक लेलौ। मुदा बाल-बोध लग बजलो केना जाए। तँए लाल भाय चुपे-चुप रहैथ मुदा मन मन्हुआइत रहैन। तइ बिच्चेमे समधौत कहलकैन»

"बाबूजी, धड़फड़मे काज ठीक भेल तँए धड़फड़ीमे एना भेल।"

काजक असथिर प्रक्रियाक बीच धड़फड़ी सेहो कहियोकाल समयानुसार आबि जाइ छै, सभ माए-बाप चाहैए जे जेते जल्दी बाल-

बच्चाक बोझ माथपर सँ उतैर जाएत ओते जल्दी ने बाल-बच्चाक कर्जासँ छुटकारा भेटत। जिनगीक बहैत धारमे एतबे ने जरूरी अछि जे माता-पिताकेँ पार लगबैत श्रद्धा-सुमन दैत बाल-बच्चाकेँ घर बसा कऽ जिनगीकेँ स्वतंत्र बना ली।

समधौतकेँ आग्रह करैत लाल भाय कहलखिन»

“बाउ, आइ रहि जाउ, कनी निचेन होइ छी, तखन नीक जकाँ गप-सप्प करब।”

लाल भाइक मनमे रहैन जे अपने जइ काजक सूत्रपात करए जा रहल छी, तइमे दुनू गोरे माने सासुरक सारो आ समधियौरक समैधो, काजक अन्तिम दौड़मे पहुँचल छैथ, तँए किए ने एक सर-सम्बन्धीक परिवारमे काजक की दूरी अछि आकि नजदिकी। जाबे से नइ बुझब ताबे सर-सम्बन्धीक बीच दब-उनार होइते रहत जइसँ किछु काज प्रमुख आ किछु गौण होइत रहत, जे विचारक दिशाकेँ झकझोरत। लाल भाइक मन औनए लगलैन। तैबीच कानमे समधौतक ई बात सेहो आबि गेलैन»

“अखन काजक धुमसाही अछि, बहुत ठीमन जाइक अछि नइ अँटकब।”

कहि समधौत मोटर साइकिल पकैड़ लेलक। दरबज्जा तक अड़ियबैत लाल भाय बजला»

“जखन सभ अपने सिरे नचे छी, तखन अपन-अपन सम्हारू।”



शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016

दुधियाएल बरखा

बैशाख मासक अन्हरिया-एकादशीक अढ़ाइ बजे राति। मात्र आधा घन्टा बाँकी तीन बजे भोर होइमे। ओछाइनपर पड़ल दुर्वासा काका मौसमक तापसँ तपित होइत कछमछ करैथ। हवा शान्त, ताप तपतपाइत। तपतपेबो केना ने करैत, जहिना रेडियो तहिना अखबारो दिन-राति चिचियाइत जे केता बर्खक पछाइत एहेन टेम्प्रेचर मौसमकेँ चढ़ल अछि! कछमछ करैत ओछाइनपर दुर्वासा कक्काक मन उतप्त भऽ वौआइत-वौआइत ऐठाम आबि अँटैक जाइन जे जीब कठिन अछि...।

केना नइ बुझि पड़तैन जे जीअब कठिन अछि? जखैन नीने हराम तखैन लोके आकि कोनो आने पालतू-सँ-जंगली जानवर आकि माटि परहक पंछीसँ लऽ कऽ गाछ परहक पंछी धरि जीविये केते दिन सकैए? बुझले तँ बात अछि जे जखने कफ-पीत आ वात संग पकड़लक तखने औरदा खटियए लगल। जखने जिनगीक औरुदा खटियाएत आकि चौकियाएत आकि पलेगाएत तखने ने बुझि लिअ जे आब गाछी लगिचाएल..!

बेर-बेर दुर्वासा कक्काक औनाइत मनमे उठैन जे मौसमक बेतुकी गतिसँ पैछला सालक अन्तिम फसिल मारल गेल..! आमक दरसे ने..! पाकलक कोन बात जे टुकलाक चटनियो नदारत..! आन सालक हिसाबसँ दोबर पटौला पछातियो गरमा धान पुजियोमे घाटा लगौत..! आ गहुम सहजे मारले गेल..! गहुमक गेने पैछला साले चलि डुमि गेल..! मुदा

खेरही तँ ऐगला खेती छी, परिवारकेँ के कहए जे समाजसँ लऽ कऽ जिला, राज्य आ देशक समस्या दालिक छी..! केना नइ दस कट्ठा खेरही दुर्वासा काका करितैथ?

ओना धड़फड़ाएल किसान कहियौ कि औगुताएल आकि अगुआएल, सरोसत्तीए पूजाकेँ वसन्तक जन्म-दिन बुझि खेरही-बीआ आधा माघेसँ खेतमे छीटब शुरू करै छैथ, मुदा से नइ बतीस दिन पहिने दुर्वासा काका सलोहाल खेतकेँ पटा, जोति-कोरि बीआ छीटि चौकिया उन्नैत किस्मक अल्पकालिन खेरही दस कट्ठामे ई सोचि केने छला जे समुचित विधि-विधानसँ केने निसचित परिवारक साल भरिक दालिक समस्या मेटा जाएत। हिसाबो सोझ बुझि पड़लैन। ओना चालीस किलो कट्ठा तक खेरहीक पैदावार अछि, मुदा अपने तँ ओहन किसान छैथ नहि जे ओइ ऊचाइकेँ पकैड़ पेता। मुदा एहनो तँ झड़खण्डी किसान कहियौ कि अधमरू आकि पछुआएल नहियेँ छैथ जे सोलहन्नी बीओ बुड़ेता...।

तँए बीच-बँचाउ करैत बीस किलो कट्ठा मानि, दू क्विन्टलक हिसाबसँ खेरही-खेती केने छला। हिसाब एना सोझ बुझि पड़लैन जे सालो भरि जँ आधा किलो पाँच गोरेक परिवारमे खर्च हएत तँ सौ-ग्राम मुड़े-मुड़ भेबे कएल। ओना सबठामक अपन-अपन जरूरत छै, मुदा से अलग अछि। तहूमे दालि-दालिक अपन-अपन कद-काठी सेहो होइए। एक दिस खेसारीक कद-काठी अछि, जे दानामे अदहा खोंइचा आ अदहा दालि होइए जखन कि खेरही तइ कद-काठीक नइ छी, ओकर कद-काठी दोसर छै, किलोमे आठो साए ग्रामसँ बेसी दालि होइए। तेतबे किए, कुरथी-तेबखा आ खेरही ओहन दालि छी जेकर खोंइचो खाद्ये छी। जँ से नइ छी तँ भतउसनामे धानक चाउर कुटि कऽ आ खेरहीक दालि सौंसेक दोस्ती केना होइए? दू-तीन दिनसँ मेघ असथिर हवामे रूइयाक फाहा जकाँ उड़ियए लगल, जइसँ झपन-तोपन शुरू भेल। तैसंग हवो उड़ए लगल। हवाक गतियो रसे-रसे तेज होइत गेल। ओना धरती जे तपित भऽ

गेल छल आ ओकर जे तपवन उठए लगल, तइसँ वातावरणमे कोनो बेसी सुधार तँ नइ भेल छल मुदा सुधारक किछु झलकी तँ आबिये गेल छेलइ। अढ़ाइ बजे रातिमे हवाक गति तेज भेल, वादल सेहो उमड़ए लगल। बुन्दा-बुन्दी पानि शुरू भेल। जे धीरे-धीरे बढ़ए लगल, जइसँ धरतीक तपित तन रसे-रसे तुषित हुअ लगल। अकास-सँ-धरती धरि मौसम समरूप तँ नइ भेल मुदा सिमैस जरूर गेल।

धरतीक तपित तापसँ औनाइत दुर्वासा कक्काक मन रसे-रसे चैन हुअ लगलैन। अखन धरि जे औनाइत मनमे वौआइत विचार उठै छेलैन आ खसै छेलैन ओ मौसमकेँ बदलैत रूप देखि मौसमे-अनुकूल, अदलए-बदलए लगलैन। जहिना अदलै-बदलैबला मंडीमे शान्ति राखब जरूरी होइ छै, जँ से नइ राखब तँ पाइयेक हिसाब ओझरा जाएत, तहिना।

जेना-जेना दुर्वासा कक्काक मन मौसमानुकूल चैन होइत जाइन तहिना-तहिना सौन मासक पूनो-चान जकाँ अपनो चान फरीच हुअ लगलैन। जेना-जेना अपन चान फरीच होइत जाइत रहैन तेना-तेना मन चैन भेल जाइन। तीन बजे राति बीतल आ तीन बजे भोर शुरू भेल। मेघो बुनियाएब बन्न केलक। एका-एक ओते रातिमे कहियौ आकि ओते भोरमे चुट्टी-पीपरीसँ लऽ कऽ मनुक्ख तक चल-मला गेल। मुदा दुनियोँ तँ दुनियाँ छी, जेकरा जे भवै वएह ने ओकर भावना भेल आ जेहने भावना तेहने ने बुधि, आ जेहेन बुधि हएत तेहेन काज करैमे आनन्दो आएत आ वएह आनन्द ब्रह्मानन्दोमे जा कऽ मिलत!

अपन रागमे दुर्वासा काका मने-मन डुबकी बजबैत रहैथ कि चिकनी काकी चिचिआइत लगमे आबि कहलकैन»

“अखनो तक जे गठूला घर नै बनेलौं से देखियौ-गे सभटा गोरहाक दशा! भीज कऽ सभटा गोबर भऽ गेल! फेरसँ पाथए पड़त!”

होइते अहिना छै जे घरमे आगि लगौ आकि नहमर बिहाड़ि अबौ

आकि भुमकम हौउ परिवारजन तँ अपने-अपने भवन मनसँ ने अपन-अपन जानक संग ओहू वस्तु आ विचारकेँ जान-बँचबैत घरसँ बहराइए जे ओकर प्रिय रहै छइ। जहिना सैयो-हजारो रंगक वस्तु-जातसँ भरल घर-परिवारमे वएह वस्तु वा विचारकेँ बँचबए चाहैए आ आन वस्तु वा विचारक भरमार रहितो छोड़ैले तैयार होइए, तहिना चिकनियो काकीकेँ भेलैन।

भेलैन ई जे जहिना गोबरधन-पहाड़ ओढ़ि ब्रजमण्डलवासीक जान बँचबैक पाछू कृष्ण भीर गेला तहिना परिवारक पहियाक चलैत घुरीक एकटा किल्ली जकाँ जारैनपर चिकनी काकी अपन सुरता गड़ौने छेली। वएह सुरता हुनका बुन्दा-बुन्दी छुटिते गोरहाक मचान दिस बाड़ी लऽ गेलैन, जेकर दुर्दशा देखि चिकनी काकीक मन कलहैन्त गेल छेलैन। ओहीसँ आक्रमित भऽ दुर्वासा काका लग आबि बाजल छेली। मुदा दुर्वासा कक्काक मन बदलैत मौसम आ बदलैत जिनगीक गति-विधिपर धियान अड़कल छेलैन, जइसँ चिकनी काकीक बातक कोनो उत्तर नइ देलखिन। देबो जरूरी नइ बुझलैन। जरूरी ऐ दुआरे नइ बुझलैन जे चिकनी काकीक आद्योपान्त बात सुनलैन। सुनिते जखन गुनए लगला तँ बैशाखक अधमसिया बुझि पड़लैन, नइ कि मौसमक उतार बुझि पड़लैन।

माने ई जे मौसमक उतार भेल गरमी मास, माने जखन बरखा मास बनए लगैए तइ बीचक समय, जे एक उतरैए दोसर चढ़ैए। मुदा बैशाख तँ से मास नइ छी, ओना एक मास जेठुआ रौद सेहो पछुआएल अछि। जइमे सालक सभसँ जुआएल रौद होइए। जुआएल कहियौ आकि जबनाएल, समय तँ सभसँ नीक गोरहा-ले भेबे कएल। तैठाम जे पत्नी माथ पटकै छैथ, यएह भेल अनेरो दुख बेसाहब...।

दुर्वासा कक्काक मन आगू घुसैक गेलैन। घुसैक कऽ गोरहा घर कहियौ आकि जारैनक गठूला, तइमे जा कऽ अँटकलैन। अँटैकते मनमे

उठलैन- एक तँ आश्रमी घरसँ आकि भण्डार घरसँ गठूला कद-काठीमे छोट होइए, तैसंग नीपै-बहारै आकि लेबै-मुनैक कोनो खगते ने होइए, तइले एते जे माथ-कपार पीटै छैथ से अनेरे ने! हिनके सबहक सपनामे कहियो चारि बीघाक ताज-महल औतैन..? तँए आरो अनठा कऽ दुर्वासा काका कनतोपि लेलैन।

ओना दुर्वासा कक्काक मुँह नइ खुजने चिकनी काकीक मन चिक्कन हुअ लगलैन। किएक तँ पति-पत्नीक बीच जँ पत्नीक बातसँ पति मुँहकेँ बन्न कऽ लैथ, सएह ने भेल पत्नी-लेल चिक्कन। आब कि माथपर चढ़ि टीक पकैड़ ठीक करती तखन मन चिक्कन हेतैन?

चिक्कन मन बनिते चिकनी काकीक नजैर पतिक बन्न मुँहपर पड़लैन। पहिने शंका भेलैन जे पूर्वाक लहकीमे भरिसक नीन छैथ तँए हमर बात नइ सुनलैन। मुदा गोरहा-घर आ गोरहाक दशा मनकेँ बेथित केनहि रहैन, तँए बेर-बेर मनमे विचारक झोंको उठबे करैन। मुदा असगरमे के केकरासँ पुछत आ के केकरासँ कोनो विचार लेत कि देत। तखन तँ भेल जे जे भऽ रहल अछि ओकरा छातीमे मुक्का मारि देखैत चलू। यएह सोचि अपन पनचैती अपने करैत चिकनी काकी अपन ओछाइन दिस बढ़ि गेली।

अन्हरिया-एकादशीक भोरक उदित चान जहिना दुधियाएल लाली नेने फरीच मौसमक बीच चौठक चान जकाँ हँसियाएल अपन रंग-रूप निहारैए तहिना दुर्वासा कक्काक मन अपन जिनगीक रंग-रूप निहारए लगलैन। मरहन्ना गहुमक खेती आ फलाएल आमक बगान बोनिआ गेने दुर्वासा कक्काक जे मनसँ भूख व्याकुल भऽ पड़ा लगल छेलैन ओ पुन: खेरही खेतीपर नजैर पड़िते आबए लगलैन। दालिक अभाव किए भेल? पहिल प्रश्न दुर्वासा कक्काक मनमे उठलैन। खैहन अन्न भेल धान, गहुम, मकइ इत्यादि आ दलहन भेल बदाम, केराउ, मौसुरी, खेसारी इत्यादि। भोजनक पहिल खगता खैहन अन्नसँ पूर्ति होइए नइ कि दलिहनसँ।

दलिहन भेल खैहनक सहयोगी। ओना दलिहनोक रोटी, सतुआ आ उसनाक रूपमे खैहनक पूर्ति करैए, मुदा ओ भेल अभावक भाव।

ओना दलिहनोक खेती आनो-आनो मौसममे होइए, जेना राहैर, खेरही, कुरथी आ तेबखा। मुदा राहैर, कुरथी आ तेबखा ऊँचरस जमीनक फसिल छी, जे धार-धूरक इलाका रहने मिथिलांचलमे कम अछि, तँए राहैर-कुरथी उपजै जोकर चासे कम अछि। रहल कैतका खेती, माने जाड़-मासक खेती मुदा ओ तँ जहिना खैहनक समय छी तहिना दलिहनक सेहो छी। एक तँ ओहिना धार-धूर, डोह-डाबर चौर-चाँचर, कोचाढ़ि-बीरैक गाम जइमे मध्यम किस्मक जमीन कम अछि, तैपर खैहनक बदला दलिहन अभावी लोक किए उपजेता, तैसंग ईहो भेल जे समुचित ढंगसँ दलिहनक खेतीक चलैन कमि गेल आ दलिहनक छिटुआ खेतीक चलैन जोर पकैड़ लेलक, जे करैमे असानो होइए। मुदा समुचित ढंगसँ नइ भेने तिहाइयो-चौथाइ उपज नइ होइए! अस्सीक दसकमे वैज्ञानिक पद्धतिसँ गहुमक खेती करैक सरकारी योजना बनल, उपजामे बढ़ौतरी भेल, दलिहन खेत गहुमक खेतमे बदैल गेल जइसँ दालिक उपज कमि गेल!

दुर्वासा कक्काक मन आगू घुसकलैन। आगू ई घुसकलैन जे जखन एहेन स्थिति बनि गेल अछि तखन कि लोक दालिये खाएब छोड़ि दिअए? कनीकाल-ले महगक दुआरे छोड़ियो देत मुदा अदौरी-बरीक कोन दोख भेल जे गाम छोड़ि पड़ा जाए? जाड़क हिस्साबला समय जे गहुमकेँ छोड़ि दइ छिऐ, तैयो ओइमे गरमा दालि माने खेरही-तेबखा तँ कएल जा सकैए? तइले दुनूक समैयक अँटाबेश करब अछि। मुदा अँटाबेशक पाछू पैछला मौसमक प्रभावो-दुष्प्रभाव तँ ऐछे? जँ खेत बिलैम कऽ उखड़त- माने खेतीक अनुकूल बनत- तखन खेतीमे बिलम हएत। जखने खेतीमे बिलम हएत तखने फसिल आगूक समय पकड़त। जखने आगूक समय पकड़त तखने ऐगला फसिल प्रभावित हएत..?

दुर्वासा कक्काक मन आगू घुसैक अपन देश-कोस दिस बढ़ि गेलैन। कहू जे दुनियाँ भरिमे अपना सबहक भोजनक जे सचार-विचार अछि, ओ दुनियाँमे केतए अछि? ओना चाउर-दालि सभ देशक भोजन छी, मुदा जइ सचार-विचारसँ हम सभ खाइ छी ओ केतए अछि? भातक पहिल संगी दालि छी, से आन थोड़े बुझैए..?

आब दुर्वासा कक्काक नजैर अपन खेरही-खेतीपर एलैन। खेतमे बीआ देना बतीस दिन भऽ गेल। सत्तैर दिनक पछाइत फड़ ललियए लगत। पचहत्तैर-अस्सी दिनमे खेरही खस्सी बनि आगूक भोज्यमे शामिल भऽ जाएत। जहिना नख-सिखक वर्णन तहिना सिख-नखक वर्णन सेहो होइते अछि। एकेबेर दुर्वासा कक्काक मन हहैर कऽ बतीस दिन पाछू घुसैक ओइ दिनपर गेलैन जइ दिन खेतमे खेरही बीआ बाउग केने छला।

बाउग करैसँ चारि दिन पहिने पटौने छला, धरती एते तबैध गेल छल जे सलोहाल पटौल खेत चारिये दिनमे उखैड़ गेल, माने खेती करै जोकर भऽ गेल। डकरा हाल खेतमे रहने भुआ जकाँ गाछ जनमल। बीआक उपचारक संग जोतो आ खादो अनुकूल भेल। जइ गतिये फसिलक बढ़बारि हेबा चाही ओइमे मिसियो भरि कोताही नइ भेल। जहिना अपन कर्तव्यमे कमी नइ भेलैन, तहिना खेरही सेहो अपन चालि-ढालि आ रंग-रूप पकड़ने दुधिआइत-दुधियाइत फुलिआइपर पहुँच गेल अछि..!

दुर्वासा कक्काक मन हलसैत-कलशैत ओइ अवस्थामे पहुँच गेलैन जेतए जिनगीमे मोड़ अबैए आ दुधिआइत देहमे फुलिआइत मन नचैए। नचैत दुर्वासा कक्काक मनमे जेना घुरमी लगलैन। होइतो अहिना छै जे नचैत-नचैत जखन देहमे घुरमी लगै छै तखन ओ नचैत-नचैत धरतीपर या तँ बैस जाइए वा खसि पड़ैए। घुरमी ई लगलैन जे दालिक उपटान केना किसानक बीच आएल? मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे जहिना

चाउरक हिसाबे दू सेरक बदला तीन सेर धान भिनसुरका उखड़ाहाक बोइन छल तहिना चाउरेक हिसाबसँ दू सेर दालियो बोइन छल। एकर माने ई नहि जे मिथिलांचल दालि-दलिहनक भण्डार छल।

हँ, एते जरूर छेलै जे किछु किसान परिवार एहेन छला जिनका अपना परिवारसँ फाजिल दालि होइ छेलैन, जे बोइनोमे दइ छेलखिन। एकर माने ईहो नहि जे दालिक प्रचूरता छल।

जे किसान निम्न-मध्य परिवारक छला ओ धानक अभावमे सेहो दालिये बोइन दइ छेलखिन। ई तँ भेल भिनसुरका उखड़ाहाक बोइन। मुदा बेरुका उखड़ाहाक सबा सेर चाउरक हिसाबसँ दू सेर धान जहिना बोइन छल, तहिना सवा सेर दलिहन सेहो छल। एकर माने ई नइ बुझब जे बोनिहारकेँ तीन साए पैंसैठो दिन काज लगै छेलैन, भरि साल कमाइ छला, बेरोजगारी नइ छल। नइ छल कि छल से तँ सबहक सोझहेमे अछि।

अधरतिया बीतल, बरखा सेहो बन्न भेल। पूर्वा हवाक लहकीमे अकासमे पसरल वादल सेहो छँटि गेल। जहाँ करिया मेघ परीच भेल कि भुक-भुक तरेगनो आ भकजोगनियोँ सभ भुकभुकाए लगल। अन्हारिया-एकादशीक भोरक चान हँसिया-सदृश हँसिआइत पूब दिशामे उगल। बदलैत मौसमक अरवड़ेहे ने अरवार भेल जँ से नइ भेल तँ किए कालीदासकेँ कहए पड़लैन-

“आषाढ़स्य प्रथम दिविशे:..!” जँ पूर्णिमा आ सकराँतिक हिसाबसँ मास चलैत तँ किए लिखए पड़ितैन? सोझ-साझ पूर्णिमा आकि सकराँतिक हिसाबसँ सीमापर खुट्टी गाड़ि मासकेँ खुटिया दितैथ..!

आन दिनक अपेक्षा जेना आइ दुनियाँक सभ किछु भोरे जगि गेल तहिना दुर्वासा काकाकेँ बुझि पड़लैन। आन दिन तीन बजे भोरमे पौड़कीए-टा बोली दइ छल, से आइ धरतीक धोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ

गाछ परहक चिड़ै-चुनमुनी सहित बोली दिअ लगल! गाए-महींस घरसँ बहार होइले डिरिया लगल अछि। दुर्वासा काका ओछाइनसँ उठि ओसारपर आबि चिकनी काकीकेँ कहलखिन»

"दुनियाँक सभ किछु जगि गेल आ अहाँ ओछाइने धेने रहब?"

ओना चिकनी काकी अपने बेथे बेथाएल अरवनो छैथे, जइसँ करवनो बररवाकेँ झड़कौआ कहि गरियबै छथिन तँ करवनो अपन कपारकेँ दोरव लगबै छैथ, तँ करवनो पतिकेँ अपन कपार बुझि अपनाकेँ कोसबो करै छैथ जे केहेन कपारमे बेथाएल छला! मुदा सभकेँ समटैत चिकनी काकीक मन गवाही देलकैन, भोरका समय छी, सभ अपन-अपन भरि दिनक सगुन बनबैले हँसैत उठैए, तैठाम जँ मरियाएल-कड़ुआएल उठब से नीक नहि। मनकेँ बदलैत ओछाइनसँ उठि चिकनी काकी ओसारपर आबि बजली»

"आइ भोरे नीन बिला गेल।"

मुस्की दैत दुर्वासा काका बजला»

"बिलाएल कहाँ बिलाइ जकाँ दूध-फूल तकैए..!"

❑

शब्द संरव्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016

❑❑❑

❑❑

❑